फसाद

ई कथासभ कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटामात्र संयोग बूझल जाए ।

फसाद

कथा संग्रह

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN : 978-93-5300-750-8

दाम : 200 रूपया

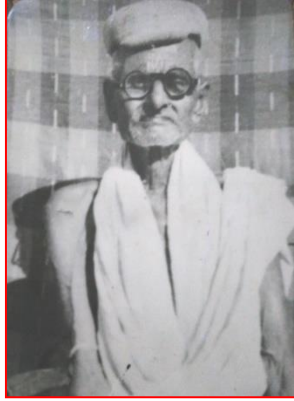
पहिल संस्करण : 2018

लेखक एवम् प्रकाशक : श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No : C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No : 6 Builders Area Greater Noida
District : Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
M-9968502767

फसाद

Collection of Stories
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



पूज्य पितामह स्वर्गीय श्रीशरण मिश्रक **स्मृतिमे**

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

अनुक्रम

भूमिका

ई कथासभ हम सन् १९८२ सँ १९८४ क बीचमे इलाहाबादमे लिखने रही। ओहि समयमे हमर कथा, आलेख सभ मिथिला मिहिरमे छपि जाइत छल। मिथिला मिहिर बन्द भए गेल। हम बदली भए दिल्ली आबि गेलहुँ। घरसँ कार्यालय आवागमनमे बहुत समय लागि जाइत छल। एहि ठाम जीवन-संघर्ष बढ़ि गेल। अस्तु, ई कथा सभ जस-के-तस पड़ल रहल। एमहर पुरनका पन्ना सभ पलटलहुँ तँ एकरा सभकेँ फेरसँ देखबाक अवसर भेटल।

साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि। ओहिमे तत्कालिन सामाजिक परिवेशमे होइत उठा-पटकक चर्च स्वाभाविक अछि। ओहि क्रममे समाजक विभिन्न वर्ग/समुदायक उल्लेख यदा-कदा भेल अछि। आशा अछि, ओकरा ताहि रूपमे लेल जाएत। एहि कथा सभमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक काल्पनिक थीक। ई कथा सभ कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि।

एहि पुरान कथा सभकेँ पुस्तकाकार देबामे हमर पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक बहुत योगदान अछि। एहि हेतु ओ बरोबरि उत्साहित करैत रहलीह, एहि कथा सभक पांडुलिपि सभकेँ सम्हारि कए एतेक दिन धरि रखने रहलीह। हमर मित्रगण श्री ओम प्रकाश सपरा, डा. विनय कुमार चौधरी, श्री संजीव सिन्हा, एवम् डा. कमला कान्त भण्डारीजी निरंतर प्रेरित करैत रहलाह।

श्री उमेश मण्डलजी बहुत परिश्रमसँ पुरान भेल पान्डुलिपि

सभकेँ स्वच्छ प्रति टंकित केलाह जाहिसँ ई कथा सभ इजोत देखलक। एहि हेतु हुनका धन्यवाद, आशीर्वाद।

एहि कथा सभकेँ प्रस्तुत कए बहुत नीक लागि रहल अछि। आशा अछि, पाठक लोकनिकेँ नीक लगतनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा
०२ मार्च २०१८

क्रान्ति विसर्जन

सौंसे गामक नवतुरियासभ बैसार केलक। छोटका लोकक आक्रमकताक विरोध करबाक दृढ़ निश्चय कएल गेल।

नेमी बाबू गामक गामक नामी लोक छलाह। चारू बेटा एक-सँ-एक पदपर छलखिन। सभ कमासुत। ओ बैसारक बीचमे बमकि उठलाह-

"जतेक जे जुलुम भए रहल अछि ओहिमे बड़के लोकक हाथ अछि। छोटका लोकक ई साहस जे हमरा लोकनिक हरबाही छोड़ि दिअए। खबासिनी सभ आँगन एनाइ छोड़ि देलक। ई सभ छोटका लोकक करनामा नहि थिक । एहिमे सुधीर बाबूक प्रगतिशील बिचारक पुत्र बेचनक हाथ थिक। ओ छोटका लोकसभकेँ सनका देलक अछि।

"जब तक भूखा इन्सान रहेगा, धरती पर तूफान रहेगा आदि-आदि नारा के सिखओलक?"

चारूकात थपड़ी पड़ए लागल। तय भेल जे सुधीर बाबूकेँ उपराग देल जाए। संगे ईहो तय भेल जे गामक कोनो खबासकेँ आर्थिक सहायता नहि देल जाए।

सभा विसर्जित भेल। सौंसे रस्ता लोक अर-दर बजैत चलि जाइत रहल।

बेचन बेस फनैत छलाह। बैसारक एक-एक बात घरे बैसल पता लगा लेलाह। एमहर बैसार खतम भेल आ ओमहर फेर नारा

बुलन्द भेल-

“जब तक भूखा इन्सान रहेगा, धरतीपर तूफान रहेगा... ।”

सौंसे गाम डोलि गेल। कारण ओहि स्वरमे पर्याप्त शक्तिक प्रस्फुटन भए रहल छलैक। चारू कातसँ एक्के बात जे ‘बड़का लोकसभकेँ रस्तापर आनेके है। जान रहे कि जाए।’

“एहि जिनाइसँ मरबे नीक।” एहि तरहेँ गाम एकटा जन-विद्रोहक दृश्य देखि रहल छल। एकदिस गामक धनीक, सशक्त लोकसभ दोसर, दिस छोटका लोकसभ खाली देह, खाली पेट लेने बमकि रहल छल-

“...धरतीपर तूफान रहेगा।”

छोटका लोकमे घात-प्रतिघातक सरिपहुँ शक्ति नहि छल। जहिआसँ ओ सभ अबाज बुलन्द केलक तहिआसँ कतेको घरमे डिबिया नहि जरल। कतेको राति कोराक बच्चा भुखले सुतल। मुदा तैओ ओ सभ कोनो बड़का लोकक खेत जोतए नहि गेल... ।

ओहि दिन हाट लागल रहैक। दामोदर बाबू हाट करए जाइत छलाह। गामक सभसँ धनीक लोक दमोदर बाबू। हाटे-हाट तरकारी उठौना अबैत छल। मुदा जहिआसँ छोटका लोकसभ हड़तालपर चलि गेल छल तहिआसँ अपने गमछामे तरकारी बान्हि कए लबैत छलाह। तरकारी लए कए उठहि पर छलाह कि निरसनमा पर नजरि पड़लनि। मुदा टोकलकनि नहि। कए बेर बजओलखिन-

“निरसनमा...? निरसनमा..?”

मुदा ओ अंठा कए चलि जाइत रहल।

दामोदर बाबूकेँ नहि रहि भेलनि। झटकि कए आगू बढ़ि ओकर गट्टा पकड़ि लेलखिन।

औ बाबू! एतबेमे ओकर जतेक दियाद-वाद सभ छलैक सभ दमोदर बाबूकेँ घेरि लेलक। दामोदर बाबू जेना-तेना जान लए कए भगलाह। रस्ता भरि प्रतिशोधक आगिसँ धधकैत रहलाह।

ओहि घटनाक दस दिन भए गेल छल। दामोदर बाबू इलाकाक नामी-गामी पहलवानकेँ जमा कए लेने छलाह। बारह बजे रातिमे सभ पलहवान निरसनमाक घर घेरि लेलक ओ निरसनमाक घरसँ निकलैत देरी खाम्ही लगा बान्हि ओकरा मुँहमे गोइठा ठुसि देलक। निरसनमा निस्सहाय, ओतएसँ देखैत रहल। ओकर आँखिक सामने ओकर घरवाली चिकरैत रहल। मुदा निरसनमा हाथ-पैर पटकि कए रहि गेल। असगर ओ १५टा दैत्यक सामना नहि कए सकल। भोर भेला पर ओकर घरवाली बीच आँगनमे बेहोस पड़ल रहैक। निरसनमा धारक कातमे बेहोस छल।

सौंसे गाममे हल्ला भए गेलैक। बेचन दौड़ल अएलाह। ओ गरजि उठलाह। मुदा जे हेबाक छल से भए गेल छल। छोटका लोकसभ एकट्ठा भए गेल। बेचन फेर नारा देलकै-

“धरती पर तूफान रहेगा..!”

अहि नाराक कोनो प्रतिकृया निरसनमा ओ ओकर घरवालीपर नहि पड़लैक। ओ दुनू गोटे ओहिना बेसुध ठामहि पड़ल छल।

गामक बुढ़ सभ ओहि घटनाक बारेमे सुनलक आ अंठा देलक। गामक लेल ओ कोनो नव बात नहि छलैक। हँ,एतबा अवश्ये जे वर्तमान परिपेक्ष्यमे ई घटना एकटा दुस्साहस सन लगैत

छल। मुदा एकर बाद फेर कहिओ नारा नहि सुनेलैक ।

‘धरती पर तूफान रहेगा।’ क संकल्प जेना कतहु दहा गेलैक। ओहि घटनाक बाद छोटका लोक सबहक बैसारी भेल रहैक। सभसँ सीनीयर माइन्जन बमकि उठल छल नवतुरियापर। ओ गरजि कए कहलक-

“तोरा लोकनिकेँ गिरगिटिआ नचैत छौ। एतेटा जिनगी ईहे मालिक लोकनिक संग बिता देलिऐक। कहिओ कोनो झगड़ा-दन नहि भेलैक। खबासिनी आँगन सभमे काज करैत रहलैक। कहिओ कोनो बातक सिकाइत नहि केलक। मुदा ई छौड़ा सभ अगिआ-बेताल बनल हेँ!”

कोनो नवतुरियाकेँ साहस नहि भेलैक जे माइन्जनक विरोधमे किछु बाजए। सभ चुप्प भए एकदम गुम्मी लादि देलक। बैसार खतम भेलैक। गामक बड़का लोकमे हरिअरी अएलैक। सभ केओ दामोदर बाबूक प्रशंसा करैत छल। सरिपहुँ दामोदर बाबू बड़ नीक लोक छथि। आदि-आदि... ।

आ फेर ओहि दिनसँ पनिभरनी सभ गिरहथक ओहिठाम काज केनाइ सेहो शुरू कए देलक। सौंसे गाममे फेर ओहिना चहल - पहल रहए लागल... ।

पछबारि गामबालीकेँ तीनटा बेटी छलैक। तीनू तीनटा मालिकक अँगनामे काज करैत छलैक। सभ सासुर बसि आएल छलैक। मुदा गरीबक की सासुर आ की नैहर? ककरो बास सासुरमे नहि भेलैक आ सभ कए बरखसँ माए लग रहैक। कहि नहि कैकटा धिया-पुता छलैक तीनू बहिनकेँ।

मुदा सबहक धिया-पुता गोर-नार। देखैमे सुन्नर तँ छलैहे।

बेस तेजो सभ छलैक। पछबारि गामबालीकेँ लोक चुटकी मारै जरूर मुदा ओकरा लेल धनि-सन। ओ अपनो तँ ओही रस्तासँ गेल छलि। पछबारि गामबाली अपना समयमे सुन्दरि छलि। ओकरापर दामोदर बाबूक नजरि गरि गेलनि। ओकर बिआह अपन खबाससँ करा देलनि। खबास शुरूएसँ नंगराइत छल।

एक दिन हल्ला भेलैक जे तेतरि तर केदनि सभ ओकरापर आक्रमण कए देलकै जाहिमे ओ गम्भीर रूपसँ घायल भए गेल। बादमे मास दिन जेना-तेना खेपि ओ स्वर्गवासी भए गेल। तहिएसँ पछबारि गामबाली दामोदर बाबूक क्षत्रछायामे पोसाइत रहल। पछबारि गामबालीकेँ ओकर बादो कैकटा धिया-पुता होइत रहलैक। मुदा कैक बेर गाममे गुल्लर उठलैक।

दामोदर बाबूकेँ चला-चलती रहनि। के बाजत हुनकर विरोधमे?

पछबारि गामबालीक तीनू बेटीकेँ ई गप्प बूझल छलैक। ओ सभ अपन आचरणोमे एहि बातकेँ पुष्टसँ स्पष्ट कए रहल छलि। दामोदर बाबूकेँ तीनटा पुत्र छलखिन। आ तीनू फराक। तीनू बहिन तीनू मालिकक घरमे काज करए।

काज तँ जे से ओहुना ओकरा सभहक आएब-जाएब रहिते छैक। मुदा पछबारि गामबाली असगरे ओहि टोलमे हो से गप्प नहि। एकटा खिस्सा सबहक नामक संगे जुड़ल छैक। ओना ई सभ ततेक सामान्य घटना भए गेल छलैक जे ककरो विशेष ध्यान ओमहर जेबाक प्रश्ने नहि छलैक।

ओहि दिन छोटका लोकसभमे बेस हल्ला भेलैक।

ओना सामान्यत: ओहि टोलमे हल्ला होइते रहैत छलैक। तेँ

ककरो ध्यान ओहि हल्लापर नहि जाइक। पुरवारि गामवाली उत्तरवरिया टोलक एकटा बड़का लोक छौड़ाक संगे कतहुँ रातिमे भागि गेल छलैक। ओना काना-फूसी तँ होइते रहैत छलैक। मुदा गप्प एतबा धरि बढ़ि गेल अछि, तकर अन्दाज ककरो नहि रहल होएतैक। भरि दिन टोलमे एही बातक चर्चा होइत रहलैक।

एहि-तरहेँसौंसे गाम पुरनका लोकपर फेर सरकए लागल। मुदा बेचनक आत्मा एहि सभ गप्पसँ दुखी छलैक। ओकर मोनमे क्रान्तिक आगि सुनगि रहल छलैक। ओ अर्थशास्त्र लए कए एम.ए. उत्तीर्ण छल । आर्थिक परिपेक्ष्यमे गरीब सबहक सामाजिक शोषण ओकरा बड़ पैघ जुलुम लगैत छलैक। मुदा ओ लड़त ककरा लेल। केओ ओकर गप्प सुनबाक हेतु तैयार नहि छलैक।

गरीब सभ दाना-दानाक मोहताज छल। ओकरा रोटी चाही से जेना हो। ने ओकरा हेतु कोनो सामाजिक मान्यताक कोनो महत्व छलैक आ ने नैतिकताक , मात्र रोटीटा चाही। मुदा बेचन बुझैत छलैक जे ओ सभ भूखक आवेशमे रोटीमे जहर मिला कए गिरि रहल अछि। समाजक नामी लोकसभ जे प्रतिष्ठाक पात्र मानल जाइत छथि, तिनके लोकनिक आचरण देखि ओ क्षुब्ध छल।

मुदा कइये की सकैत छल? असगर वृहस्पतिओ झूठ। जे शोषित वर्ग छलैक तकरा लेल धनि-सन। ओ सभ ओहीमे रमि गेल छल। मालिक सबहक नेकरम करबमे। दूटा रोटी खाएब ओ मालिकक हुकुम बजाएब। ई सभ एकटा सामान्य घटना भए गेल छलैक। ओकरा सभ हेतु ने देशक आजादी कोनो रंग अनने छलैक आ ने बेर-बेर होबए बला चुनाओ सभ।

अलबत्ता जखन चुनाओ होइत छलैक तँ ध्वनिविस्तारकक

आबाजसँ ओ सभ एक बेर चौंक जरूर जाइत छल। छोटका लोकक नेता सभ माइन्जन लए कए घरे-घरे राति भरि घुमैक। सभकेँ पाँच-दसटा रूपैया दैक ओ सभकेँ नीकसँ सीखाबैक जे कतए मतक मोहर मारबाक छैक। साइकिल छाप, तराजू छाप, घोड़ा छाप आदि-आदि। ओकरा सभ लेल चुनाओ एकटा रोचक प्रसंग होइत छलैक । मुदा कैक बेर जाधरि छोटका लोकसभ मतदान खसबए जाइत छलैक ताधरि ओकर सबहक मत खसि पड़ल रहैत छलैक। ओ सभ मतदान केन्द्रपर तमासा देखि कए वापस भए जाइत छल। कोनो प्रतिकृया नहि।

महिला सभ अपनामे गप्प करैत-

“गे दाइ, हमरा तँ बड़ डर लगै रहइ। कोना कए मोहर मारितिऐ। कहीं हाकिम पकड़ि लइत।”

किछु महिला सभ अहिना गप्प-सप्प करैत छलैक कि पैट्रोलींग करैत पुलिसक जीप भीड़क कारणे ओतहि ठाढ़ भए गेलैक। सभ केओ जान-बेजान भागल। बाह रे मतदाता! बेचन ई सभ देखि रहल छल । ओकर मोन कसमसा रहल छलैक। मुदा की करए? एहिना कहि नहि, कैक बेर चुनाओ अएलैक, गेलैक। मुदा ओकरा सबहक लेल धनि-सन। एहि-तरहेँसौंसे गाम दू खण्डमे बँटल रहल।

शोषक ओ शोषितक बीच एहन सौमनस्य देखि बेचन क्षुब्ध छलाह। ओ सोचलाह जे एक बेर फेर प्रयास कएल जाए। रातिक ९ बाजल रहैक। ओ छोटका लोक सबहक घरे-घर घुमि कए अपन घर लोटि रहल छलाह। बड़का लोक आ छोटका लोकसभक बीचमे नान्हिटा कलम छलैक। धराम-धराम। चारू दिसिसँ बेचनक

कपारपर लाठी बरसए लागल।

"आब बोलो बड़ा चला है हीरो बनने। यह कालेज नहीं है। गाम है।"

पता नहि की-की बजलै ओ।

बेचन धराम दए खसलाह । सौंसे गाममे हल्ला भए गेल। छोटका लोकसभ नि:सहाय भए ओहिना अपन-अपन मालिकक काजपर चलि गेल। बेचनक लहास ओहिना एसगर राति भरि पड़ल छलैक। भोर भेने दामोदर बाबू थानामे रपट लिखा अएलाह।

मामला रफादफा भए गेल। ओहि गामक क्रान्तिक स्वर सभ दिनक लेल गुम्म भए गेल।



सनकल

नहरिक काते-काते ओ चलि जाइत छलि। फाटल-चीटल नुआसँ देहक लज्जावरण दैत दुनू हाथे दुनू बच्चाकेँ कोरतर दबने एक सुरे बढ़ल जाइत रहए। जेठक ठहा-ठही रौद। चारूकात कतहुँ केओ नहि। मुदा ओ अपसियाँत भेल बढ़ले जाइत छलि। कि भेलैक ओकरा से नहि कहि? प्राय: ओ सासुरसँ रूसि गेल छलि। थाकल, ठेहियाएल ओ पाकड़िक छाहरि देखि बैसि गेलि। ओकर आँखिसँ नोर झर-झर खसए लागल। के पोछत ओकर नोर? सुनैत छलि जे सासुरमे लोककेँ बड़ सुख होइत छैक। सासु-ससुर, दिओर, दियादिनी सभ छलैक ओकरा। मुदा सभ जेना जन्मी दुश्मन रहैक ओकर। ओकर अनेरे खिधांस करब जेना ओकरा सभक धर्म रहैक। खेबो-पीबोक ओकरा कष्टे छलैक। घरबला कमासुत छलैक। मुदा भैयारीमे सभसँ छोट होएबाक कारण परिवारक ऋृण ओकरापर बहुत रहैक। भाइ सभ गरीबीमे छलैक। तेँ जे चारि-कौरी कमाइतो छल से कैकठाम बँटि जाइत छलैक। स्त्रीसँ ओकरा प्रेम तँ छलैक मुदा कालक प्रभाव ओकरो नहि छोड़लकैक । समय बीतलासँ ओकरा सौन्दर्य-सौष्ठव कम भए गेल छलैक आ ओकर ध्यान क्रमश: कोनो आन स्त्रीपर केन्द्रित होबए लागल छलैक। ओ स्त्री सुन्नरि छलैक, संगहि ओकरामे आधुनिकताक पुट सेहो छलैक, आंगिक चमत्कार छलैक आ यौवनक मादकता ओकरा आकर्षणक केन्द्र बना देने छलैक...।

कोना-ने-कोना इएह बात सभ ओकरा कानमे पड़लैक जे ओकरा पचाओल नहि भेलैक। दरिद्राक भार फराक, तंदुरूस्ती

घटैत से छलैक आ ओमहर घरबलाक उपेक्षापूर्ण आचरण... ।

मोन जेना बेरक्त भए गेल रहैक आ तेँ एक दिन ओ सासुरसँ काँखक तर बच्चाकेँ दबने भागि गेलि।

नैहर धनिक छलैक मुदा भाइ सबहक राज रहैक । पिता मरि गेलैक आ माए सेहो बुढ़ भए गेल छलैक। केओ घरमे मोजर नहि करैक। मुदा बेटीक तँ की नहिरे की सासुरे। आ तेँ जखन ओ नैहर पहुँचल तँ चारूकात गामक नव-पुरान लोक ओकरा घेरि लेलक।

“किछु सुनलिऐक? फलनमाक बेटी सासुरसँ भागि अएलैक अछि।”

जकरा जे फुराइक से बाजैत छलैक। आओर ओ हतप्रभ बीच अँगनामे ठाढ़ि रहए। के खोंइछ खोलत आ के पटिया ओछा कए बैसए कहतैक? अपने घरमे ओ आन बनल छलि। केओ सहारा नहि बुझाइक।

“सएह कहू। केहन पाथर भए गेलहुँ अहाँ लोकनि...! बेटी -डाटी छैक आइ आएल, काल्हि चलि जाएत। तकर अनादर किएक करैत जाइत छी।” -प्राण दाइ कहलखिन ।

कैकटा कनियाँ सभ आबि गेल छलैक ओहि आँगनमे। तीनटा ओकर भाइ छलैक। भरि-भरि दिन ओ जेठकाकेँ कोरा खेलबैत रहैत छलैक। जाड़क मासमे रौदमे तेल लए देह मलैत रहए आ कनेको जहाँ बच्चाकेँ सर्दी होइक तँ जेना ओकर प्राण सन्न दए रहि जाइत रहैक। मुदा आइ चारि-पाँच दिन अएला ओकरा भए गेल छलैक आ ताधरि जेठकासँ टोका-चाली नहि भेलैक। भाइ सभ तीनू तीन ठाम भए गेल छलैक आ माएकेँ तीनू गोटे मिलि कए

फराक खोरिस दैत छलैक।

हारि कए जखन ओकरा कोनो भाइ नहि पुछलकै तँ माएक संगे रहए लगलि। माए तँ माए होइत छैक ने। रहि-रहि कए नोरक धार बहाबए लगैत छलैक। उच्च सुनैत छलैक आ तेँ ओकरासँ जे नीकसँ गप्पो नहि होइक। कारण जे ओकर बात कनियाँ सभ सुनबाक हेतु टाट लागल रहैत छलैक। कहबी छैक जे गेलहुँ नेपाल आ कर्म गेल संगे। सएह परि ओकरो भेलैक। सासुरमे सासु, ननदि आ दियादिनी तँ नहिरामे ई कनियाँ सभ ओकर जानक जपाल भए गेल छलैक। तैओ माए लग छलि। अहिठाम किछु स्वतंत्रता तँ छलैक।

“सएह की हाल अछि ओकरा सन-सन हजारो कन्याक जकरा ने सासुर ,ने नहिरे- केओ नहि होइत छैक?”

सएह सभ सोचैत रहए। सोन दाइ सोन दाइ, सौंसे गाममे सोर रहैत छलैक। गोर नार दप-दप छलि ओ। ओकरामे सभ गुण छलैक। मुदा गुणसँ की हो? टाकाक बिआह होइत छैक। पिता धनिक मुदा कंजूस छलखिन। बेटीक भाग नहि देखलखिन आ एकटा साधारण लोकसँ ओकर बिआह करा देलखिन सौंसे गाम छिया-छिया कहलक।

“सएह हौ, लोचनो बाबू, विचार घोरि कए पीबि गेलाह। बेटीक भविष्यक कनिको विचार नहि केलाह। पाइ तँ अबैत जाइत रहैत छैक।”

बेटा सबहक भविष्यक चिन्ता जबरस्त छलनि। की होएत की नहि? बेटी तँ दोसर धर चलि जाइत छैक। ओकरासँ वंशक रक्षा तँ नहि होइत छैक। मुदा बेटा तँ कुलक आधार छैक। सएह सभ

हुनकर पुरनका मिजाज सोचैत रहैत छल।

सासुरमे दरिद्रा चरम सीमापर छलैक। सभ दियादिनी मरूआ कुटए। रोटी ठोकए। धनकुट्टी करए। द्विरागमनक पन्द्रह-बीस दिन धरि तँ ओकरा केओ किछु नहि कहलकैक। मुदा कालक्रमे सभक व्यवहार कठोर होइत गेलैक। पटिदारी छलैक किने।

"गे मैयो भरि दिन बैसल रहतौ जेना फरफेसरक बहु हो..!"

घरबला जाबत काल रहैक ताधरि केओ ओकरा किछु नहि कहैक। ओकरा काजपर जाइते फेर ओएह रामा ओएह खटोली। ओकरा बासन छुआओल गेल आ क्रमश: ओ पार लगा कए चौका-बासनक काज करए लगलि। मुदा ओहि घरमे तँ पटिदारी छलैक। जेठकी दियादिनी बड़ क्रूड़ छलैक। ओकर इच्छा जे कुटनी-पिसनीमे सेहो पार लगौक। किछु दिनक बाद ओकरा सन्तान हेबाक सम्भावना भेलैक। मुदा ताहिसँ की? भानस-भात, कुटनी-पिसनी आ ताहिपर सँ सासु ओ ससुर तथा दियादिनी सबहक कटाह गप्प-सप्प।

सुनैत-सुनैत ओकर दम फुलैत छलैक। मुदा करए की? ककरा कहैक अपन दुख। चारूकात अन्हारे-अन्हार बुझाइक। जकर घरोबला ओकर पक्षमे नहि होइक ताहि महिलाक भगबाने मालिक होइत छैक आ सएह परि ओकरो छलैक। ओना, नवमे ओकर घरबला बड़ आव-भाव रखलकै। नव-नव कपड़ा-लत्ता सभ चीज आनि-आनि दैत छलैक।

मुदा ओकरा ध्यान जेना क्रमश: हटैत गेलैक। ओ एसगरे हकासलि-पियासलि भरि दिन आ दुपहर राति धरि काज करैत रहैत छलि। केओ एहन नै भेटलैक जकरा अपन मोनक भाव कहितै,

जकरा लग मोन भरि कनितै।

"उपाय तँ छलैक। मुदा बोराक आम आ बेटीमे मिथिलामे कोनो अन्तर नहि छैक। साँठि देनहि कल्याण। आ जँ एक बेर ककरो गारामे बान्हि देलिअनि तँ फेर जन्म भरिक लेल निचेन भए जाउ। धन्यवाद कही मिथिलाक समाजकेँ ।"

इएह सभ बात ओकर मोनमे उठैत रहैत छलैक। ओमहर ओकर भाइ सभ अपनामे भिन्न-भिनाउज कए लेलकै आ सभ अपना-अपनीक धन जमा करैत छलैक। सभकेँ कोठा छलैक। जहिआ ओ नैहरसँ कनैत बिदा भेल छलि तहिओ ओकर पिताकेँ कोठा छलैक। मुदा अखन तँ ओकरा बुझाइत जेना दोसर ठाम आबि गेलि हो। चारूकात पोखरिया-पाटन छलैक। सएह, धन एतेक आ मोन कतेक छोट छैक ओकर भाइ सबहक। ठीके छैक कहबी जे टाका आगू लोकसभ सम्बन्ध बिसरि जाइत अछि।

किछु दिन नैहरमे रहलाक बाद ओकर सासुरक लोक अएलैक। बड़ उपरागा-उपरागी भेलैक। आ ओकरा फेर लोक सासुर लए गेलैक। मुदा एहि बेर तँ ओकर सासु बाढ़निए लेने ओकर स्वागत केलक। एहि तरहेँ आनो-आनो लोकक आचरण ओकरा प्रति कठोर होइत गेलैक। ओकर गहना सभ बेचि देल गेल रहैक। ओ क्रमश: अकान ओ सुन्न भेल जाइत छलि।

एक दिन ओकरा ने आगू फुराइ आ ने पाछू। दिमाग बिजलीक करेन्ट जकाँ फेल कए गेलैक। ओ फेर भागल नैहर। एहि प्रकारे नैहर-सासुरओ कैक बेर केलक। सभठाम ओकरा उपेक्षा भेटैत छलैक। नैहरोसँ ओकर मोन उचटि गेल रहैक। तँ ओ सोचलक जे हुनके लग चली। जेना-तेना हराइत-भुतियाइत ओ

हुनकर डेरापर पहुँचलीह तँ ओहिठामक दृष्य देखि कए गुम्मे रहि गेलीह। भोरक समय छलैक ओकर घरबला कोनो दोसर स्त्रीक संग एसगर घरमे रहैक। ओ चोट्टे घुमि गेलीह आ नहि जानि ओ कतए चलि गेलीह।

एमहर ओकर खोज-पुछारि होबए लगलैक आ कएक दिनक बाद एकटा टीसनपर ओकरा लोक बैसल, किछु-किछु रखने,फाटल-चिटल कपड़ा पहिरने देखलक। ओ ठहाका भरि कए हँसैत छलैक- जेना समस्त समाजपर हँसि रहल हो। ओकरा ने कथुक लाज छलैक आ ने धाख। मुदा लोकसभ कहए लगलैक जे ओ एकदम सनकि गेल छलि। ओ एकदम गुम्म भए गेलैक। तकर बाद फेर कहिओ ककरोसँ नहि बजलकै।



हम बौक छी

पाकड़ि गाछ तर ओ पसीना पोछि रहल छल। आगा-पाछा ओकर केओ नहि छलैक। अगसरे छल। नित्य भोरे उठैत छल आ साँझ धरि परिश्रम करैत छल। बदलामे किछु अन्न-पानि भेटि जाइत छलैक। दुपहरियामे जहन कनेक उसास होइक तँ गामक जे पूव दिस पाकरिक गाछ छलैक ओकरे छाहरिमे बैसि पसीना पोछए लगैत छल। ओकर बएस दस साल हेतैक। पता नहि, कहिआ ओकर माए-बाप मरि गेलैक। ओकरे संगतुरिया सभ कैकटा छैक जे इसकुल जाइत रहैत छैक। माए-बाप सभ ओकरा रंग-बिरंगक कपड़ा किनि दैत छैक। किताब किनि दैत छैक। केहन भागबंत छैक ओकर संगी सभ। सएह सभ अर-दर ओ सोचैत रहि जाइत अछि। पता नहि अखन धरि कतेक मालिक ओहिठाम ओ काज केने अछि। जतहि गेल ओतहि लात-जुत्तासँ स्वागत भेलैक। मुदा ओ की कए सकैत छल? पेटक सबाल छलैक। जाधरि सहि सकैत छल, सहैत छल आ कहिओ चुप्पे भागि जाइक। पाछू लागल मालिक चिकरैत उठैत छलैक। जेना-तेना कए ओ अपन पेट पोसैत गेल। आगा बढ़ैत गेल। जीबनक एक-एक दिन एकटा उपलब्धि जकाँ बितैत गेलैक। क्रमशः ओ जवान भए गेल। एमहर सरकार नव-नव योजना सभ लागू केलक अछि। गाम-गाममे बैंक सभ खुजि गेलैक अछि। एक दिन ओहो बैंक गेल आ मनेजर साहेबक आगू उचिती-मिनती केलक। मनेजर साहेब ओकरा एकटा रिक्सा किनि देलखिन।

ओकरो नाम मनेजरे छलैक मुदा गामक लोक मनेजरा कहैत

छलैक। मनेजरा रिक्सा चलबए लागल। नित्य दससँ पन्द्रह टाका आमदनी भए जाइत छलैक। ठाठसँ जिनगीक गाड़ी सरकए लगलैक।

रिक्सापर 'मनेजर राय' लिखल रहैक । भोरे उठए मनेजरा आ घण्टी बजबैत दनादन निकलि पड़ए। मनेजराक प्रतिष्ठा छोटका लोकसभमे बढ़ए लगलैक। कैकटा कथा सेहो ओकरा बिआहक लेल आबए लगलैक । अन्ततोगत्वा, मनेजरा बिआह कए लेलक। गामसँ पाँच कोस पच्छिम सासुर छलैक। अमन-चैन भए गेल रहैक ओकर जिनगीमे। भोरे छह बजे रिक्सा लए कए बिदा भए जाइत आ साँझमे सात बजे एक ढेरी कैंचा लेने वापस होइत। मुदा ओकर ई जिनगी बेसी दिन नहि चलि सकलैक।

सात-आठ बरख पहिने ओ फूल बाबूसँ दसटा टाका पैंच लेने छलैक। संयोगसँ ओ पैसा आइ धरि वापस नहि भए सकल छलैक। ओकर हालतमे सुधार देखि गौंआ-घरूआ सभ अनेरे ओकरासँ ईर्ष्या करैत छलैक। ओहि दिन साँझमे वापस भेल। बेस आमदनी भेल रहैक। घर पहुँचले छल कि फूल बाबूक गर्जन सुनेलैक-

"मनेजरा छैं, मनेजरा छैं?"

"की है मालिक।"

"तों अपन हिसाब किएक नहि फरिचा रहल छैं।"

"कोन हिसाब?"

"कोन हिसाब! केना बजैत अछि जेना एकरा किछु बुझले ने होइक। दस बरख भए गेलौ ओहि कर्जाकेँ। कहिओ देबाक सुधि अएलौक? सुदि समेत ओकर आब पाँच सए टाका भए गेल अछि! काल्हि भोर धरि टाकाचुकता कए दे, नहि तँ... ।"

मनेजरा तामसे बुत्त भए गेल। नहि सहि भेलैक ई सरासर अन्याय ओ बैमानी। तामसे ओहो गरजए लागल-

"होसमे बात करू मालिक...! बुझलौं जे बड़ टाकाबला छी।"

एतबा ओ बाजल कि फूल बाबू गरिआएब शुरू केलखिन। मनेजराकेँ सेहो टाकाक गरमी रहबे करैक। ओ अत्याचारक प्रतिकार करब कर्तव्य बुझि गेल छल। फूल बाबूकेँ गट्टा पकड़लक आ गर्दनियाँ दैत अपना दरबाजापर सँ भगा देलक। फूल बाबू बेस तावमे आबि गेल छलाह। मैथिली छोड़ि हिन्दीमे गरजए लगलाह-

"कल देख लेंगे। ऐसे-ऐसे कितने पाजी को मैंने ठीक किया हूँ।"

गाममे जबरदस्त हल्ला बजरि गेलैक। चारूकातसँ लोकसभ दौड़लैक आ दुनू गोटेकेँ फराक कए देलक। फूल बाबू अर-दर बजैत वापस अएलाह।

प्रात भेने मनेजरा पूर्व जकाँ रिक्सा निकाललक। ठाठसँ ओकर सीटपर बैसल आ घण्टी टनटनबैत घरसँ बिदा भेल। गामसँ बहराएल कि रिक्साक चालिकें तेज कए देलक। रिक्सा हवामे उड़ए लगलैक। कनेक दूर आगा बढ़लापर रस्तापर जारनि राखल भेटलैक। मनेजरा रिक्सा रोकलक आ जारनिकेँ हटबए लागल। एतबेमे चारि-पाँचटा लठैत दन-दन कए दुनू कातसँ धानक खेतसँ बहरेलैक। दन-दन-दन। मनेजराक कपारपर लाठी पड़ए लगलैक।

मनेजरा ठामहि खसि पड़ल। ओ लठैत सभ रिक्सा पकड़लक आ ओकरा मारि लाठीसँ, मारि लाठीसँ ओतहि खण्ड-खण्ड कए देलक। फेर पता नहि, ओ लंठ सभ कतए निपत्ता भए

गेलैक। बहुत काल धरि मनेजरा एहिना अचेत बीच रस्तापर पड़ल रहल आ ओकर रिक्सा टुकड़ी-टुकड़ी भए कए लगेमे राखल रहैक। माथपर सँ खुन टपकैत रहैक आ मारिसँ सौंसे देह भुजरी-भुजरी भए गेल रहैक। धण्टा भरिक बाद एकटा रिक्साबला ओही रस्तासँ गेल।

मनेजराकेँ ओतए पड़ल देखि ओ सन्न रहि गेल। ओकरा रिक्सापर दूटा यात्री छलैक हुनका सभकेँ रिक्सेपर छोड़ि ओ उतरल। मनेजरा रिक्सा चलबएमे निपुण भए गेल छल आ तेँ रिक्साबला ओकरा 'गुरु' कहि कए बजबैत छलैक। 'गुरु'क ई दशा के केलक? किछु काल धरि ओ रिक्साबला क्षुब्ध रहल। तकर बाद जेना ओकरा अकिलमे सभटा फुराय लगलैक। धराक दए मनेजराकेँ रिक्सापर लदलक आ वापस अस्पताल दिसि रिक्साकेँ तेजीसँ चलबए लागल।

मनेजरा तीनि दिन धरि लगातार अस्पतालमे पड़ल रहल। ऑक्सीजन देल गेलैक। बहुत रास दवाइ करए पड़लैक। चारिम दिन साँझमे ओ आँखि खोललक। होस अबिते अपन रिक्साकेँ ताकए लागल। मुदा केओ किछु नहि कहलकैक। मनेजरा फेर चुप्प भए गेल। अस्पतालमे ओकरा एक मास समय लागि गेलैक। गामपर बच्चा सभ अन्न-पानिक अभावमे मरणासन्न रहैक। घरवाली मालिक सभबहक आँगनमे काज कए कए गुजर करैक। मुदा जाहि दिन मनेजरा वापस अस्पतालसँ अएलैक तँ ओकर घरवाली खुसीसँ दौड़ए लगलैक।

मनेजरा घुरि तँ आएल मुदा ओकर बाँमा पैर नाङड़ भए गेलैक । रिक्सा थकुचल गेल रहैक। आगा कि करए से नहि फुरा

रहल छलैक। घरमे दूटा बच्चा सेहो भए गेल छलैक। सभ अन्न बिना रोगा रहल छलैक। डाक्टर मनेजराकेँ मास दिन आराम करबाक परामर्श देने छलैक। मुदा घरक परिस्थिति देखिकए ओकरा बैसल नहि गेलैक।

मनेजरा साहस केलक आ आँगनसँ निकलल। मुदा जाए तँ कतए? टांग टुटि गेल छलैक। रिक्सा थकुचाएल राखल छलैक। गाममे मात्र फूले बाबू लहनाक कारोबार करैत छलाह। की करए? झख मारि कए फूल बाबूक ओहिठाम पहुँच गेल। ओकरा अखन धरि नहि बुझल छलैक जे ओकर घरवाली फूले बाबूक ओतए काज करैत छैक। फूल बाबू ओकरा बेस ध्यान करैत छलखिन। ओकर घरवालीक नाम सुनरी छलैक। तेहने गुणो छलैक। मुदा सौन्दर्य गरीबीसँ दागल छलैक। फूल बाबूक कहि ने कहिआसँ ओकरापर नजरि गरि गेल रहनि। मनेजरा पहुँचते फूल बाबूकेँ सुनरीसँ असगरेमे हँसी-ठठा करैत देखि लेलक। ओ कतहुँ दोगमे नुका गेल आ तमासा देखए लागल। सुनरी नै-नै करैत रहलैक। मुदा फूल बाबूक आक्रमकता बढ़ले गेलनि। एहिसँ आगू मनेजराकेँ देखबाक शक्ति नहि रहि गेल रहैक। प्रत्याक्रमणक सामर्थ्य नहि रहैक। तेँ ओ चोट्टे घुरि गेल आ घरमे आबि कए धराम दए खसल। किछु बाजल नहि होइक। ओ बौक भए गेल।



फाटू हे धरती !

पण्डितजी बेस कर्मकाण्डी छलाह। भोरसँ साँझ धरि जतेक काज करितथि सभमे भगवानकेँ स्मरण अवश्य करितथि। मंत्रोच्चार करैत उठितथि आ मंत्रेच्चारेक संग सुतितथि। त्रिपुण्ड आ ताहिपर लाल ठोप हुनक ललाटकेँ सुशोभित केने रहैत छल। ताहिपरसँ हरदम मुँहमे पान कचरैत, लाल-लाल पानक पीक फेकैत ओ साक्षात् कालीक अवतार लगैत छलाह। कारी चामपर ललका वस्त्र धारण कए जखन ओ भगवतीक बन्दना करए पहुँचैत छलाह तँ वातावरणमे एकटा अपूर्व सनसनी पसरि जाइत छलैक।

पण्डितजीक बएस करीब ४५ बरख होएतनि। परिवारमे दुटा बेटी आ एकटा बेटा छलनि। घरवालीक स्वर्गवास आइसँ दस साल पहिने भए गेल छलनि। पण्डितजीक दुनू बेटी बेस सुन्नरि आ लुड़िगर छलनि। मुदा हुनका पासमे टाकाक अभाव रहनि तेँ कतहु कन्यादान पटैत नहि छलनि। बेटा भिन्न भए गेल छलखिन आ पण्डितजी अपन दुनू बेटीक संग एकठाम छलाह।

पण्डितजीक घरक लग-पासमे बेस सम्पन्न परिवार सभ छलैक। पण्डितजीक गुजरो हुनके सभहक माध्यमसँ होइत छलनि। बेटा अपन घरवालीक संग दरभंगामे रहैत छलखिन। ओहिठाम डिस्ट्रीक्ट बोर्डमे खजांचीक काज करैत छलाह। मुदा पण्डितजीकेँ किछु मदति नहि करैत छलखिन। ओ अखनो पण्डिताइक बले जीबैत छलाह। दुनू बेटी समर्थ छलखिन। गामेक हाइ इसकुलसँ मैट्रिक धरि सभकेँ पढ़ओलखिन। आगा पढेबाक सामर्थ्य नहि रहनि। ओकरासभक बिआहक लेल छटपटाएल

छलाह मुदा टाकाक जोगार नहि होनि। बिना टाकाक कोनो बर बिआह करए हेतु तैयार नहि छलनि। इएह सभ चिन्तामे ओ चिन्तित रहैत छलाह।

ओना पण्डितजीक सम्बन्ध पूरा गामसँ मधुर छलनि। मुदा दू-तीन परिवारक लोक हुनका बेसी आदर करैत छलखिन। हीरा बाबूक ओतए तँ भोर-साँझ दू घन्टा जरूर बैसार होइत छलनि। मुदा पण्डितजी ककरो कहिओ अपना हेतु किछु कहलखिन नहि। हीरा बाबूकेँ चारिटा बेटा छलखिन। दूटा तँ बाहर रहैत छलखिन मुदा छोटका दुनू मैट्रिक उत्तीर्ण केने छलखिन आ बससँ नित्य मधुबनी जाइत छल किलास करए। सरोज ओ मीरा सेहो ओकरे सभहक संगे मैट्रिक उत्तीर्ण केने छलि।

एक दिन सौंसे गाम सुतल आ सुति कए उठल तँ गुम्मे रहि गेल। सरोज चुपचाप घरसँ निपत्ता भए गेल छलैक। घरे-घर तका-हेरी भेलैक मुदा कोनो पता नहि। आन्हर हीराबाबूक दोसर बेटा सेहो काल्हिएसँ निपत्ता छलैक। सौंसे गाममे कनाफुसी होबए लगलैक। पण्डितजी गरीब जरूर छलाह मुदा हुनका अपन प्रतिष्ठाक पूरा ध्यान छलनि। ओ अहि गम्भीर चोटकेँ नहि सहि सकलाह आ रातिमे सुतलाह से सुतले रहि गेलाह। मीरा गुम्म, सुम्म आश्चर्यचकित सोचि नहि पाबि रहल छलीह जे की करथि? ओ आब एकसरि छलि। आगू-पाछू केओ नहि। पिताक मरला चारि दिन भए गेल छलैक।

सौंसे गाममे सरोजक फरार होएबाक समाचार बिजली जकाँ पसरि गेल रहैक। मीराक तँ बकारे नहि फुटैत छलैक। की करए ? पाँचम दिन सभ दियाद-वादक बैसार भेल। तय भेल जे गाम लए

कए श्राद्ध भए जाए। पैसा-कौरी हीराबाबू गछलखिन। मीरासँ मात्र एतबा गछबा लेल गेलैक जे काज भेलाक बाद घर-घड़ारी हीराबाबूक नाम कए देल जएतनि। पण्डितजीक एक मात्र ओएह सम्पत्ति छलनि। बैसार खतम भेल। मीरा गुमसुम एकचारी दिस देखि रहल छलि। पण्डितजीक श्राद्ध नीक जकाँ समपन्न भेल। हीराबाबू रजिष्टारकेँ गामेपर बजा अनलाह। लिखा-पढी सम्पन्न भए गेल। हीराबाबू मीराकेँ कहलखिन-

"मीरा, मास दू मास अही घरमे रह। तोरे घर छौक ने।"

मीरा चुपचाप सुनैत रहलि जेना ठकबिदरो लागि गेल हो। अपने गाममे, अपने घरमे मीरा बेघर भए गेल छलि। गामक लोक ओकरा प्रति सहानुभूति तँ देखबैत छलैक मुदा महज मात्र देखौटी। धीरे-धीरे ओहो खतम। पन्द्रह दिन भए गेल छलैक घरक रजिष्ट्रीक। मीराकेँ आब ओहि घरमे एक पल बिताएब असम्भव लगैत छलैक। एक दिन सएह सभ सोचि रहल छलि कि लगलैक जेना दरबाजापर केओ ठाढ़ होइक।

"हीराबाबू, अपने एतेक रातिमे...?"

हीराबाबू किछु बजबाक हिम्मति नहि कए पाबि रहल छलाह। मीराक तामस अतिपर पहुँच गेलैक। ओ चिचिआएलि –

"चोर! चोर!"

हीराबाबू भगलाह। लग-पासक लोकक ओहिठाम भीड़ एकट्ठा भए गेल छलैक। मीरा भोकासि पाड़ि कए कानि रहल छलि। दाइ-माइ सभ दस रंगक गप्प-सप्प करैत पहुँचि गेल छलैक। जकरा जे मोन होइक से बजैक। मीरा चुपचाप सभ किछु सुनैत रहलि। भीड़ ओहिठामसँ क्रमशः हटैत गेलैक। राति गम्भीर भेल

जाइत छलैक। सौंसे गामक लोक सुति रहल छलैक। मीरा चुपचाप गामसँ बाहर भए गेलि। ओकरा किछु नहि बुझल छलैक जे ओ कतए जा रहल अछि मुदा कोनो दोसर बिकल्पो नहि रहि गेल छलैक।

मीरा बड्ड पढ़लो नहि छलि। सहरमे कहिओ रहल नहि छलि। मुदा तकर बादो ओकरा कोनो अपसोच नहि छलैक। टीसनपर गाड़ी आबि गेल छलैक आ आओर अधिक सोच-विचार करबाक अवसरो नहि छलैक। ओ तुरन्त टीकट किनलक आ गाड़ीपर चढ़ि गेलि। ट्रेनमे बेस भीड़ छलैक। किछु काल तँ ओ ठाढ़े रहलि मुदा ताबते ओकरा चिर-परिचित अमित सेहो ओकर सामनेक सीटपर बैसल देखेलैक । अमित हीरा बाबूक ज्येष्ठ पुत्र छल। मीराकेँ ट्रेनमे धक्कम-धुक्की करैत देखि ओ तुरन्त उठि गेलैक।

“मीरा तूँ कतए जा रहल छैं?” -अमित पुछलकै । मीरा ओकरा देखि कए अवाक रहि गेलि। किछु बजबे नहि करैक। अमित ओकरा अपना सीटपर बैसा देलकै। अगिला टीसनपर किछु यात्री उतरलैक। अमित सेहो ओहिठाम उतरए चाहैत छल मुदा मीराकेँ एकसरि छोड़ि देब ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक। ओ मीरासँ ओकर गन्तव्य पुछए चाहलक। मुदा मीरा किछु बजबे नहि करैक। बड़ मोसकिलसँ मीरा ओकर कहब मानि ओतहि उतरि गेलि। गाड़ी सीटी दैत ओहिठामसँ आगा बढ़ि गेल। ट्रेनपर सँ उतरि कए मीरा कानए लागलि । अविरल अश्रुक प्रवाह देख अमितक मोन करूणासँ भरि गेलैक। ओ मोनहि मोन निश्चय केलक जे मीराकेँ ओकर घर वापस दिआ कए रहत चाहे ओकरा कतबो संघर्ष किएक नहि करए पड़ैक। ओ बड़ मोसकिलसँ मीराकेँ चुप केलक

आ अपना संगे गाम वापस लेने अएलैक।

ओहि दिन पूरा गामक बैसारी भेलैक। सभ हीराबाबूकेँ 'छिया-छिया' कहलकनि। ताबतमे अमित कतहुसँ आएल आ साफ-साफ घोषणा कए देलक जे ओ मकान मीराक छैक, ओकरे रहतैक। सौंसे गौंवा प्रसन्न भए ओकर जयगान करए लागल। मुदा हीराबाबू परेसान भए गेलाह । बैसारीसँ लौटि ओ छटपटाएल रहथि। साँझमे बाप-बेटामे विवाद पसरि गेलनि। मुदा अमित हुनकर गप्प सुनबाक हेतु तैयार नहि छल आ एक बेर फेर साफ-साफ कहि देलकनि जे एहि अन्यायमे ओ हुनकर संग नहि देतनि। विवाद बढ़िते गेल। अन्ततोगत्वा, हीराबाबू कम्बल, बिछाओन सरिओलनि आ गामसँ बिदा भए गेलाह। केओ टोकलकनि नहि। अमित मोने-मोन सोचैत रहल-"भने ई आफद टरि रहल छथि।"

हीराबाबू चलि गेलाह मुदा मीराकेँ तैओ चैन नहि भेटलनि। सौंसे गाममे दुष्ट लोकसभ मीरा आ अमितक बारेमे नाना प्रकारक कुप्रचार करए लगलैक। नित्य एकटा नव गुलंजर गामक एक कोनसँ निकलैत आ दोसर कोन धरि पसरि जाइत। मीराकेँ ई सभ गप्प केओ-ने-केओ आबि कए कहि दैक। ओ बड़ संवेदनशील छलि, भावुक छलि, तेँ एहन-एहन गप्प-सप्प सुनि कए कानए लगैत छलि। एक दिन अहिना एसगरे अँगनामे कनैत रहए। अमित कतहुसँ आबि गेलै। ओकरा एना कनैत देखि बड़ कष्ट भेलैक अमितकेँ।

"मीरा नहि कान!"

जेना कि सभ बात ओकरा बुझले होइक।

"सुन! हमर बात मानि ले। हमरासँ बिआह कए ले।"

मीरा आओर जोरसँ कानए लागलि । अमित ई सभ नहि देखि सकल आ चुप्पे ओतएसँ सरकि गेल। तकर बाद अमित ओकरा लग दोबारा घुरि कए नहि अएलैक । पूरा गाममे हल्ला भए गेलैक जे अमित कतहु चलि गेल। मीरा ओतेकटा गाममे फेर एकसरि भए गेल छलि। गाममे कोनो थाह पता नहि छलैक। बच्चा सभकेँ ट्यूशन पढ़ा-पढ़ा कए गुजर करैत छलि। मुदा अमितक गामसँ निपत्ताभए गेलाक बाद ओ अत्यधिक दुखी छलि। ककरोसँ किछु गप्प करबाक इच्छा नहि रहैक। एतबेमे ककरो गरजब सुनेलैक। हीराबाबूक पितियौत अगिआ बेताल छलाह।

“कहाँ गेल पण्डितक बेटी...!”

मीराकेँ ई सभ गप्प नहि सहि भेलैक। मोन कहैक- “फाटू हे धरती आ समा लिअ”। मुदा ओ किछु बाजिओ नहि सकलि। असोरापर करोट भए गेलि। चारूकातसँ लोकसभ दौड़ल। गाममे हल्ला भए गेलैक - ‘मीराक हार्ट फेल कए गेलैक’। ओ घड़ारी सभदिन लेल सुन्न भए गेलैक।’



उपकारक भार

ओ निम्न मध्यवर्गीय परिवारमे पालल-पोसल गेल छल। मुदा सभ दिनसँ ओकर महत्वाकांक्षा पैघ छलैक। गाममे मिडिल इसकुल रहै। महींस चरा कए आबए आ फटलाही अंगा पहीरि कए फक्का फँकैत इसकुल बिदा भए जाइत छल। सातमामे जहन ओ प्रथम आएल छल तँ मास्टर सभ ओकर पीठ ठोकि देने रहथिन। पीठ ठोकैत प्रधानाध्यापकजी सेहो कहलखिन- “बाह रे बेटा, अहिना आगू करैत रह...!” सौंसे गाममे ओकर नाम तेजस्वी, सुशील ओ प्रतिभाशाली बच्चाक रूपमे ख्यात भए गेल छलैक। आ लोकक लेल धरि ई सभ धनिसन। ओकरा पढ़बाक धुन लागि गेल छलैक। किताब लए लैत, महींसपर चढ़ि जाइत आ पढ़ैत रहैत। खेबा-पीबाक कोनो सुधि नहि। मैट्रिकक परीक्षामे ओ जिला भरिमे प्रथम स्थान प्राप्त कएलक। सरकारक दिसिसँ ओकरा ३०० टाका प्रति मासक छात्रवृति सेहो भेटलैक आ ओ गामसँ दूर बहुत दूर पढ़क लेल चलि गेल। कलकत्ता विश्वविद्यालयक ओ सम्मानित छात्र भए गेल छल। एहि तरहेँओ पढ़िते गेल, बढ़िते गेल।

कलकत्तामे ओकरा रहए जोकर कोनो नीक स्थान नहि भेटि रहल छलैक। मास दिन भए गेल रहैक कलकत्ता अएला। मुदा कोनो ठौर-ठेकान नहि भेल छलैक। कहिओ ककरो ओहिठाम, कहिओ कतहु। एहिना मास दिन बिति गेलैक। एक दिन

विश्वविद्यालयक वाचनालयमे एसगरे गुमसुम बैसल छल। एतबेमे ओकरे वर्गक एकटा छात्रा 'मालती' अएलैक आ ओकरा एकटा हल्लुक सन चाटी मारलकैक आ एकसुरे बजैत रहि गेलैक-

"एना किएक गुमसुम रहैत छैं?"

आलोककेँ ओकर सभटा बातसँ जेना छगुन्ता लागि गेलैक। ओ मालती दिस एकटक तकैत रहल। मुदा किछुए कालमे ओ आत्मलीन भए गेल। मालतीकेँ ओकर एहि अन्तर्मुखी आकृतिसँ बड़ असमंजस भए गेलैक। ओ ओहि ठामसँ चोट्टे घुमि गेलि। आलोक किछु नहि कहलकैक। चुप-चाप कहि नहि की-की सोचैत रहि गेल? साँझक समय लगीच छलैक। वाचनालयक चपरासी कहलकैक-

"बाबूजी। आब समय समाप्त छैक। कोठरीमे ताला लगतैक।"

आलोक चुप्पे ओहि ठामसँ बिदा भेल। आलोकक जिनगी अहिना अन्हरियामे बितैत रहल छलैक। इजोरियाक प्रत्याशामे जीवि रहल छल। एक-एक डेग संघर्षक पृष्ठभूमिमे कहि नहि ओकरा केमहर लए जाइत छलैक। मुदा ओ चलिते रहल छल। नेनासँ अरवन धरि कष्ट कटैत-कटैत ओकर संवेदनशीलता शिथिल भए रहल छलैक। प्रकृतिक सौन्दर्यसँ दृष्टि हटल जा रहल छलैक। ओहि समयमे मालतीक संग ओकर भेँट जेना ओकर दृष्टिकेँ एकदम बदलि देबाक हेतु तत्पर भए गेल होइक। यद्यपि ओ मालतीसँ भरि पोरव गप्पो नहि केने छल, मुदा कहि नहि ओकरासँ किएक एहन आत्मीयता बुझाइत छलैक।

मालती सौन्दर्यक प्रतिमूर्ति छलि। ओकर स्वभावक संतुलन,

आओर दृष्टिक मार्मिकता अद्वितीय छल। ओ कोनो बहकल लोक नहि छलि। मुदा ओकरा आलोकक प्रति एकटा स्वत: स्फूर्त, स्नेह उभरैत छलैक। संभवत: ओ आलोकक संघर्षक प्रति अधिक संवेदनशील भए गेल छलि। आलोककेँ कलकत्ता अएला डेढ़ माससँ ऊपर भए गेल छलैक। मुदा ओकरा अखन धरि रहए जोकर मकान नहि भेटि सकल छलैक। मालतीक मकानमे बहुत रास जगह छलैक। आसानीसँ ओ एकटा कोठरी आलोककेँ दए सकैत छलि। मुदा आलोकसँ किछु कहबाक ओकरा साहस नहि होइत छलैक। आलोकक गंभीर मौन ओ तजस्वी व्यक्तित्व जखन करवनो ओकरा सामने पड़ैत छलैक, ओ ओहिनाक-ओहिना रहि जाइत छलि।

एही क्रमे मास दिन आओर बिति गेल। वाचनालयमे एक बेर फेर आलोक भेट गेलैक। बेस दुखी बुझाइत रहैक। मालतीकेँ नहि रहल गेलैक। पुछलकै-

“की बात छैक? आइ बड़ उदास लागि रहल छेँ?”

आलोक चोट्टे कहलकैक-

“गाम घुरि रहल छी। लगैत अछि आब आगा पढ़ब भाग्यमे नहि लिखल अछि।”

मालती पुछलकै-

“किएक?”

आलोक गुम्म रहि गेलैक। मालती कहलकैक-

“चल हमरा संगे।”

आलोक ओकरा पाछू-पाछू बिदा भेल।

मालतीक पिता पुलिसक एकटा वरिष्ठ अधिकारी छलखिन आ पश्चिम बंगाल कैडरमे काज कए रहल छलखिन। मात्र दूटा कन्या छलनि। शीला ओ मालती। शीलाक बिआह, द्विरागमन सभ किछु सम्पन्न भए गेल छलैक। मालती कलकत्ता विश्वविद्यालयक आइ.ए.क. छात्रा छलि। बड़ीटा मकान खाली-खाली रहैत छलैक। डी.आइ.जी साहैब आलोककेँ देखिते प्रभावित भए गेलाह। गंभीर, तेजमय व्यक्तित्व। संघर्षक समयमे आलोक व्यक्तित्व आओर तेजस्वी भए गेल छल। मालती ओकर गुम्मी, ओकर प्रतिभा आ सभसँ बेसी ओकर सौम्यतापर मंत्रमुग्ध छलि । डी.आइ.जी. साहेब तेज लोक छलाह। आलोकक प्रतिभाकेँ ओ एकदम तारि गेलाह। आलोकक सभ वृतान्त मालतीक मुहेँ सुनने छलाह। कहलखिन-

"आलोक। ई अहींक घर अछि। निश्चिन्त भए रहू। कोनो बातक प्रयोजन हो तँ नि: संकोच बता देल करब। संगहि मालतीकेँ करवनो कए पढ़ा देल करबै। गणित कमजोर छैक। सुनैत छी अहाँ गणितमे बेस मजगूत छी।"

अपना बारेमे एकटा अतिचर्चित व्यक्तिसँ एतेक रास गप्प सुनि कए आलोक गुम रहि गेल। मालती अपन पिताक गप्प-सप्पसँ बेस प्रसन्न छलि। ओकरा सएह उमीदो छलैक।

आलोक आ मलती आब संगे संग रहैत छल। संगे पढ़ैत छल, कालेज जाइत छल आ कहि नहि कतेक काल धरि संगे गप्प-सप्प करैत रहैत छल। आलोक निश्छल भावसँ कहि नहि ओकरा की-की कहि जाइत छलैक। मुदा मालती लेल धनि-सन। ओ सभ चुप्पे सहि जाइत छलि।

आइ.ए.क परीक्षा लगीच छलैक। दुनू गोटे परीक्षाक तैयारीमे

कए रहल छल। आलोकक संग भेटि गेलासँ मालती सेहो नीक पढ़ाइ कए रहल छल। दुनू गोटे परीक्षा देलक आ नीकसँ परीक्षा उत्तीर्ण कए गेल। आलोक विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थान प्राप्त केने छल।

मालती प्रथम श्रेणीमे नीक नम्बर अनलक। डी.आइ.जी. साहेब आलोकसँ बड़ प्रसन्न छलखिन। मुदा आलोक लेल धनि-सन। ओ गुमसुम कोठाक ऊपरी मंजिलपर कहि नहि की-की सोचबामे व्यस्त छल।

डी.आइ.जी. साहेब मालती सहित हुनकर पूरा परिवार आलोककेँ मदति करबामे जान लगा देने छल। मुदा आलोककेँ ई सभ कोना दनि लगैक। ओकरा आवश्यकतानुसार सभ किछु भेटि गेल रहैक मुदा तैओ ओ कहि नहि किएक दुखी रहैत छल। मुदा करए की? अभावक असीम समुद्रमे कतेको काल धरि हेलैत-हेलैत एकटा सहारा भेटल छलैक। मुदा लागि रहल छलैक जे समुद्रसँ तँ उवरि गेल मुदा ओहि टापूक कोनो गहींर इनारमे डुबि जाएत जाहिसँ फेर ओ नहि निकलि सकत।

आखिर डी.आइ.जी. साहेब आ हुनकर परिवार ओकरा एतेक मदति किएक करैत छैक? मुदा करितए की? कोनो दोसर विकल्पो नहि छलैक। आगू बढ़ए, सहारा छोड़ि दिअए तँ फेर ओएह असीम समुद्र देखाइत छलैक- अभाव, कष्ट ओ संघर्षक चरमोत्कर्ष। कतए जाए? की करए? असमंजसमे जीवि रहल छल। इएह सभ सोचैत छल की मालती ऊपर आबि गेलैक। मौन एकाएक भंग भेलैक। ओकरा एना गुम्म देखि मालती कहि उठलै-

“चल, चल नीचाँ चल। आइयो एहिना गलफुल्ली रखबैं की?

तोरे कारण तँ हम एतेक नीक नम्बर लए कए उत्तीर्ण भेलहुँ अछि। चल, तोरा भरि पेट मिठाइ खुएबौ।"

आलोक हँसल आ मालतीक पछोड़ धए लेलक। नीचाँमे डी.आइ.जी. साहेब आ ओकर परिवारक सभ लोक आलोकक प्रतीक्षामे छलाह। ओ सभ आलोकक स्वभावसँ परिचित भए गेल छलाह आ तेँ किछु कहलखिन नहि मुदा ओकर अन्यमनस्कताकेँ तँ ओ निश्चित रूपसँ तारि गेलाह। डी.आइ.जी. साहेब बात बदलैत कहलखिन-

"बी.एस-सी. मे कतए नाम लिखैब आलोक? हमर विचार तँ अछि जे एहीठाम कलकत्ता विश्वविद्यालयमे नाम लिखाउ। ई नीक विश्वविद्यालय अछि।"

आलोक चुप्पे रहि गेल। फेर आन-आन बात होबए लगलैक। ताबतेमे टेलीफोनक घन्टी बजलैक आ डी.आइ.जी. साहेब जरूरी काजसँ ऑफिस बिदा भए गेलाह। मालतीक माए सेहो कतहु उठि कए चलि गेलैक। आब मात्र मालती आ आलोक ओतए रहि गेल छल। मालती गप्प शुरू करैत कहलकैक-

"आलोक। तूँ बड़ नीक लोक छेँ।"

आलोक एहि बातपर हँसि देलकै। कहलकैक-

"नीक तँ छी मुदा... ।"

"मुदा, मुदा किछु नहि! एहीठाम रह आ संगे संग दुनू गोटे बी.एस-सी. करब। कोनो बातक चिन्ता नहि कर।"

आलोक कहि नहि कोना- 'हँ' कहि देलकै।

मालतीक खुसीक ठेकान नहि छलैक। ओ दौड़ल घर गेलि

आ एक बाकुट मिठाइ आनि कए आलोकक मुँहमे ठुसि देलकै। आलोक मधुर खाइत चलि गेल। मालती आ आलोक एकटा नामक दू अंश भए गेल छल। भावुकताक संग परिस्थितिक सामंजस्य कए लेने छल आलोक। मुदा भावनाक तरंगमे बहि जाएब सेहो ओकरा पसिन नहि छलैक। ओ अपन लक्ष्यपर अडिग छल। जीवनमे ओकरा बढ़बाक छलैक। एही कारण ओ बहुत किछु स्वीकार कए लेने छल। मुदा ओ अपनहिसँ लगाओल लत्तीमे ओझराए नहि चाहैत छल। ओमहर मालतीक भावत्मकता सीमोल्लंघन करबाक हेतु उफान केने छल। आलोक एही दुबिधासँ परेसान छल। मुदा बीचमे संग्रामसँ भागि जाएब ओकरा मंजूर नहि छलैक। ओ मालतीकेँ पढ़ए-लिखएमे भरिसक मदति करैक। गप्पो-सप्प कए लैक मुदा ओहिसँ बेसी किछु नहि। मालतीक मोन ओहिसँ भरैक नहि। असंतोषक रेखा ओकर आकृतिपर स्पष्ट देखार भए जाइत छलैक। संतुलन बनएवाक दृष्टिसँ आलोक कहिओ काल डाँटिओ दैक। मुदा मालतीकेँ ओकर डाँटो मीठे लगैक।

आलोकक स्वभावसँ मालतीक पूरा परिवार प्रभावित छल। मुदा ओकरा लेल धनि-सन। ओकर पूरा ध्यान पढ़ाइमे लागल छलैक। जे किछु समय बाँचल रहैक से मालतीकेँ पढ़बएमे लगा दैक। आओर किछु नहि। मालती ओ आलोकक प्रगाढ़ अन्तरंग सम्बन्ध ओकर माए-बापकेँ छलैक मुदा ओ सभ आलोकक स्वभावसँ परिचित छलाह। मालती बड़ भावुक छल, मुदा आलोकक संतुलित, संयत ओ अन्तर्मुखी व्यक्तित्व अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय छलैक। ओमहर आलोकक अन्तर्मन ओकरा प्रति कएल गेल उपकारक भारसँ दबल छलैक। ओकर किछुओ सधि जाइक ताहि हेतु ओ मालतीकेँ पढ़बैत रहैत छल।

बी.एस-सी. परीक्षाक मात्र दू मास शेष रहि गेल छलैक। प्रतिदिन १०-१२ घन्टा ओ स्वयं पढ़ैत छल आ शेष समयमे मालतीकेँ पढ़बैत रहैत छल। परीक्षाक समय जँ-जँ निकट अएलैक, ओ मालतीक पढ़ाइक प्रति अपेक्षाकृत अधिक सचेष्ट होबए लागल। ओकर एहि परिश्रमक परिणाम भेलैक जे मालती पुनश्च प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण केलक, संगे आलोक विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थान प्राप्त केलक। एक बेर फेर ओकर घरक वातावरण आनन्दमय भए गेलैक।

ओहि राति मालतीकेँ निन्न नहि भेलैक। कहि नहि की-की सोचैत रहि गेल। भोर भए गेल रहैक। चारू कात लोक काजमे लागि गेल रहैक। मुदा आलोकक कतहु पता नहि रहैक। उठबामे एतेक अबेर किएक भेलैक? से सोचैत ओ आलोकक घर दिस बढ़लि। घरक केबाड़ी खुजल छलैक। चौकीपर एकटा चिट्ठी राखल छलैक। मालती चिट्ठी खोलि कए पढ़ए लागल-

“प्रिय मालती!

बहुत रास गप्प करबाक मोन छल। मुदा कहि नहि किएक किछु बजाइत नहि छल। तोरो बहुत रास गप्प करबाक इच्छा रहल होएतौक सेहो हमरा बूझल अछि। तोरा लोकनिक उपकारक भारसँ हम ततेक दबि गेल छी जे आब एक्को घड़ी एहिठाम नहि रहि सकब। कहि नहि तोहर सभहक कर्जा किछुओ सधा सकबौक की नहि? माफ करिहेँ।”

तोहर

आलोक।

मालती आकाश दिस शून्य भावसँ देखैत रहि गेलि। ❍

पंचैती

जमाना कतए सँ कतए चलि गेल मुदा गाम-घरक लोक अखनहुँ दू सए बरख पाछा अछि। लोककेँ अखनहुँ चन्द्रमामे एकटा बुढ़िआ चर्खा कटैत देखाइत छैक। लोक अखनहुँ ग्रहण लगिते स्नान करए चलि जाइत अछि। किएक तँ ओकरा छुति भए जाइत छैक। लोकक संस्कार-संस्कृति सेहो आधुनिक ओ पुरातनक द्वंदक बीच चलि रहल अछि।

पुरना पीढ़ी आ आधुनिक लोकमे अखनहुँ बड़ अन्तर छैक। तेँ एकटा स्वत: सर्वत्र विद्यमान तनाव कोनो क्षण झगड़ाक रूप लए लैत अछि। एही कारणसँ गाम-घरमे पंचैतीक जबरदस्त गुंज़ाइश छैक।

मुरली पाँच भॉइ छलाह। घरक हिसाब-किताब श्याम रखैत छलखिन। मैट्रिक धरि पढ़ल छलखिन। बेस चलाक-चुस्त। लगानीक वसूल करबामे पारंगत। हुनकासँ छोट तीन भाइ- मोहन, रूदल आ लखन। लखन कमे बएसमे दिवंगत भए गेलाह। हुनकर एक मात्र पुत्र जीवनकेँ पित्ती सभ पहिनहि फराक कए देलकनि। पाँच बीघा जमीन हिस्सामे पड़लनि। लगानी-भिरानी जे किछु छलनि, सभटा श्याम बैमानी कए लेलखिन। शेष चारू भाइमे शुरूमे तँ खूब भेल छलनि मुदा किछु दिनक बाद रूदलक स्वर्गवास भए गेलनि। हुनका मात्र तीनटा कन्या छलनि। तीनूक बिआह पित्ती सभ केलखिन। बिआह करएबाक क्रममे सभटा जमीन तीनू भाइ अपना-अपना नामे करा लेलनि। मसोमातकेँ किछु नहि रहि

गेल छलैक। गामक किछु फनैत सभ ई गप्प मसोमातक कानमे दए देलकनि। मसोमात तँ ओहि दिनसँ अगिआ-बेताल छथि। एक्को दिन एहन नहि भेल जे हंगामा नहि भेल।

बुध दिन रहैक। गाममे हाट लगैत छलैक। गाम-गामक लोक हाटपर जमा छल। सरपंच साहेब उर्फ पलटू बाबू चिकरि-चिकरि कए सैकड़ो लोककेँ जमा कए लेलनि। सभ गोटे तय कएल जे मसोमातक संगे बड़ भारी अन्याय भेलैक अछि। परिणामत: दोसर दिन तीन बजे सरपंच साहेबक दलानपर पंचैती करबाक निर्णय भेल।

दोसर दिन दुपहरियेसँ सौंसे गामक लोक सह-सह करए लागल। सरपंचक ओहिठाम बैसारी रहैक। बेर खसैत-खसैत सौंसे दरबाजा लोकसँ भरि गेल। लग-पासक गामक प्रमुख-प्रमुख लोकसभ सेहो बजाओल गेल छलाह। मुखियाजी एखन धरि नहि आएल छलाह तेँ ओहि टोलपर आदमी पठाओल गेल। चारि बजैत-बजैत लोकक करमान लागि गेल। सरपंच साहेब अपन स्वागत भाषण कही या जे कही, प्रारंभ केलनि। मसोमात सेहो कोनटा लागल ठाढ़ि छलीह। चारू भाइकेँ कोनो फज्झति बाँकी नहि रहल। गाम-गामक पंच सभ सेहो 'छिया-छिया' कहए लगलखिन। मुदा श्याम बेस चलाक लोक छलाह। ओ मुखियाकेँ रातिएमे पाँच साए टाका दए अपना गुटमे कए लेने छलखिन। मुखियाजी सरपंचपर कड़कि उठलाह-

"ई अन्याय नहि चलत। आखिर तीनटा जे कन्यादान पित्ती सभ केलखिन ताहिमे खर्चा तँ अवश्ये भेल हेतैक। फेर मसोमात तँ असगर छथि। जमीन लए कए करतीह की? बारह मोन खोरिस

हिनका अवश्य भेटक चाही। बाजू यौ श्याम बाबू, अपने एहिपर तैयार छी?”

श्याम बाबू स्वीकृतिमे अपन मुड़ी हिला देलखिन।

ई बात सरपंचकेँ एकदम नहि रूचलैक। ओ बमकए लागल। संगे जे ओकर चारि-पाँचटा लठैत सभ छलैक सेहो सभ बमकए लागल। जबाबमे चारू भाइ सेहो भोकरए लागल। सरपंचक दरबाजापर बेस हंगामा बजड़ि गेल। अन्ततोगत्वा, ई निर्णय भेल जे दुनू गोटे एकादशी दिन पाँच प्रमुख-प्रमुख व्यक्तिक समक्ष हरिवंशक पोथी उठा कए सप्पत खाथि आ ओहीसँ बात फरिचा जाएत।

प्रात:काल सरपंच साहेबक ओहिठाम गाएक गोबरसँ ठाँव कएल गेल। ओहिपर हरिवंशक पोथी राखल गेल। पाँचो पंच बैसल रहथि। श्याम मोने-मोन खुस छलाह। पता नहि, कतेक बेर ओ एहिना हरिवंशक पोथी उठाए लोकक घर-घड़ारी घोंटि गेल रहथि। हनहनाइत, फनफनाइत अएला आ हरिवंशक पोथी उठा लेलाह। पंच सभ तकैत रहि गेलाह। मसोमात ओहीठाम अचेत खसि पड़लीह। मसोमातकेँ बारह मोन खोरिसक अधिकार मात्रक घोषणा पंच समुदाय कए देलक। पंचैती समाप्त भए गेल।

बुधन गामक मानल लठैत छलाह। परमा बाबू बी.डी.ओ. साहेबसँ एकटा चापा कलक व्यवस्था करओने छलाह। कलक तीन-चौथाइ खर्चा सरकारी मददतिसँ भरल जएतैक। बुधन ओ परमा बाबूक घर सटले छल। कल कतए गाड़ल जाए ताहि हेतु जबरदस्त झगड़ा बजरि गेलैक। तय भेलैक जे हीरा बाबूकेँ पंच मानि लेल जाए। ओ जे फैसला कए देथिन से मानि लेल जाए।

हीरा बाबू प्रतिष्ठित, पढ़ल-लिखल आ ओजस्वी लोक छलाह। सम्पत्तिक नीक संग्रह कएने छलाह। प्रात: काल ओ घटना स्थलक निरीक्षण कएलाह। बुधन लठैत छल। करवनो ककरो गरिआ सकैत छल। बेर-कुबेर ओ लाठी लए कए ठाढ़ो भए सकैत छल। परमा बाबू पढ़ल-लिखल सभ्य ओ शान्त स्वभावक लोक छलाह। परिणामत: हीरा बाबू फैसला कए देलनि जे कल बुधनक घर लगक खाली स्थानपर गाड़ल जाए। बुधन प्रसन्न भए गेलाह। परमा बाबू चुप, समाजक लोक चुप।

सोमन बाबू कामरेड छथि। गाममे कतहु केओ कोनो गड़बड़ी करैत तँ ओ अवश्य ओहिठाम पहुँचि जाइत छलाह। गरीब लोक हुनका अपन नेता मानैत छल। अमत टोलीक एकटा महिला अपन घरबलाकेँ छोड़ि कए निपत्ता भए गेल छलि। चारि-पाँच दिनुका बाद सौंसे गाममे जबरदस्त हंगामा भए गेल। शोभा बाबू ओहि मौगीक संग निपत्ता। मुदा एहि बेर कोनो पंचैती नहि भेलैक। जे जतहि सुनलक ओ ओतहि गुम्मी लादि देलक। समरथकेँ नहि दोष गोसाई सद्य: चरितार्थ भए गेल।

जीबछक अबाजमे बेस टीस छनि। लोक कहैत अछि जे हिनकर पिता बड़ सुखी-सम्पन्न छलखिन। मुदा देखिते-देखिते ओहने दरिद्र भए गेलखिन। ओहि घटनाक पाछू सेहो एकटा पंचैतीक हाथ छलैक। जीबछक पिताक श्राद्ध छलनि। गामक प्रमुख-प्रमुख लोकक बैसार भेलैक। जीबछ बाबू सन प्रसिद्ध ओ धनीक लोकक श्राद्धमे कम-सँ-कम जबार तँ खेबेक चाहैक छलैक। सएह भेलैक। चारि दिन धरि भोज होइते रहलैक। जीबछ एहि काजमे बीस हजार टाका घरसँ निकाललाह। दस हजार टाका कर्ज

लेबए पड़लनि। अमरू दियादे छलखिन। धर दए बिना कोनो हिचकसँ हुनका पैसा दए देलक। काजक बाद कहलक-

"कोनो बात ने। जखन पैसा हो तखन दए देब।"

दू साल बिति गेल। जीबछक हालत दिन-दिन खराप होइत गेल। तीन सालक बाद अमरू एकाएक चढ़ाइ कए देलक। ओकरा हिसाबे सूद सहित ३५००० टाका कर्ज भए गेल छलैक। अमरू अपन लठैत सभक सहायतासँ ओकर सभटा जमीन जोति लेलखिन। गाममे बेस बबंडर भेल। पंचैती बैसल। सौंसे गामक नीक लोकसभ जमा भेलाह। अमरूक विजय भेल। सभ पंच अमरूक पक्षमे हाथ उठा देलखिन। अमरू सभ जमीन जोति लेलाह। सएह भेल पंचैती। जीबछ ओही पंचैतीक परातसँ फक्कर भए गेलाह।

कहबी छैक जे पति-पत्नीक पंचैती नहि करी। कारण कहि नहि, ओ कखन झगड़ा करत आ कखन एक भए जाएत। मुदा आइ-काल्हि एहनो कलाकार सभहक कमी नहि अछि जे दुनू व्यक्तिमे झगड़ा लगा कए मटरगस्ती करैत रहैत छथि। बेरपर पंचैती सेहो कए दैत छथि। बतहु मिसर एहने व्यक्ति थिकाह। पुवारि गामवाली बेस हराहि छलीह। दुनू व्यक्तिमे खटपट होइते रहैत छनि। ओहि दिन पुरवारि गामवाली कतहु गेल छलीह, घुरैत-घुरैत अबेर भए गेल रहनि। घुमैत-फिरैत बतहु बाबू पहुँचलाह। पुरवारि गामवालीक घरबलाकेँ लोक खलीफा कहैत छलैक। खलीफा दरबाजापर गरमाएल छलाह। बतहु मिसर पुछलखिन-

"की बात छैक? आइ बड़ गरमाएल लागि रहल छी?"

एतबा ओ पुछलखिन की खलीफा अपन घरवालीकेँ एक

हजार फज्झति करए लगलखिन। ताहि पर बतहु मिसर टीप देलाह-

"हँ बेस कहैत छी भाइ। आइ-काल्हिक महिला सभ तँ एहने होइत छैक। हुनका तँ हम जट्टाक घरमे गप्प हकैत देखलियनि अछि।"

एतबा गप्प बाजि ओ ओतएसँ हटि गेलाह।

थोड़ेक कालक बाद पुरवारि गामवाली लौटलीह। दुनू व्यक्तिमे महाभारत जे भेल से देखएबला छलैक। चारूकातसँ लोक सभ दौड़ल आएल। पुरवारि गामवाली बजैत रहि गेलीह। अन्ततोगत्वा, खलीफेकेँ लोक उठा कए दोसरठाम लए गेल। दुनू व्यक्ति ओहि दिनसँ फराक-फराक रहए लगलाह। घरमे खान-पान बन्द। बतहु मिसर फेर उपस्थित भेलाह आ खलीफाकेँ कहलखिन-

"भाइ! एहि तरहेँ कतेक दिन चलत? आपसमे बैसार कए लिअ आ मेल-जोलसँ समय बिताउ।"

तय भेल जे काल्हि आठ बजे बैसार होएत। दोसर दिन बैसार भेल। दुनू व्यक्ति अपन-अपन पक्ष कहए लगलखिन। बहुत रास गप्प-सप्प भेलाक बाद बतहु मिसर ई तय कए देलखिन जे आइ दिनसँ खलीफा अपन घरवालीक गंजन नहि करताह।

ताहि पर पुरवारि गामवाली कनखी मारलखिन। खलीफा मुँह तकैत रहि गेलाह। बतहु मिसर तमाकुल चुनबैत-चुनबैत थपरी मारलाह आ ओहिठामसँ घसकि गेलाह।

गाम-घरमे पंचैती एहिना होइत अछि। जकर लाठी तकर महिष।



मुखिआक चुनाओ

साँझ कए गाममे समाचार-पत्र आर्यावर्त अबैत छलैक। गाम भरिक लोक चौकपर एकट्ठा भए जाइत छलैक। चाहक दू-तीन दोकानपर लोक भन्न-भन्न करैत रहैत छलैक । अखबार अबैक कि गामक पढ़ुआ सभ ओहिपर टुटि पड़ए। ओहि दिन अखबारमे सरकारक एकटा सूचना बहराएल रहैक जे राज्य भरिमे मुखियाक चुनाओ एक मासक भीतर सम्पन्न भए जाएत। औ बाबू! ई समाचार कि आएल जे सौंसे गाममे जेना करेन्ट लागि गेल। ओहि गाममे धने-जने परिपूर्ण एकसँ एक सरगना लोक छलाह। मोहन बाबू, पलटन बाबू, हीरा बाबू, झगड़ू बाबू आदि-आदि। मुखिया के बनए, सरपंच के बनए?विभिन्न गुटमे इएह घोल-फचक्का शुरू भए गेल। सौंसे गाम खण्ड- खण्डमे बँटल छलैक।

पूबाइ टोलक सरगना मोहन बाबू छलाह। पलटन बाबू ओ हीरा बाबू दक्षिणवाइ टोलक प्रभावी लोक छलाह आ झगड़ू पछबाइ टोलक मानल लठैतमे सँ एक छलाह। उत्तरवाइ टोलक केओ नेता नहि छलैक, कारण ओतए बेसी जन-बोनिहार रहैत छलैक आ अपनेमे ताड़ी पिबि कए कटा-कटी करैत रहैत छलैक। ओकरा सभहक भगबान पेटे छलैक। मालिक सभहक ओहिठाम जाए, जखन जे काज भेटैक से करए आ बोनि लए कए चलि आबए। एमहर जहिआसँ चुनाओ सभ होबए लगलैक अछि ओहो सभ किछु सक्रिय अछि। कहिओ काल बाहरसँ नेता सभ अबैत छैक तँ ओहू टोलमे चहल-पहल रहैत छैक।

चारू टोलमे झगड़ू बाबूकेँ बेस चलती छैक। लाठीक बल

छैक। पाँचटा बेटा छनि। सभकेँ पहलमानीमे पारंगत कराओल गेल। बेस लठैत सभ छलैक पाँचू बेटा। ओकरा सभहक डरे इलाका शान्त भए जाइत छलैक। तेँ केहनो पढ़ल-लिखल लोककेँ झगड़ू बाबूकेँ नमस्कार करए पड़ैत छलैक।

चुनाओक समाचार पबिते झगड़ू बाबू बमकए लगलाह। प्रात भेने हुनका टोलक सभ लठैत अपनामे बैसार केलक। मुखिया आ सरपंचक नामक फैसला तँ नहि भए सकलैक मुदा एतबा तय भए गेल जे वर्तमान मुखिया आ सरपंचकेँ अबश्य हराबक अछि।

झगड़ू बाबू भोरे सात बजे नहा-सोना कए चौकपर पहुँचलाह आ बमकए लगलाह-

"सभ चोर है, मुखिय चोर है। सरपंच चोर है, सभ को ठीक करेगा।" आदि आदि...।

चारूकात भन्न-भन्न करैत लोकसभ जमा होबए लागल।

"की बात छैक झगड़ू बाबू?" -केओ ओहिमे सँ पुछलखिन।

"की बात छैक से तोरा सभकेँ कोना बुझेतह? एहन बैमान सरपंच आ मुखिया आइ धरि एहि इलाकामे नहि भेल। कहिओ गामबलाकेँ कोटाक चीनी ठीकसँ भेटलैक? एहि बेरक चुनाओमे एहि बैमान सभकेँ हरेबाक अछि..!"

लोक अबैक, लोक जाइक मुदा झगड़ूबाबूक भाषण ओहिना अनबरत चलिते रहनि। रेलगाड़ीक पहिया जकाँ घुरा-फिरा कए ओतहि पहुँचि जाइत छलाह:

"इस बैमान सभको हराना है।"

झगड़ू बाबूक भाषण चलि रहल छलनि कि ताबतेमे सरपंच

साहेब घुमैत-फिरैत आबि गेलाह। चारूकातक लोक हुनका दिस तकैत छलैक। मुदा झगड़ूक भाषण यथावते चलि रहल छलैक। सरपंच साहेब एक-दू बेर झगड़ूकें बुझाबक प्रयास केलथि। ताबतेमे सरपंचक भातिज मुनमा पहुँच गेल। हाथमे बेस मोटगर एकटा लाठी छलैक। ओ ने आब देखलक ने ताब आ धराम-धराम दू लाठी झगड़ूक ऊपर पटकि देलक ।

झगड़ू बाबू असगर पड़ि गेलाह। गरियबैत गाम दिस दौड़लाह आ पाँचो बेटाकें हॉकि देलखिन। सौंसे चौकपर गरमा-गरमी भए गेल छलैक। झगड़ू बाबू मारि बिसरि फेरसँ गरजए लगलाह-

"कहाँ भागा। आए सामने तो जानें।"

झगड़ू बाबूक पाँचो बेटा सेहो फराके चिकरैत एहि तरहें चुनाओ अभियान शुरू भेल।

पर्चा भरबाक समय करीब आबि रहल छलैक। घरे-घर गुटपैंची शुरू भए गेल। वर्तमान मुखिया आ सरपंच बेस टाकाबला लोक छलाह। कहुना चुनाओ जीतबाक हेतु कृतसंकल्प छलाह। मुदा नवतुरिआ सभ हुनकर बिरोधी छल। गामक आओर लोकसभ सेहो हुनका सभसँ सन्तुष्ट नहि छल। अन्ततोगत्वा,पर्चा भरबाक अन्तिम दिन धरि मुखिया आ सरपंचक हेतु पाँच-पाँच गोट उम्मीदवार पर्चा भरलनि। ओहिमेसँ मुखियाक हेतु तीन आ सरपंचक हेतु दू गोटाक पर्चा सही पाओल गेल। नवतुरिआक उम्मीदवार पलटू बाबू आ मोहन बाबू भेलाह। वर्तमान मुखिया ओ सरपंच सेहो एक बेर फेर मैदानमे अड़ल छलाह। ओकर अलाबा उत्तरवाइ टोलसँ गरीब लोकसभक उम्मीदवार बलचनमा सेहो अखाड़ामे उतरल छल।

मुखियाक चुनाओ गाममे तूफान अनलक से कोनो नब बात नहि छल। सभ बेर एहिना होइत छलैक। जहिआ कहिओ चुनाओ होइक तँ लोकसभ एहिना घोल-फचक्का करए लागए। मुदा एहि बेरक चुनाओमे विशेषता ई छलैक जे उत्तरवाइ टोलक गरीब लोकसभ सेहो फॉर बन्हने छलैक। बाहर-बाहरसँ नेता सभ अबैत छलैक । नित्य ककरोने ककरो ओहिठाम बैसार अबश्य होइतैक। मतक हिसाबे आधासँ अधिक मत गरीबक छलैक आ जँ ओ सभ एक भए जाए तँ बलचनमाकेँ मुखिया बनबासँ केओ नहि रोकि सकैत छल। एहि बातक प्रतिक्रिया आन तीनू टोलमे सेहो भेलैक। मुदा कोनो हालतमे वर्तमान मुखिया चुनाओ दंगलसँ हटए नहि चाहैत छलाह आ नवतुरिआ सभ हुनका अपन नेता मानबाक लेल तैयार नहि छल। एहि तरहेँ संपन्न वर्गक मत दूठाम बँटब स्वाभाविक भए गेल छलैक। मुदा बलचनमाक प्रचार जोर पकड़ने छलैक।

झगड़ू बाबूक हेतु स्वर्णिम अवसर छल। खने बलचनमाक संगे घुमितथि तँ खने पलटन बाबूक ओहिठाम आ खने वर्तमान मुखियाक ओतए। पर्चा भरलाक बाद चुनाओ दिन धरि झगड़ू बाबूक हेतु अगहन रहैत छलनि। हुनका ईहो कोनो ठेकान नहि छलनि जे करवन कोन दलक संग भए जेताह।

बड़का लोकसभहक मत दू ठाम बटबासँ रोकबाक हेतु साँझमे पूबाइ टोलमे बैसार भेल। केओ किछु बजितथि ताहिसँ पहिने झगड़ू बाबू बमकए लगलाह। वर्तमान मुखियाकेँ एक हजार फज्झति कएल।

अन्ततोगत्वा, ई निर्णय लेल गेल जे नवतुरिआक उम्मीदवार पलटन बाबूक समर्थन करताह। सरपंचक पदक हेतु मात्र दूटा

उम्मीदवार छलाह- मोहन बाबू आ वर्तमान सरपंच नवत राय। नवत राय कमे पढ़ल-लिखल मुदा बेस फनैत लोक छलाह। कतहु किछु होइतैक कि भदवरिया बेंग जकाँ टर्र-टर्र बाजए लगितथि। ओ घर-घर झगड़ा लगेबामे निपुण छलाह। जँ किछु खर्च-बर्च कए दियैक तँ पंचयतीमे फैसला अहाँक पक्षमे सुनिश्चित कएल जा सकैत छल। जँ नीक-निकुत भेटि जानि तँ कतहुँ खा सकैत छलाह अन्यथा बेस नेम-टेमसँ रहैत छलाह।

एहि सभ कारणसँ गामक लोक ओकरासँ खुस नहि छल । मुदा केओ ओकरा अप्रसन्ननहि करए चाहैत छलैक कारण ओ बेस फचाँरि छल आ ककरहुँ कतहु बइज्जत कए सकैत छल।

झगड़ू बाबू नवतुरिओपर चिकरए लगलाह। नवतुरिआ सभ सरपंचक हेतु मोहन बाबूकेँ समर्थन देबाक आश्वासन देलखिन। प्रात भेने नवतुरिआ सभ इन्नकिलाब, जिन्दाबादक नारा दैत गाम भरिमे पलटन-मोहन जिन्दाबादक स्वर गुंजित कए देलक।

एमहर गरीब लोकसभ एक भए गेल छल। सभ करे कमान छल। एहि तरहेँ सपष्ट लगइत छल जे मुखिया पदक हेतु बलचनमा आ सरपंचक हेतु मोहन बाबू चुनाओ जीतताह। वर्तमान मुखिया ओ सरपंचजी बेचेन छलाह। रातिक बारह बजे झगड़ू बाबूक घर पहुँचलाह। दुनू गोटे झगड़ू बाबूक पैर पकड़लखिन।

"झगड़ू बाबू, अपने हमरा समर्थन करू।"

"किएक नहि। हमर समर्थन तँ सभदिन अहींक संगे रहल अछि।"

"से तँ ठीके मुदा एहि बेर हालत बेसी गड़बड़ छैक।"

फेर कहि नहि, दुनू गोटे की फुस-फुसेलाह। २००० टाकापर

सौदा भए गेल। प्राते भेने झगड़ू बाबू चौकपर फेर गरजए लगलाह-

"मुखियाजीक जे विरोध करत से हमर दुश्मन। एहन मुखिया सरपंच तँ ने कहिओ भेल छल आ ने होएत।"

आदि आदि। सुननाहर सभ गुम्म।

काल्हि चुनाओ होएत। राति भरि गाममे धोल-फचक्का होइत रहल। सभठाम चुनाओक चर्च होबए लागल। पुस्तकालयपर चुनाओ दल आबि गेल छल। चारिटा पुलिस लाठी लेने ठाढ़ रहैत छल। पहिलुका चुनाओमे उत्तरवाइ टोलपर चुनाओक मतदान केन्द्र नहि होइत छलैक। मुदा एहि बेर गरीब लोकसभ बी.डी.ओ. साहेबक ओहिठाम धरना धए देलक। एहि बेर उत्तरवाइ टोलमे सेहो मतदान केन्द्र बनल छलैक। झगड़ू बाबू आ हुनक बेटा सभ बेस चुनाओ मतदान केन्द्र सभपर अबैत-जाइत रहल छलाह। पुबारिटोलक मतदान केन्द्र पर नवतुरिआ सभ कब्जा कए लेने छलैक। वोगस मतदान भए रहल छलैक। ई खबरि झगड़ू बाबूकेँ जहाँ भेटलनि कि ओ अपन लठैत बेटा सभकेँ संग कए ओतए पहुँचला आ पलटन आओर मोहन बाबूकेँ धराम-धराम दू-दू लाठी लगाओल। पीठासीन पदाधिकारी अकबका गेलाह। चारू दिस हरविर्रो मचि गेल।

ओहि बीचमे झगड़ूक दूटा बेटा आगा बढ़ल आ सभटा मतपत्र छिनि जबरदस्ती मोहर मारि खसा कए खसकि गेल। मुदा एकर जबरदस्त प्रतिक्रिया उत्तरवाइ टोलक मतदान केन्द्र पर भेल। एक-एकटा मतपत्रपर बलचनमा अपने मोहर मारि कए खसओलक। कोनो दोसर उम्मीदवारक पोलिंग एजेन्ट ओहिठाम नहि टिकि सकल। बलचनमाक जितब निश्चित प्राय छलैक ओही

मतदान केन्द्रक, कारण आधासँ अधिक मत ओही टोलक छलैक। सरपंचक सभटा मत नवत रायकेँ भेटलैक। आन मतदान केन्द्र सभपर सामान्य रूपसँ मतदान भेल आ कने-मने मत सभकेँ भेटलैक।

साँझमे मत गणना प्रारंभ भेल। बारह बजे रातिमे जा कए चुनाओक परिणाम बहार भेलैक। बलचनमा ओ नवत चुनाओ जीति गेलाह। गरीब लोकसभ विजयक खुसीमे मत्त छल। सौंसे गाममे रहि-रहि कए नारा बुलन्द होबए लागल-

“जीत गया जी जीत गया, बलचन जीत गया।” पुबारि टोलसँ लए कए पछबारि टोलक सभ लोक सन्न छल।



फसाद

भोरसँ साँझ धरि ओ टीसनपर प्रतीक्षा करैत रहल। जतेक बेर गाड़ी अबैक ओ सचेष्ट भए जाइत छल। आबए बला लोकसभ दिस टकटकी लगौने रहैत छल। मुदा सभ बेर ओकरा निराशे होबए पड़ैक। साँझमे ओ थाकल-झमारल गाम लौटल तँ देखलक जे पलटनमाक घरवाली ओ पलटनाक माएमे मचल छलैक। लगैक जेना गंभीर विवाद भए गेलैक अछि। आँगन आएल। मुदा दुनूमे सँ केओ सुनए लेल तैयार नहि छलैक। मामला बढ़ैत देखि ओ गरजल। मुदा बेकार। दुनू आपसमे एक-दोसरक गला गाटि देबाक निश्चय कए चुकल छल। रमुआकेँ नहि रहि भेलैक। ओ उठओलक लाठी आ पलटनमा माएकेँ लगलैक सटाक, सटाक। पलटनमाक माए गरियबैत भागलि।

मामला शान्त भेलैक। आइ तीन साँझसँ घरमे केओ नहि खेने छलैक। पलटनमाक अबाइ छलैक आ तेँ ओ टीसन गेल छल। एमहर पलटनमा घरवाली मालिकक आँगनमे काज कए आएल छलैक। अबैत काल मालकिनी किछु देने छलखिन तकरे बटवारा करैत-करैत सासु-पुतोहुमे विवाद पसरि गेल छलैक।

साल भरिसँ पलटनमा बाहर छल। जहिआसँ गाम छोड़लक तहिआसँ आइ धरि कोनो खोज-खबरि नहि आएल छलैक। ओहिठामसँ सभ मास केओ ने केओ गाम अबिते रहैत छलैक। ओकरे सभसँ पलटनमाक समाचार गाममे पहुँचैत रहैक।

पूरबारि टोलक कए गोटा पछिला मास आएल छलैक आ ओकरा दिया पलटनमा समाद देने रहैक जे आगा मास पुर्णिमा दिन

गाम आएत। मुदा नहि अएलैक। एहि बातक अंदेसा रहैक रमुआकेँ। टीसनसँ घुरैतकाल ओ बड़ अछता-पछता रहल छल। एही गुन-धुनमे गाम आएले छल रमुआ कि घरक गरम वातावरणमे आओर गरमा गेल। पलटनमा माएकेँ तामसपर नीक मारि पड़ि गेल छलैक आ ओ मारि खा कए पता नहि कतए निपत्ता भए गेलि।

रमुआक कतेको पुस्त ओही गाममे गुजर केने छल। मुदा पलटनमा गामक सीमान नांघि देलकै। पलटनमाक एहि काजसँ मालिक सभ बड़ अप्रसन्न भेल रहैक। मुदा ओ ककरो नहि सुनलक। माए जाए काल बड़ कनैत रहैक। मुदा की कए सकैत छलैक? पलटनमा कलकत्ता पहुँचते देरी काज शुरू कए देलक। आमदनी नीक होइक। मुदा रखबाक लूरि नहि रहैक। संगीसभ ओकरासँ सभटा पैसा खर्च करा लैक।

एक दिन ओहि मीलमे आन्दोलन भेलैक। मजदूर सभ मालिकक अत्याचारक खिलाफ अबाज उठओलक। ओहि आबाजक पलटनमाक मोनपर बेस प्रतिकृया भेल रहैक। पलटनमा लोककेँ नारा लगबैत देखि चिकरि उठल-

“नहीं चलेगी, नहीं चलेगी, यह बैमानी नहीं चलेगी।”

पूरा मीलमे तालाबन्दी भए गेलैक। मजदूर सभ मील मालिकक घरक घेरा कए देलक। मीलक मालिक लाख प्रयास केलक मुदा पलटनमा टससँ मस नहि भेलैक। मीलक गेटपर एक सएसँ अधिक मजदूरक संग अनशनपर बैस गेलैक। आन्दोलन तीव्रतर होइत गेलैक। अन्ततोगत्वा, पलटनमा गिरफ्तार भए गेल। ओकर संगी सभ सेहो जहल गेल। नारा लगैत रहलैक-

“नहीं चलेगी, नहीं चलेगी... ।”

ई सभ घटना अनायास भए गेल छलैक। पलटनमा अपन रोजी-रोटीक कमाइमे लागल छल। मुदा ओकर सोनित कहि नहि किएक एकाएक खौल उठलैक।

पलटनमा जहल गेल मुदा जेना एहि घटनासँ ओकर संस्कारमे अप्रत्याशित परिवर्तन आबि गेल छलैक। गामक वातावरणमे रहैत-रहैत ओ मौन भए सभ प्रकारक प्रतारणा ओ अन्याय सहैत रहल। मुदा एहि घटनासँ जेना ओकर अन्तरात्माक ज्वालामुखी फुटि पड़ल छलैक। ज्वालामुखी जे संघर्षक आगिसँ अन्यायकेँ जरा देबए चाहैत छल।

जाहि दिन ओकरा जयबाक प्रोग्राम छलैक ओहि दिन ओ पकड़ल गेल। जहलमे एकान्तमे ओकरा कहि नहि की-की फुराइत रहलैक। रमुआक टुटल खोपरी आ चारूकात गामक मालिक सभहक बड़का-बड़का दलान। पण्डितजीक बड़का दलान। दनानपर बैसार होइक। साँझक-साँझ गामक सभ प्रतिष्ठित व्यक्ति सभ अबैत छलाह आ अपन-अपन विचार व्यक्त करैत छलाह। लहना-तकादा सेहो ओतहि होइत छलैक।

बुधदिन छलैक गाममे हाट लागल छलैक। पण्डितजीक ओहिठाम बैसार भेल। पूरा गामक लोक जमा भेल छल। रमुआ ओतए बुधन बाबूक किछु कर्ज छलनि। ओही कर्जकेँ सधएबाक हेतु बैसार छलैक। पँच लोकनि ई फैसला केलनि जे रमुआ अपन घड़ारी बुधन बाबूक नामे कए देथि आ पलटनमा हुनका ओहिठाम चरबाही करए। कारण जे घड़ारीक मुल्यसँ मात्र मूर सधैत छलैक आ सूदक तरीमे ओ चरवाही करत। एहि निर्णयक संग ओहि दिन बैसार खतम भए गेल।

रमुआ आँगन पहुँचले हेताह कि पलटनमाक माए देहरिएपर भेटलनि आ समाचार पुछि गरजए लागलि-

“नहि जानि ई सभ की-की करत? गे दाइ !गे दाइ !हमर घड़ारी एकरा सभ नहि देखल जाइत छैक।”

मुदा किछु ने चललैक। दोसर दिन रमुआ बेनीपट्टी जा कए अपन घड़ारी बुधन बाबूक नामे रजिष्ट्री कए देलखिन। रजिष्ट्री घरसँ निकलैत हुनका होनि जेना आँखिक डिम्हा केओ बहार कए लेने हो। सगतरि अन्हारे अन्हार।

साँझ पड़ैत-पड़ैत रमुआ गाम पहुँचल। मुदा एतबेसँ बुधन बाबूक मोन नहि भरलनि। पलटनमाकेँ खबरि देबए लगलखिन जे तोरा हमरा ओतए काज करए पड़तौक। पलटनमाक मोनकेँ ई सभ असहज लगलैक ओ दोसर दिन दुपहर रातिमे चुप्पे-चाप गामसँ पड़ाएल। पलटनमा जहलमे पड़ल-पड़ल ई सभ सोचैत रहल मोन कहैक-

“छोड़ पलटनमा ई रस्ता। कमो खो। की राखल छैक फसादमे। आखिर हमरा लोकनिक कैक पुस्त तँ एहिना बिति गेल। सभ अपन चैनसँ जिनगी कटलक। फेर ई आफद किएक।”

दोसर मोन कहैक-

“नहि, नहि लड़ पलटनमा लड़। संघर्ष केनहिसँ परिवर्तन हेतैक। आखिर अपने लेल लोक नहि जीबैत अछि। भविष्यक हेतु भावी पीढ़ीक हेतु आधारशिला तँ वर्तमाने पीढ़ी तैयार करैत अछि किने।”

इएह सभ सोचैत रहए कि जेलर साहेब आबि गेलखिन आ ओकर चिंतन क्रम टुटि गेलैक...।

जेलमे सात दिन बिता चुकल छल पलटनमा। मीलक मालिक मीलमे तालाबंदी कए देलक आ संगे मीलमे काज केनिहार नवका कर्मचारी सभकेँ छँटनी सेहो कए देलक। ई सभ समाचार पलटनमाकेँ जेलेमे भेटैत रहैत छलैक।

ओहि दिन रातुक बारह बाजि रहल छलैक। जेलर पहरेदार फोंफ काटि रहल छल। पलटनमा आ ओकर दूटा संगी जेलक चाहरदीवारी फानि गेल। जेलमे खतराक घण्टी बाजए लागल। मुदा पलटनमा ओ ओकर संगी नदारद। कतहुँ ओकर थाह पता नहि चललैक। पलटनमा दौड़ैत गेल, दौड़ैत गेल आ बहुत दूर एकटा अज्ञात जगहमे जा कए अचेत खसि पड़ल। ओकर दुनू संगी ओकर पछोड़ देने ओतए पहुँचलैक।

दुपहर छलैक। बारह घन्टा लगातार दौड़ैत रहलाक बाद तीनू गोटे असोथकित भए गेल छल। पलटनमा अचेत भए खसि पड़ल छल आ ओकर दुनूटा संगी गमछासँ ओकरा हवा करैत छलैक।

संघर्ष, संघर्ष, संघर्ष। पलटनमा अपढ़ छल। गरीब छल। मुदा हालतसँ लड़ए चाहैत छल। ओकर सभसँ बड़का अपराध इएह छलैक। गाममे ओकरा सन-सन कतेको मजदूर ओहि हालातसँ गुजरि कए नियतिसँ सामंजस्य कए चुकल छल। मुदा ओ नहि सहि सकल। तँ गाम छोड़ए पड़लैक। सहरमे पुनश्च ओकरा असह भए गेलैक। यातना, शोषण ओ प्रतारणाक खिलाफ नारा लगा देलकैक। मुदा आब कतए जाएत! गाम छुटलैक, तँ सहर आएल। सहरसँ पड़ा कए जंगल आएल। आब कतए जाए? की करए? खैर! अखन तँ ई सभ सोचबाक समय नहि छलैक। चेतनतासँ कष्टक अनुभूति होइत छैक। तकरो अखन ओकरामे अभाव भए गेल

छलैक। ओ अचेत पड़ल छल। ओकर दुनू संगी ओकरा गमछासँ हवा करैत रहलैक।

दिन लुक-झुक कए रहल छलैक। पलटनमा सुगबुगेलैक। पलटनमाक संगी सभ खुस भेल। कनी-मनी कछमछ कएलाक बाद पलटनमा फुरफुरा कए उठि गेल जेना किछु भेबे नहि कएल रहैक।

पलटनमा ओहि राति जंगलेमे बितओलक। चारूकात जंगलक भयानक जानवर सभक आबाज अबैत रहल। भोर होबए पड़ छलैक। पलटनमा गंभीर चिन्तनमे लीन छल। की गरीबक हार-काठ पाथरक बनल होइत छैक? नहि, तखन ओकरापर जनमिते समाज एहन कठोर किएक होइत छैक। एक-एक पल जीवनक हेतु संघर्षमे बीत जाइत छैक। की संसारक सौन्दर्यक आनन्द लेबाक ओकरा कोनो अधिकार नहि? जीबाक हेतु प्रयत्न करैत-करैत ओ मृत्यु दिस अग्रसर भए जाइत अछि। इएह छिऐक गरीबक जीवन..?

इएह सभ सोच-विचारमे ओ छल कि कनी दूरपर पुलिसक जीप अबैत ओकरा नजरि अएलैक। एक बेर पुन: पलटनमा अपन संगी सभक संगे भागल। मील मालिक पलटनमाक पकड़बाक हेतु पुलिसकेँ जेब गरम कए देने छलैक आ पुलिस ओकरा पाछू हाथ धो कए पड़ि गेल छलैक। पलटनमा भागिते जा रहल छल। मुदा जंगलकेँ चारूकातसँ घेर लेल गेल छलैक।

पलटनमा ओ ओकर संगी पकड़ल गेल। पकड़लाक बाद ओकर हाथ पाछू कए बान्हि देल गेलैक। थानामे पलटनमाकेँ एकटा घरमे एसगर बन्द कए देल गेलैक। प्रात भेने ओहि घरसँ

पलटनमाक लहास निकललैक। कहि नहि राति भरि ओकरा की-की यातना देल गेलैक। पलटनमा आब एकटा मुर्दा छल। पोस्टमार्टम रिपोर्टक अनुसार ओकर मृत्यु जंगलमे कोनो जहरीला जानवरक कटलासँ भेलैक। प्रात:काल अखबारमे छपि गेलैक-

"भगोरा कैदीक लहास जंगलसँ आनल गेल।"

पलटनमाक पिता ओहि राति सुतल नहि। प्रात: काल ओकरा एकटा तार भेटलैक।

"पलटनमा जंगलमे जानवरक प्रकोपसँ मरि गेल। लहास लए जाउ।"

पलटनमाक पिता सुन्न पड़ि गेल। शून्यतामे ओकर आँखि देखैत रहि गेलैक। पलटनमाक माए एक बेर फेर चिचिआ उठलैक आ तुरन्त शान्त भए गेलैक। एक दिस पलटनमाक माए आ दोसर दिस पलटनमाक पिता निस्तब्ध, चुप, चेतना विहीन पड़ल रहल। गामक लोक कनीकाल तमासा देखलक आ अपन-अपन काजमे लागि गेल। केओ-केओ कहैत रहैक-

"पलटनमा अनेरे फसाद केलक। गाममे एतेक गोटे गुजर करैत अछि, मरि जाइत अछि। गरीबो बहुत अछि मुदा एना उजाहि तँ ओकरे ने छलैक आ तकर फलो तँ ओएह भोगत।"



पुनर्मिलन

ओकरामे प्रतिभाक कतहुँसँ अभाव नहि छलैक। पूरा गाम ओकर यशगान करबाक लेल तत्पर छल। नीक, सुन्दर, सुशील आ मेघावी छल अरूण। माए आओर बापक कोनो स्मृति ओकरा नहि छलैक। ओ जीबनक प्रत्येक डेग लड़ि कए आगा बढ़ल छल। अपमानक अलावा समाजसँ ओकरा किछु प्रतिदान नहि भेटल छलैक मुदा ओ ओकरे, प्रेरणाक आधार बना जीबनमे विजयश्री प्राप्त करबाक हेतु कृतसंकल्पित छल। ओकर जन्मसँ लए कए अखन धरि जतेक घटना घटल छलैक सभ स्वयंमे एकटा वृतान्त छल।

प्रतिभा जेना ओकरा प्रकृतिसँ पुरस्कारक रूपमे भेटल होइक। बच्चेसँ छात्रवृत्ति ओकरा भेटए लगलैक। शिक्षक लोकनि एक पृष्ठ पढ़ावथि तँ ओ दू पृष्ठ स्वयं पढ़ि लैत छल। ओकर प्रतिभासँ सभ केओ दंग रहैत छलाह। यद्यपि ओकरा रस्ता देखओनिहार केओ नहि छलैक, ओ स्वयं जेना सभ किछु जनैत हो, की करबाक चाही, ककरासँ की बाजक चाही आ की करी जाहिसँ आबएबला समय नीक हो से ओकरा खूब नीकसँ बूझल छलैक। हाई इसकुलक परीक्षा प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण केलक आ पूरा राज्यमे प्रथम स्थान ओकरा प्राप्त भेलैक। कालेजक शिक्षा प्राप्त करबाक प्रबल आकंक्षा ओकरा छलैक मुदा आर्थिक परिस्थिति अति दुखद छलैक। गामपर घड़ारीटा बाँचल छलैक। माए, बाप,भाइ, बहिन ककरो कोनो सहारा नहि छलैक।

थाकल, ठेहिआएल, ओ दरभंगा महराजक राजधानीक

महल सभमे घुमि रहल छल। पैरमे पनही नहि, देहपर एकटा नीक कपड़ा नहि, मुदा अपनापर तेज, स्वभावमे सौम्यता ओ व्यवहारक नम्रता अनेरे लोकक ध्यान ओकरापर आकृष्ट कए लैत छल। संयोगसँ चौधरीजी रिक्सासँ उतरलाह। अरूण हुनका नमस्कार केलक। अरूणक प्रतिभाशाली मुखमण्डल देखि ओ चकित भए गेलाह। चौधरीजीक धिया-पुताकेँ पढ़एबाक काज ओकरा भेटि गेलैक। हुनकासँ ज्येष्ठ सन्तान उर्मिला नवम् वर्गमे पढ़ि रहल छलीह। देखएमे सुन्दरि, स्वभावसँ विनम्र ओ प्रतिभामे अद्वितीय। उर्मिलाकेँ देखितहि अरूणकेँ ठकविदरो लागि गेलैक। जेना पूर्व जन्मक संगी रहल हो। उर्मिलाक पढ़ाइमे अद्भुत प्रगति भेलैक। अरूण सेहो प्रसन्नचित्त अपन अपन पढ़ाइ आगू करैत रहल। मुदा एक दिन बड़ विचित्र घटना घटलैक। अरूणक सभटा स्वप्न देखिते-देखितेमे भंग भए गेलैक। उर्मिला इसकुल गेलैक आ ओहिठामसँ लौटितहिँ दर्द-दर्द कए चिचिआए लगलैक। कतेको ओझा-गुनी, डाक्टर-वैद्य अएलैक मुदा ओकरा कोनो सुधार नहि भेलैक। ओकर हालत खरापे होइत गेलैक । ओ भोर होइत-होइत निष्प्राण भए गेलि । दुर्भाग्य ओकरा ओतहुँ संग नहि छोड़लकैक ।

उर्मिलाक आकस्मिक निधनसँ ओकर सपना सभ छिन्न-भिन्न भए गेलैक। अरूणकेँ आब एकहुँ दिन ओतए रहब असम्भव भए रहल छलैक। ओ चुप-चाप ओतएसँ खसकल। पैरे-पैरे दरभंगासँ समस्तीपुरक रस्तामे ओ बहुत दूर आगा आबि गेल छल। पाकड़िक गाछतर छाहरिमे बैसल। कण्ठ जरि रहल छलैक। कतहु पानिक दर्शन नहि छलैक। थाकिओ नीक जेना गेले छल। बैसल कि आँखि लागि गेलैक। सुतले-सुतल ओ स्वर्ग लोकक परिभ्रमण कए रहल छल। उर्मिला अत्यन्त प्रसन्न मुद्रामे ओकरा नमस्कार कए रहल

छलैक।

“अरुण! तूँ बहुत नीक छैं । तोरे ताकि रहल छियौक। जहिआसँ एतए एलहुँ एकहु दिन चैन नहि अछि। दिन-राति बस तोरे ताकि रहल छी। आ जल्दी आ। देख हम कतेक परेसान छी। देख हमर कण्ठ जरि रहल अछि। हमर हृदयक पियास कण्ठ धरि पहुँच रहल अछि। एक गिलास पानि दे। अरूण पानि दे। कनी सुन।”

कहि नहि ओ की-की कहैत रहि गेलैक। अरूण किछु नहि बजलैक आ क्रमशः ओ नेपत्ता भए गेलि। अरूणक निन्न सेहो उचटि गेलैक। मुदा ताधरि किछु नहि रहि गेल छलैक। अरूणक अन्तर्मनमे दिन-राति ई सपना घुमैत रहैत छलैक। उर्मिलाक स्नेहिल व्यवहारक अमिट छाप ओकर हृदयसँ मेटने नहि मेटा रहल छल। सएह सभ गुन-धुनमे ओ आगा बढ़ैत रहल। समस्तीपुर टीसन बहुत करीब आबि गेल छलैक। रेलगाड़ीक चलबाक आबाज कान धरि पहुँचि रहल छलैक। मिथिला एक्सप्रेस लागल छलैक। दौड़ल-दौड़ल ओ टीकस किनलक आ कहुना कए गाड़ीमे पैसल । गाड़ी झिक-झिक करैत छलैक। एक डेग आगा बढ़ैक, दू डेग पाछा बढ़ैक आ ठामहि ठाढ़ भए जाइक। आगू घुसकैत-घुसकैत गाड़ी रूकि गेलैक। ड्राइभर साहेब चाह पीबैत छलैक कि गार्ड साहेब हरी झंडी देखेलकैक आ गाड़ी स्पीड धए लेलकैक। छक-छक-छक...। अरूणकेँ बैसबाक जगह भेटि गेल रहैक। लगेमे एकटा महिला सहयात्री ओकर, दूटा बच्चा, एकटा पुरुख आ कहि ने के-के सभ..? कलकत्ता जाएबला गाड़ीक समय विशेषता ओहि गाड़ीमे छलैक। आधासँ आधिक यात्री नौकरीक खोजमे महानगरीक प्रयाण कए

रहल छलाह। बरौनी जक्सनसँ गाड़ी आगा बढ़ि गेल छलैक। ओकरा फेर आँखि लागि गेल छलैक। फेर आबि गेलैक उर्मिला। एहि बेर आओर व्यथित आओर अधिक करूण स्वरमे निवेदन करैत एक तरफा अपन मोनक बात ओ कहैत गेलैक।

"अरूण! अरूण! हम नहि रहि सकब। एसगर हम नहि रहि सकब अरूण! देख हमर की हाल भेल अछि। देहक आभा झूस पड़ि रहल अछि। अरूण चल, हमरे गाम चल, मुदा...। मुदा...। मुदा...।"

गाड़ी सरपट आगा बढ़ैत गेल। आसनसोल स्टेशन करीब आबि गेल छल। गाड़ी टीसनपर ठहरल आ बहुत रास यात्रीक चढ़ब ओ उतरब सुनि ओकर निन्न उचटि गेलैक। सपना एक बेर फेर सपना भए गेलैक। दोसर दिन साँझमे ओ कलकत्ता सहर पहुँचि गेल। मुदा रस्ताक सपना ओकर माथासँ हटि नहि रहल छलैक। कलकत्ता सहरक नाम बड़ सुनने छल। मुदा कतए जाए? ककरा ताकए? कुनु ठौर ठेकान नहि रहैक। आगा बढ़ल जाए। चारूकात बंगला भाखाक सोर। चलैत-चलैत थाकि गेल। ताबतमे उर्मिलाक आबाज ओकर कानमे पहुँचलैक। अरूण अकचका गेल-

"ई तँ उर्मिला लागि रहल अछि!"

आश्चर्यचकित ओ ऊपर ताकए लागल। किछु देखा नहि रहल छलैक। ताबतमे फेर ओएह आबाज-

"डरा नहि। हमहीं छी- उर्मिला, तोहर चिंर परिचित संगीनी। देख हम कतेक परेसान छी। तोरा पाछू-पाछू बिहारि जकाँ गाड़ीक संगे आबि रहल छी। मुदा घबरो नहि। आखिर हम तोहर विद्यार्थी छियौक ने। ले दस हजार टाका। एहिसँ काज चलि जेतौक ने?

बाज! बजैत किएक नहि छैं?”

अरूण अपन आगामे नोटक पुलिंदा सभ देखि कए गुम रहि गेल। फेर ओएह आबाज-

“उठा। जल्दी उठा। लुच्चा, बदमास आबि रहल छौक। अच्छा तँ हम जा रहल छी।”

अरूण झट दए टाकाकेँ फाँड़मे राखि लेलक। राखिते देरी मनमे उठलै- एतेक रास टाका कतएसँ अनलक उर्मिला? नाना प्रकारक प्रश्न अरूणक मनमे उभरि रहल छलैक। संगे डरो भए रहल छलैक। मुदा पासमे टाका आबि गेलासँ हिम्मत सेहो बढ़ि गेल छलैक। एतेक आसानीसँ ओकर आर्थिक समस्याक समाधान भए जेतैक से ओ सपनोमे नहि सोचने छल। टांग तेज ओ मोन सुस्त भए रहल छलैक। आगामे एकटा होटल नजरि अएलैक। होटलक कोठरी नम्बर पाँचमे ओ डेरा ललेक। बेस थाकि गेल छल। विश्राम करबाक तीव्र आवश्यकता छलैक। कपड़ा-लत्ता खोललक। हाथ-पैर धोलक। घंटी बजबैत नौकर दौड़लैक। मीनू हाथमे दए देलकै आ किछु-किछु पूछए लगलैक। मुदा बंगला बजैक। अरूण किछु नहि बुझलकै। नोकरबा तमसा कए चलि गेल। अरूण स्नान कएलक आ कपड़ा-लत्ता पहीरि कहि नहि कतेक गाढ़ निन्नमे सुति रहल।

उर्मिला फेर हाजिर। अरूणकेँ भेलैक जेना केओ ओकरा उठओने चलि जाइत होइक। ओ चुप-चाप देखि रहल हो। बहुत दूर एकटा झीलक कातमे ओकरा राखि देलकै। बहुत काल धरि ओ सभ कहि नहि की-की गप्प-सप्प करैत रहल। ओ कहैत रहलैक-

“अरूण, तूँ बड़ नीक लोक छैं। तोहर स्मृति एक क्षणक लेल

हमर मोनसँ नहि जाइत अछि। सून, एकटा काज कर। हमरे संगे चल। तोरा सभ किछु भेटतौक।”

पता नहि आओर की-की ओ कहैत रहलैक...।

भोर होबए पड़ छलैक। अरूणक आँखि खुजलैक तँ ओ आश्चर्यचकित भए गेल। ओकर कोठरीमे उर्मिलाक ओएह वस्त्र राखल छलैक जे ओ मरबासँ किछु पूर्व पहिरने छल। वोहि वस्त्रकेँ ओ हटौलक तँ आओर आश्चर्यचकित भए गेल। बहुत रास हीरा-जबाहरात ओतए राखल छलैक। अरूण परेसान छल जे ई सभ की भए रहल छल। देखिते-देखिते अरूण करोड़पति भए गेल छल। सभ सामानकेँ ओ सावधानीसँ रखलक आ चुप-चाप होटलसँ प्रस्थान कए गेल।

मास-दू-मासमे ओ एकटा नीक होटलक मालिक भए गेल। दस-बीस नोकर-चाकर ओकर आगा-पाछा करैत छलैक। ओ प्रतिदिन हजारो टाका कमाइ करैत छल।

छह मासक भीतरेमे ओ गाममे १० बीघा जमीन किनलक आ इलाकाक संमपन्न व्यक्तिक रूपमे प्रतिष्ठित भए गेल। अरूणक समय देखिते-देखिते साफ बदलि गेलैक मुदा ओकरा खूब नीक जकाँ एकर रहस्य बूझल छलैक। ओ जखन कखनो एकान्त होइत कि उर्मिलाक छाया ओकर सामनेमे उपस्थित भए जएतैक। अस्त-व्यस्त,भाव विह्वल, उर्मिलाक आकर्षक मुद्रामे आह्वान देखि अरूण स्तब्ध रहि जाइत छल...।

ओहि दिन अरूणसँ नहि रहल गेलैक आ पूछि बैसलैक-

“उर्मिला, एतेक परेसान किएक छेँ? हम तोरा संगे कोना भए सकैत छी? हम जीवित छी। तों शरीर मुक्त छेँ। हमरा तँ शरीर

चाही।”

उर्मिला ई गप्प बड़ ध्यानसँ सुनलकै। ओ बेर-बेर बजैत रहलैक-

“हमरा तँ शरीर चाही। हमरा तँ शरीर चाही।”

आ ठहाका मारि कए हँसय लगलैक।

अरूण डरा गेल। उर्मिला ओतएसँ निपत्ता भए गेलैक।

अरूणक बिआह एकटा संपन्न परिवारक सुन्दरि कन्यासँ भए गेलनि। कनियाँक द्विरागमन बेस धूम-धामसँ बिआहक ९ दिनक भीतरे संपन्न भेलैक। पूरा भरल-पूरल परिवारमे आबि ओ कनियाँ बेस प्रसन्न छल। रातिमे अरूण जखन ओकरासँ भेँट करए गेलाह तँ ओकर आबाजमे आश्चर्यजनक परिवर्तन देखि दंग रहि गेलाह। ओ कनियाँ हँसल आ हँसिते रहल-

“नहि चिन्हलहुँ हमरा..! हम छी उर्मिला। अहाँ तँ हमरा बिसरि गेलहुँ मुदा हम अहाँकेँ नहि बिसरि सकलहुँ। हमरा शरीर नहि अछि आ अहाँकेँ तँ शरीर चाही। मुदा अहाँ ई गप्प नहि बुझलहुँ जे शरीर सीमित अछि। मोनक कोनो सीमान नहि अछि। छोड़ू ई क्षुद्र शरीरकेँ। आउ। अएबे करू। मौन भए जाउ।”

गाममे सौंसे हल्ला भए गेलैक। अरूणक शरीर चेतना शून्य पड़ल छल। नव कनियाँ ओकरा देखि-देखि कानि रहल छलीह। कतेको डागडर, वैद्य, ओझा, गुनी आँगनमे पथरिया देने छलाह। मुदा अरूण नहि उठल। ओ मौन भए गेल छल। शरीरक सीमानसँ ऊपर उठि गेल छल। उर्मिला अरूणक मोन एकाकार भए गेल छल।

असगुन

गाम-घरमे कतेको प्रकारक असगुन प्रसिद्ध अछि। जेना केओ यात्रापर बिदा हो आ नढ़िया रस्ता बाँमासँ दायाँ काटि दिअए, किंवा केओ बिदा होइत काल पाछासँ टोकि दिअए। बुढ़बा बाबाकेँ एहि सभहक बेस विचार छलनि। जँ घरक केओ बिदा होइत आ कतहु केओ छीक दैत तँ ओ 'चिरंजीवी भव:' अवश्य कहितथि। तहिना आओर-आओर अपशकुन जँ होइतैक तँ ओकर निवारण कए लितथि।

ओहि दिन गाममे हाट लागल रहैक। तीमन-तरकारी सभटा हाटेपरसँ किनल जाइत छलनि। ओहुना हाट दिनक ओ नियमसँ ओतए पहुँचैत छलाह।

रवि दिन छलैक। हाट जएबाक तैयारी ओ दुइए बजेसँ प्रारंभ कए देने छलाह। जहाँ चारि डेग आगा बढ़ैत कि एक ने एकटा अपसगुन भए जानि। एहि तरहेँ चारि बाजि गेल। सूर्यास्त करीब छल। हारि कए ओ बेंत घुमबैत बिदा भेलाह।

कनिके आगा बढ़लाह कि मुनेसरा सामने पड़ि गेलनि ।

“प्रणाम पंडीतजी!” –बाजल मुनेसरा।

“नीके रह”- मुनेसराकेँ आर्शीवाद दैत पडितजी आगा बढ़लाह। मोने-मोन कहि नहि की-की घुनघुना रहल छलाह? मुनेसराकेँ एकेटा आँखि छलैक। गाममे दाहाक दिन मारि भए गेल रहैक। बेस फनैत छल ओ। लाठी लेने फानि गेल छल। ताबतमे केओ ओकरे निसाना बना कए एकटा सीसाक बोतल फेकलकै। ओकर आँखिसँ रक्तक धार बहए लगलैक। ओही घटनाक बाद ओ

असगुन भए छल। प्राय: सएह सभ सोचैत पण्डितजी आगा बढ़लाह।

हाटपर बेस भीड़ छलैक। तीमन-तरकारीक भरमार छल। बीच बजारमे सजमनिक दाम मोलबति-मोलबति पहुँचलाह कि चारि गोटेमे एक दिससँ धुक्का मारैक आ चारि गोटे दोसर दिससँ। सामनेसँ दू-तीन गोटे हाँ-हाॅ करैत पण्डितजीक रक्षा करए आबि गेलाह। धक्का-धुक्की खतम भेल तँ पण्डितजी आगा बढ़लाह। सजमनिक दाम मोलेलनि आ भाव पटि गेलापर जेबीसँ पैसा निकालए लगलाह कि अबाक रहि गेलाह। जेबी नदारद। पण्डितजी ठोह पारि कए कानए लगलाह। ई खबरि सौंसे बिजलौका जकाँ पसरि गेल। पण्डितजी माथा हाथ देने घर वापस अएलाह। तहिआसँ ओ असगुनक डरे छीह कटने फिरथि।

पण्डितजीकेँ तीनटा कन्या छलनि। प्रथम कन्याक कन्यादान ठीक भए गेल छलनि। नीक कुल-शीलक बर रहैक। अगहनक पुर्णिमाक बिआह तय भेलनि। बरक हाथ उठएबाक हेतु बिदा होइत छलाह कि केओ तराक दए छीकलक। छीक...छीक...छीक...। हुनकर माथामे ई छीक घुमए लगलनि। पण्डितजीक टांग एकाएक गतिहीन भए गेलनि ओ आगा बढ़ए हेतु एकदम तैयार नहि छलाह। सौंसे गामक लोक करमान लागि गेल छल। पण्डितजी गुम। किछु बजबे नहि करथि। तेहन शुभ मुहुर्त्त छल जे छीकक चर्चो करब असगुन लगनि। लोकसभकेँ किछु फुराइक नहि जे आखिर बात की भेल? अखने तँ पण्डितजी टप-टप बजैत छलाह..! गाम भरिक लोक पण्डितजीकेँ घेरि लेलकनि।

“पण्डितजी की भेल?”

मुदा ओ तैओ गुम्म। अन्ततोगत्वा, लोक हुनका उठा-पुठा कए डाक्टरक ओहिठाम लए गेल। ओतए डाक्टर हुनकर अवस्था देखि गंभीर भए गेलाह आ कहलखिन जे हुनका गम्भीर भावनात्मक अवधात भेलनि अछि। तात्कालिक उपचारक हेतु जहाँ ओ सूई देबए लगलाह कि पण्डितजीकेँ नहि रहि भेलनि ओ गरियबैत ओहिठामसँ भगलाह। ताबत भोरक चारि बाजि गेल छल। बरक ओहिठाम जएबाक कार्यक्रम रद्द भए गेल। ठीके असगुन भए गेलनि, ताहि दिनसँ पण्डितजी असगुनसँ बड्ड डराथि। ओहि दिन हुनकर मझिली बेटीक तहिना आँखि बड़ फरकए लगलनि। पण्डितजी अपसियाँत भए गेलाह। अबश्य कोनो गड़बड़ी होबए जा रहल अछि।

ओ अपन बेटीकेँ तुरन्त अपना लग बैसा लेलथि कि ताबतेमे एकटा गिरगिट हुनकर बार्यां हाथपर खसल। पण्डितजी ठामहि फनलाह। पैरमे खराम छलनि। दरबज्जा बेस ऊँच छलैक। दलानपर ठामहि चितंग भए गेलाह। बायाँ पैरक हड्डी टुटि गेल छलनि। पण्डितजी बाप-बाप चिचिआए लगलाह। सभ गोटे हुनका लादि कए अस्पताल लए गेल। लाख प्रयासक बाबजूद ओ हड्डी नहि जुटल। पण्डितजी जन्म भरिक हेतु नाँगर भए गेलाह। तहिआसँ पण्डितजी नित्य भोरे उठैत देरी भगवानकेँ गुहारि देथि-

“हे भगवान! असुगनसँ जान बचाएब।”

मुदा भावी प्रवल होइत छैक। होइत ओएह छैक जे हेबाक रहैत छैक। एकादशीक दिन छलैक। महादेवक दर्शन करए जाइत छलाह। झलफल होइत छलैक। ताबतमे एकटा नढ़िया वामाकातसँ आएल आ सामने बाटे दायाँकात गुजरि गेल।

पण्डितजी ठामहि खसलाह।

"हे महादेव! आब अहीं प्राणक रखा करू।"

कहैत-कहैत पण्डितजी वेहोस जकाँ भए गेलाह। बो एकहुँ डेग घुसकए हेतु तैयार नहि छलाह। आ ने घुसकबाक हुनकामे शक्ति रहि गेल छलनि। पण्डितजीकेँ फेर कहि नहि कहाँसँ हिम्मत अएलनि। ओ चोटे पाछा घुमलाह। ताहि बीच एक बेर फेर ओएह नढ़िया वायाँसँ दहिना भेल। पण्डितजी ओहि नढ़ियाकेँ गरियबैत, नाँगर टाँगे दौड़ैत, खसैत-पड़ैत घर दिस बढ़ए लगलाह। बीच-बीचमे ओहि नढ़ियाकेँ कहथि-

"ई दुष्ट, नहि जीबए देत। एकर हम की बिगारने छलिऐक से नहि जानि!"

ताबतेमे मुखियाजी पोखरि दिसिसँ वापस अबैत छलाह। पुछि बैसलखिन-

"की भेल पण्डितजी?"

"की कहू की भेल। कहबी छैक जे गेलहुँ नेपाल आ कर्म गेल संगे। सएह परि अछि हमर। एकादशीक दिन छलैक। सोचलहुँ जे महादेवक दर्शन करी। आधा रस्तासँ जहाँ आगा बढ़लहुँ कि औ बाबू! ई चण्डाल नढ़िया रस्ता काटि देलक।"

ओहिसँ पहिने की मुखियाजी किछु बजितथि, पण्डितजी धराम दए खसलाह। मुखियाजी चिकरलाह। लग-पाससँ सेहो लोकसभ दौड़ल। पण्डितजीकेँ उठा-पुठा कए दरबाजापर राखि देलक। लोकसभ पुछनि-

"की भेल?"

मुदा ओ अपस्याँत आकाश दिसि तकैत रहि गेलाह।

असगुन, असगुने होइत अछि। तेँ ने लोक सगुन करैत फिरैत रहैत अछि। पण्डितजी भोर होइतहि पनिभरनीकेँ बजओलखिन आ आदेश देलखिन जे आइसँ नित्य प्रातः काल ओ एक घैल पानि भरि कए दरबाजापर राखि देल करए, जाहिसँ हुनक दिन नीक जेना कटि जानि। पनिभरनी हुनकर आज्ञाकेँ सिरोधार्य कएलक आ नित्य हुनकर सामनेमे बड़का घैलमे पानि भरि-भरि राखए लागलि।

एक दिन अन्हरोखे पनिभरनी पानि भरि कए राखि गेल। ओकरा गहुँमक कटनी करबाक छलैक। पण्डितजी उठि जहाँ चारि डेग आगा बढ़लाह कि घैलसँ टकरा चारूनाल चित्त भए खसि पड़लाह। लोकसभ चारू कातसँ दौड़ल। मुदा मण्डितजी किछु नहि बजलाह। आब ओ चुप्पे रहबाक शपथ खा लेने छलाह। समय विपरीत भए गेल छलनि । तेँ सगुनो असगुन भए गेलनि ।



गाम

गाममे बहुत गोटे अनचिन्हार भए गेल छल। धिया-पुता सभ जे धरिया पहीरने घुमैत रहैत छल, से सभ फुटि कए जबान भए गेल छल आ बुढ़-पुरान लोक क्रमशः बिदा भए रहल छलाह। क्रमिक किन्तु अनवरत परिवर्तन -प्रकृत्तिक नियमक पराक्रमसँ सभ प्रभावित छल।

लोचन बाबा, तिला बाबू, बुढ़िआ काकी सभ एक-एक कए चलि गेलाह। बहुत कम पुरना लोक बँचि गेल छल। मुदा ई गप्प हमरे किएक एतेक फरिचाएल बुझा रहल छल। गाममे बहुत लोक अछि। सभक समक्ष ई घटना भेलैक अछि आ होइत रहलैक अछि। प्रायः समयक अन्तरालक कारण बारह बरखक अवधिक कारण हमरा बेसी अन्तर बुझा रहल अछि। छोटो-छोटो घटना सभ एकटा आकार ग्रहण कए लेने अछि।

पोखरिक महारपर बैसल हम इएह सभ सोचि रहल छलहुँ, गामसँ बहुत किछु निपत्ता भए गेल छल। दुपहर रातिमे गुलचनमा चौकीदारक जबरदस्त आबाज-

“जगले रहब। यौ ऽऽऽ।”

दुपहरिया रातिमे घरे-घर घुमि जाइत छल। आ चिकरैत-

“फल्लाँ बाबू छी औऽऽऽ।”

भोरुकबा उगैत त्रिकण्ठ बाबाक परातीक स्वर सौंसे गामकेँ भोर हेबाक सूचना दैत आ किछु कालक बाद बाद झमा-झम, झमा-झम, टन-टन, टन-टन घड़ी-घण्टा सुनबामे अबैत। मन्दिरपर बाबा भगवानक आरती करितथि। भोरे-भोर सभ ठिठुरैत मन्दिरसँ

बाहर होइतथि।

फेर भोर भेल छल। मुदा १२ बरखक अन्तराल छल।

हम ओहिना ओही पोखरीक महारपर गेल रही। की भए गेल? सात बाजि गेल। घड़ी-घण्टाक स्वर नहि, प्रातीक एकहुटा आखर नहि सुनाएल। चौकीदारक कतहुँ कोनो पता नहि। जे पोखरि हरियर कंचन पानिसँ भरल रहैत छल सएह उजारसन लगैत छल।

इएह सभ सोचि रहल छलहुँ कि बड़ी जोरसँ हल्ला भेल। जएह-सएह चौक दिस दौग रहल छल। कैक गोटासँ पुछलिऐक। केओ किछु कहबा लेल तैयार नहि छल। ककरा फुरसति छलैक। सभ अफसियाँत..! हल्ला जोर पकड़ने जा रहल छल। ताबे देखबामे आएल जे १५-२० गोटे लाठी-भाला लेने चिकरैत आगाँ बढ़ि रहल छलाह। ओमहरसँ मरर काका अएलाह।

“की भेलैक मरर काका?”

“लड़ाई भए गेलैक अछि। कैक दिनसँ तनातनी छलैक, मुदा आइ फैसला भए कए रहत।”

“मुदा झगड़ाक कारण?”- हम पुछलिऐक।

अहाँ बाबू बाहर रहैत छी। अहाँ की बुझबैक? अहिठामक हवा विचित्र अछि। अनीनमाक बेटा गोवर्धन बाबूक प्रौत्रक काज नहि गछलक। बस कि गोवर्धन बाबू पुरनका अबाज देलखिन। छौड़ा अरि गेल। लाठी पकड़ि लेलक। ताहिपर ओ किछु बजलाह-

“कि छौड़ा लेने लाठी मारि देलक। ओहि दिनसँ गाममे तनातनी अछि।”

ओ बाजिए रहल छलाह कि ठाँय- ठाँयक आबाज भेल।

कनिके कालमे थानामे तीनटा लहास पड़ल छल। लोक जहाँ-तहाँ भागि रहल छल। दू-तीन दिन धरि एकरे चर्चा होइत रहल। गामक बहुत रास जबान सभ भागि गेल। कहाँ दनि बहुत गोटेपर वारन्ट भए गेल छलैक।

साँझ भए गेल छल। गामसँ बहुत रास लोक भागि गेल छल। मन्दिरपर एसगर बैसल रही कि मरर काका पहुँचलाह।

“की बाबू, किएक गुम-सुम छी?”

“आउ, मरर काका।”

मरर काका बैसलाह। गामक एकटा वृद्धतम लोकमेसँ अवशेष मरर काका ओहि गाममे बहुत किछु देखलाह आ कहि नहि की-की आओर देखताह?

“आओर गामक की हाल?”

“गामक की हाल रहत? समय बहुत बदलि गेल। आब तँ हमरा लोकनि चलबे करी ओहीमे कल्याण।”

“धिया-पुता की कए रहल छथि?”

“सभ कमाइ छथि। सबहक परिवार फराक-फराक छनि।”

“अहाँ ककरा संगे छी?”

“ककरा संगे रहब? हम तँ पेण्डुलम भए गेल छी। एक-एक मासक पार लगैत अछि। जहिआसँ अहाँक काकी स्वर्गवासी भेलीह तहिआ घिसिओड़ काटि रहल छी। आँखिमे मोतिआबिन्द भए गेल अछि। साँझ परितहि अन्हार भए जाइत अछि। फेर गप्प होएत।”

ई बजैत-बजैत ओ उठि गेलाह।

१२ बरख पहिनहि मरर काकाक समय मोन पड़ि रहल छल। गामक प्रतिष्ठित लोकमेसँ छलाह। सभ बालक प्रतिभाशाली आ होनहार। साँझे-साँझ नित्य ओहि मन्दिरपर कीर्तन होइत छल आ मरर काका अवश्य ओहिमे रहितथि।

कनिक काल आओर बैसल रहलहुँ। आठ-दसटा अधबएसू सबहक हल्ला बुझाएल। सड़कपर सभ गरिअबैत आगा बढ़ि रहल छल। सभ तारी पीबि कए बुत्त।

काते-कात गामपर पहुँचलहुँ। मोन थाकल लागि रहल छल। सुति रहलहुँ।

भोर भेने पोखरि दिसि जाइत रही। गामक अन्तिम छोरपर पाँच-सातटा छोट-छोट खोपड़ी ओहिना-क-ओहिना छल। अपरिवर्तित। कतेक गोटे धनिक भेल, कतेक गरीब भए कए गामसँ बिलटि गेल मुदा ओ सभ ओहिना-क-ओहिना बाँसक बासन बनेबामे तल्लीन छल। ओकर बच्चा सभ उघारे पड़ल छल। इएह सभ सोचि रहल छलहुँ कि फोकना डोम हमरा देखलक। चीलमक सोंट लगा कए खोंखैत बाजि उठल-

"परिणाम मालिक, कहिआ अलियै?"

"तीन दिन भए गेलैक। "

आ हम आगा बढ़ि गेलहुँ। पोखरि दिसिसँ आबि स्नान-ध्यान कएल। मधुबनी जेबाक छल। कनिके आगा बढ़ल छलहुँ कि फूटरक माएक कनबाक आबाज सुनलहुँ। खोपड़ी तर बैसल कानि-कानि किछु कहि रहल छलीह। हमरा देखि सोर पारि लेलीह।

"की भेल काकी? किएक कानि रहल छी?"

“की कहूँ, अपना घरक बात । बजैत संकोच होइत अछि। तीन साँझसँ घरमे किछु नहि भेल अछि। हमरा लोकनि दुनू गोटे फराक छी। मालिकसँ दसटा टाका मंगलिअनि तँ गरजि उठलाह।”

ई कहैत-कहैत ओ ठोह पारि कए कानए लगलीह। हमरा नहि रहि भेल। हुनका प्रणाम कए आगा बढ़ि गेलहुँ।

हे भगवान! की भए गेल एहि गामकेँ? मनुष्यता जेना भागि गेल। जाही ठाम देखू उलटे हबा बहि रहल छल। रिक्सासँ मधुबनी जाइत रही। इएह सभ सोचैत-सोचैत निन्न परि गेल। रिक्सा आर.के.कालेजसँ आगा छल। एतबेमे तिलक भाइ नजरि पड़लाह। मुदा टोकबाक साहस नहि भेल। कहि नहि की-की आओर सुनए पड़ए। दिन भरि मधुबनीमे रहलहुँ। साँझ भए रहल छल। मुदा गाम जयबाक साहस नहि भए रहल छल।

दू दिन धरि मधुबनियेमे रहि गेलहुँ। साँझमे टहलैत काल मन्दिर गेल रही। भगवतीक दर्शन कएल। घाटपर बैसल रही। साँझो उत्तर दिसि बड़ नीक घर सभ नजरिमे आबि रहल छल। मोन भेल घुमी। आगा बढ़लहुँ। सुन्नर-सुन्नर सुसज्जित घर।

पीच रोड। स्ट्रीट लाइट। छोटी पटना लागि रहल छल। बारह साल पूर्व ओहिठाम खत्ता छल। बाढ़िक समयमे समुद्र भए जाइत छल वो जगह। चारूकातक गामसँ श्रीमान लोकनिक जमघट भए गेल छल ओहिठाम। संयोगसँ अपना गामक देबन बाबू नजरिमे अएलाह। घरक दरबज्जासँ निकलि रहल छलाह। कहि उठलाह-

“कहिआ अएलह?”

कहलियनि-

“चारि-पाँच दिन भेल।”

गप्प आगा बढ़ए लागल। कहलाह-

"की कहैत छह?

आब गाम रहए-जोकर नहि रहल। तेँ एहीठाम एकटा छोट-छीन घर बना लेलहुँ। कोठरीसँ बड़की भौजी आबाज देलीह-

"ठाढ़ किएक छी? अहाँक तँ अपन घर अछि।"

घरमे प्रवेश करितहि छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ। सोफासेट -टीभी, डाइनिंग टेबुल ..की-की नहि छल।

गप्प-सप्प होइत रहल। चाह-जलखै सभ भेल।

गप्पक क्रममे पुछलिअनि-

"मरर काकाकेँ एतहि किएक नहि राखि लैत छिअनि?"

"हुनका गाम छुटिते नहि छनि! की करी?"

मरर काकाक ज्येष्ट पुत्र देबन बड़ प्रतिभाशाली छलाह। मुदा एक युगक अन्तराल पिता पुत्रकेँ धारक दू कातपर राखि देने छल। रातिक आठ बाजि गेल छल। हम हुनका सभसँ बिदा लए पुन: मधुबनीक डेरापर चलि गेलहुँ। रस्ता भरि अपन गाम आ काली मन्दिरक आगूक खत्तामे भेल एक युगक अन्तरालक परिवर्तन मोनमे बेर-बेर अबैत रहल। गामकेँ की भए गेल? हे भगबान! कोन भूत एकरा धए लेलक? लोक एना किएक कए रहल अछि? काली मन्दिरक चभच्चा छोटी पटना भए गेल। गाम एना किएक रहि गेल। गाम माने की? संघर्ष, शोषण, ईर्ष्या, द्वेषक अतिवाद।

छुट्टी समाप्त भए रहल छल। रेलगाड़ीपर बिदा भेलहुँ। अपन संघर्षस्थली दिसि- जहिठामसँ दूरीक कारण चन्द्रमाक धरातल जकाँ अपन गाम सुन्नर लागए लगैत अछि।

जीबी तँ की-की ने देखी !

लोक की-की ने देखलक। मुदा दू-चारि बरखसँ जे सभ गाममे भए रहल छल से एकदम अप्रत्याशित छलैक। नव-नव गुलंजर नित्य उठैत रहैक।

रबि दिन हाट लगल रहैक। सभ पुरुष हाट करए गेल रहए। अरूण बाबू सपरिवार गाम आएल छलाह। हुनकर भाइ मोहन बाबू बेस अगरजित छलाह। मैट्रिक उत्तीर्ण केने छलाह। ओना, खेत-पथार बहुत तँ नहि रहनि मुदा गुजर होएबामे कोनो दिक्कत नहि होइक। गाम घरक झगड़ा फरिचाबएमे निपुण छलाह मुदा अपना घरक झगड़ा नहि फरिचा पबैत छलाह। घरवाली बड्ड तेज छलखिन। गोर-नार, दप-दप। बी.ए. केने छलखिन। पिता गरीब मुदा विवेकी छलखिन। हुनकर एक मात्र कन्या छलखिन शीला, जिनक बिआह मोहन बाबूसँ भेल छलनि। मुदा बिआहक बाद हुनका लोकनिक आन्तरिक मतभेद बढ़ले चलि जाइत छलनि। एहि बातसँ शीला दुखी ओ उदास रहैत छलीह।

अरूण बाबू बहुत दिनक बाद आएल छलाह। दुनू भाइ आपसमे गप्प-सप्प करैत छलाह कि केओ महिला रिक्सापर आएल आ ओकरा संगे दोसर महिला घरसँ बहराएल आ रिक्सापर बैसि चुप्पे चलि गेलथि। किछु कालक बाद मोहन बाबू आँगन गेलाह तँ घरक जिंजीर बन्द छल। आँगन सुन्न, कतहुँ केओ नहि। मोहन बाबू गुम्म। ने हुनका आगा सुझनि आ ने पाछा। की करी, की नहि करी, किछु फुराइते ने छलनि। क्रमशः ई गप्प सौंसे गाम पसरि गेल।

ई घटना कोनो नव नहि छल। एक मास पहिने एकटा एहने

घटना भेल जे पूरा इलाकाकेँ झकझोड़ि देलक। पूबरिया गामवाली बड़ सात्विक छलीह। दुरागमनसँ पहिने बिधबा भए गेल छलीह। तहिआसँ आइ धरि सात बरख बिति गेल। मुदा कतहुँ हुनक चर्चा नहि भेल। नित्य प्रात: चारिए बजे उठि जाइत छलीह। गामक सभ लोक सुतले रहए कि अन्हरिएमे नहा-सोना कए पूजा-पाठ करए लगैत छलीह। सम्पूर्ण शरीर तेजमय। मुदा किछु दिनसँ दर्दक सिकाइत करैत छलीह। लोककेँ होइक जे पेटमे अल्सर भए गेलनि अछि। लाजे ओ किछु बजथिन नहि। अन्ततोगत्वा, पढ़ुआ काका नहि मानलखिन। हुनका जबरदस्ती अस्पताल लए गेलखिन। डाक्टर अस्पतालमे भर्ती कए देलकनि। ओकरा भर्ती करा कए पढ़ुआ काका किछु पैसा-कौड़ी जोगार करए गाम वापस अएलाह। प्रात:काल अस्पताल पहुँचला तँ रोगीक कतहुँ पत्ते नहि। पता नहि रोगी केतए चलि गेलीह। सौंसे इलाकामे एहि बातक गर्द पड़ि गेल।

ओना तँ गाम-घरक लोक बेस नेम-टेमबला। मुदा बेसीलोकक मोन सिआह। केओ ककरोसँ कम नहि मुदा भीतरे-भीतर सभकेँ घून पकड़ने। मुदा इलाकामे एक्के बिहाड़ि। महिला सभ घोघ उठाबए लेल बेहाल। बेटा सभक पिताक कुंजी छिनए लेल बेहाल। पुतोहु सभ सासुक गट्टा पकड़ए लेल बेहाल। घरे-घरे भिन्नक हाबा से जोरगर बहल अछि जे बयन परसैत-परसैत सभ परेसान। घरे-घर कैक-कैक गोट चूल्हा भए गेलैक अछि।

खैर ! ई तँ जे भेलैकसे भेलैक। मुदा सभसँ आश्चर्य ओहि दिन भेल जहन पुरुषोत्तम बाबूक घरवाली हनहनायल थाना पहुँचि गेलैक। ओकरा देखए लेल चौगामका हजारो लोक जमा भए गेल। करमान लागल लोक आ तैओ दनदनाइत दरोगाजीक ऑफिसमे

प्रवेश कए गेलि। दरोगाजी अपने ओहि कन्याक इजहार लेबए लगलाह। पति-पत्नीमे गम्भीर मतभेद भए गेल छलैक। घरवाली कनिक्को कम नहि छलैक। बाते-बातमे दुनू व्यक्तिमे मारि-पीट भए गेलैक। घरवाली थानामे आबि कए एफआइआर कए देलकैक-
"हमारा जान का खतरा है।"

तकर बाद ओ रिक्सा पकड़ि मधुबनी चलि गेलि। बहुत दिनक बाद सुनल गेल जे ओ कतहुँ आनठाम बिआह कए लेलक अछि।

गाममे ओझा-गुनी आ भगैतक चर्चा अखनो जोर पकड़ने छल। फुदरक घरवालीकेँ हाथक चाटी चलैत छलैक आ कनेक-मनेक मंत्र-तंत्र सेहो ओ जनैत छल। मुदा एहि बेर अष्टमीक दिन बेस ताल भए गेलैक। ओकर घरवाली साफे बकए लगलैक। खुलि कए देवी खेलाए लगलैक। गाम-गामक भगता आएल। मुदा ककरोसँ देवी नहि पकड़मे अएलैक। गाममे ओहि दिन पछवारि गामक ओझाजी आएल छलाह। हुनको तंत्रे-मंत्र बेस जोरगर छलनि। दौड़ल-दौड़ल लोक हुनका बजओने आएल। ओझाजी अएलाह। अनुष्ठान भरि राति भेलैक। देवी बन्हेबे नहि करैक। अन्ततोगत्वा, भोरुकबा रातिमे आबि कए ओ देवी पकड़मे अएलैक। गटागट बाजए लगलैक-

"एक मास धरि अनुष्ठान कर। ई कर, ओ कर, नहि तँ सौंसे गामकेँ पीस कए धए देबौक।" इत्यादि-इत्यादि...।

औ बाबू! आब तँ सौंसे गौंआ ओझाजीक अनुनय-विनय करए लागल। ओझाजी अपन भाव बढ़बए लगलाह-

"हमरा तँ ओतए जेबाक अछि। ई करबाक अछि, ओ

करबाक अछि। हम परसू जेबे करब। एक्को दिन नहि रूकि सकैत छी।"मोसकिलसँ ओ रूकलाह। नित्य साँझसँ देवीक अनुष्ठान घरमे शुरू होइक आ भोर धरि चलैत रहैक। ओहि अनुष्ठानक दौरान ओतए ककरो आएब मनाही छलैक। देवी रहि-रहि कए चिकरैक-

"सभकेँ देरवबौ। एक-एककेँ देरवबौ..!"

फूहर बाबू बाहर दरबाजापर सभ सुनैत रहथि आ देवीक आराधना करैत-करैत औंघा जाथि। ओमहर ओझाजी अनुष्ठानमे लीन। अनुष्ठानक अन्तिम दिन छल। नि:शब्द राति। ओझाजी आ फूहरक घरवाली अनुष्ठानमे लीन। सभ केओ औंघाइत छल। एही समयमे दुनू देवी-देवता एकाएक निपत्ता। गामसँ पूब दिस सड़क छलैक। से पकड़ने-पकड़ने ने जानि कतए चलि गेल। भोर भेने गाममे फेर एकटा गुलंजर छुटि गेल।

गाममे आब की-की ने अछि। इंजीनियर, प्रोफेसर आ बीए-एमएक तँ गप्पे जाए दिअ। गामक लोक बेस टेटियाह। एकदम नियमसँ रहब आ नियमसँ जिअब। भोरे उठि कए सुतबाक काल धरि मंत्रोच्चार करैत रहताह। गरीबक घर कोनो अधलाह काज भेल नहि कि ओकरा चट्टे बारि देताह। मुदा धनिक लेल सातटा खूनो माफ।

प्रोफेसर साहेबकेँ घरवालीसँ नहि पटलनि। तलाकक मोकदमा भए गेल। घरक लोकमे सँ केओ कनियाँक पक्षधर नहि भेलैक। तलाक पास भए गेलैक। प्रोफेसर साहेब धराक दए दोसर बिआह केलाह। ओहिसँ बच्चो भेलनि ओ ओहि बच्चाकेँ विआहो भए गेलैक। सोचियौक समय कतए-सँ-कतए पहुँचि गेल। जीबी तँ की-की ने देखी !

तुषारपात

सभागाछीसँ बरक सिद्धान्त लिखाकए आबि गेल छलैक। सौंसे गाम हँगामा भए गेलैक। हीराबाबूक बेटीक बिआह आइ.ए.एस. अधिकारीसँ हेतैक। पिता हो तँ एहन। लाख रूपैआ तिलक लगलैक।

हीराक पिता शीतल बाबू नामी ठीकेदार छलाह। एक मात्र सन्तान एक बेटी छलखिन। कतेको बरखसँ बरक खोजमे लागल छलाह मुदा कतहुँ किछु कमी तँ कतहुँ किछु...। ओहि दिन पुबारि गाम दिस बिदा भेल छलाह कि रस्तामे अकस्मात किछु गोटेसँ परिचय भए गेलनि। ओएह सभ ओहि बरक परिचय देलकनि। बर जहिना देखैत सुन्नर तहिना सौम्य स्वभाव। शीतल बाबू तय कए लेलाह जे जान रहए कि जाए मुदा ई काज करबाक अछि।

अन्तोगत्वा, एक लाख टाकापर गप्प गेल। पन्द्रह जुलाईक दिन सेहो निश्चित भेल। बड़ उत्साहसँ बिआहक विधि सभ पूर्ण भेल ओ शीतल बाबूक ओहिठामसँ चौगामा लोककेँ हकार देल गेल।

हीरा बाबू नीलिमाक बिआहक चर्च इलाका भरिमे पसरि गेल। जकरे देखू सएह ओहि बिआहक चर्च करैत छल। बिआहक चारि-पाँच दिनक बाद हीरा बाबू आइ.ए.एस.क प्रशिक्षण करए चलि गेलाह। बेस मौज कटलैक ओहि प्रशिक्षणमे। हीरा बाबू गोरनार ओ अतीव सुन्दर छलाह। हुनक व्यक्तित्वमे आकर्षण छलनि। बेस मौजी लोक छलाह आ विचारसँ अत्याधुनिक।

आइ.ए.एस.क प्रशिक्षण करैत-करैत ओ दुनिआसँ पूर्ण परिचित भए गेल छलाह। प्रशिक्षण समाप्त भेलापर हुनकर पदस्थापन लखनउ भेलनि।

हीराबाबूक पराक्रम दिन दुगुन्ना ओ राति चौगुन्ना बढ़िते जा रहल छल। नीलिमाक पालन-पोषण संयत वातावरणमे भेल छलनि। ठीकेदार साहेब यद्यपि सुखी सम्पन्न लोक छलाह, मुदा स्वभावसँ अतिशय संयत। धिया-पुतापर हुनके संस्कारक छाप छल। नीलिमा जहिना देखैत सुन्दर छलीह, स्वभावो ओहिना मधुर। बिआहसँ साल भरि पूर्वे ओ स्नातकक परीक्षा प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण केने छलीह। बिआहक बादसँ हुनका अपूर्व प्रसन्नता छलनि। यद्यपि ओ सभ काज पूर्ववते करैत छलीह। मुदा मोन सदिखन हुनकेपर टांगल रहनि।

ओमहर हीराबाबू भोग-विलासमे नीलिमाकेँ बिसरि गेलाह। प्रयोजने कोन छलनि जे ओ नीलिमा हेतु व्यग्र होइतथि।

नीलिमाक आँखि चिर प्रतीक्षासँ असोथकित भए गेल छलनि। एक दिन अपन माएकेँ संग कए हीराबाबूक डेरापर स्वयं पहुँच गेलीह। डेरापर पहुँचिते ओतएसँ एकटा बेस सुन्दरिकेँ बाहर जाइत देखि हुनकर कान ठाढ़ भेल । हीराबाबू ओकरे संग कोठरीसँ बहराएल छलाह। नीलिमाकेँ देख ओ गुम्म पड़ि गेलाह। फेर बजलाह-

“हलो! नीलिमाजी। आउ, आउ। हम तँ अहींक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ।”

किछु दिन हीराबाबूकेँ नीलिमाक संग खूब नीक लगलनि। किन्तु मासक धक लगिते हीराबाबूक पुरना आदति सभ पछोड़

करए लगलनि। किछु दिन नीलिमा चुप्प रहलीह, किन्तु जहन मामला हदसँ बाहर भए गेल तँ ओ सोचलीह जे हीराबाबूकेँ बुझाएल जाए।

“अहाँ एतेक राति धरि कतए रहैत छी?”

“कतहुँ रहैत छी ताहिसँ अहाँकेँ मतलब?”

“जरूर मतलब अछि! आखिर हम अहाँक अर्द्धांगिनी थिकहुँ। अहाँक सुख-दुखमे हाथ बटायब हमर हक ओ कर्तव्य अछि।”

नीलिमा सेहो तावमे आबि गेल छलीह। बाते-बातमे हीराबाबू शराबक नशामे धुत एक चाटी चला देलखिन। नीलिमा ओतहि पसरल ओछाओनपर जा खसलीह। हीरा बाबू दोसर कोठरीमे जाए किदनि बजैत आराम करए लगलाह। ओहि दिनसँ जे दुनू गोटेमे शास्त्रार्थ शुरू भेल से अविरल चलिते रहल। घरक वातावरण कलहसँ नर्क भए गेल छल। नीलिमा हीराबाबूकेँ सुधारक हेतु कृतसंकल्प छलीह ओ हीरा बाबू सेहो अपने रस्तापर चलबाक हेतु अड़ल रहलाह। निरन्तर तनाव ओ कलहमे रहलासँ नीलिमाक स्वास्थ्य खसए लगलनि। ओ एक मास धरि लगातार ज्वरसँ पीड़ित रहलीह।

नीलिमाक विमारीक खवरि ठीकेदार बाबूक कान धरि पहुँचल। पहिने तँ हुनका विश्वासे नहि भेलनि मुदा जखन हुनका नीलिमाक पत्र प्राप्त भेलनि तँ ओ गुम रहि गेलाह।

तेजस्वी, चंचल ओ सतत प्रसन्न रहए वाली नीलिमा पीयर, निस्तेज ओ शुष्क पड़ि गेल छलीह। फटकिएसँ अपन पिताकेँ अबैत देखि जान-मे-जान आबि गेलनि। ओ दौड़लीह आ अपन पितासँ

स्नेहवश सटि गेलीह। ठीकेदार साहेबकेँ अश्रुपात होबए लगलनि। हीराबाबूक कार सेहो संयोगसँ ओहि समयमे बाहरसँ आएल आ ओहीठाम ठहरल।

बाप-बेटीक एहि मधुर मिलनक कोनो प्रभाव हीराबाबूपर नहि पड़ल आओर ओ ससुरकेँ बिना गोर लगने अपन निवास स्थित कार्यालयमे दनदनाइत चलि गेलाह। ठीकेदार साहेब बुज़ुर्ग छलाह। हीरा बाबूक रंग-ढंग ओ नीलिमाक निस्तेज देहकेँ देखि ओ स्थितिकेँ तुरन्त बुझि गेलाह। मोनमे भयंकर क्रोध होबए लगलनि। मुदा अपन आवेगकेँ बेस मोसकिलसँ रोकलाह। फेर नीलिमाक संगे हुनकर कोठरीमे चलि गेलाह।

पता नहि, कतेक काल धरि ठीकेदार साहेब नीलिमाक संगे बैसल रहलाह। स्नेह मिश्रित अपन गप्पसँ हुनका सुखी करैत रहलाह। एहि गप्प सभसँ नीलिमाकेँ प्रर्याप्त मानसिक विश्राम भेलनि। ओ सुति रहलीह। ठीकेदार साहेब पता नहि, की-की सोचैत रहलाह?

भोरे आठे बजे ओ ओहिठाम पहुँचल रहथि। दुपहरियाक एक बाजि रहल मुदा हीरा बाबू अखन धरि ससुरक पुछारि नहि केलाह। नीलिमाक संग भोजन कए ठीकेदार साहेब स्वयं हीरा बाबूसँ भेँट करए गेलाह। हीरा बाबू अपन आवासीय कार्यालयमे फाइलक बीच डूबल रहि हुनक तिरस्कार करैत रहलखिन।

नीलिमा आगू बढ़ैत कहलखिन-

“बाबूजी, अएलाह अछि।”

हीरा बाबू ठीकेदार साहेबकेँ इसारा कए बैसबाक आग्रह कएलनि। ठीकेदार साहेब पुछलखिन-

"की हाल अछि?"

"ठीके। कोना अएलहुँ?" हीरा बाबू बाजि उठलाह।

"ओहिना सहरमे किछु काज छल। सोचलहुँ भेँट केनहि चली।"

नीलिमाकेँ अपन पिताक उपेक्षा नहि सहल गेलनि। ओ तमतमाइत अपन पिताकेँ घिचने ओहिठामसँ उठि गेलीह। हीरा बाबू पुन: फाइलमे डुवि गेलाह।

गाड़ी मधुबनी टीसनपर आबि गेल छलैक। नीलिमाकेँ औंघी लागि रहल छलनि। ठीकेदार साहेब उठौलखिन-

"उठू, नीसू उठू। मधुबनी आबि गेल।"

नीलिमा थाकल, झमारल उतरलीह। निस्तेज, उत्साहहीन, नीलिमाक एक्का जौं-जौं गाम दिसि बढ़ए लागल, नीलिमाकेँ भूतकालक दृश्य सभ मोन पड़ए लगलनि। कतेक दुलारू छलीह ओ। गामक लोकसभ जे केओ ओमहरसँ जाइत, नीलिमा दिस तकिते रहि जाए। जेहने सज्जन तेहने सुन्दरि। स्वभाव ओ गुणक अपूर्व समन्वय। पिताक एसगर सन्तान। ठीकेदार साहेब जे किछु कमेलाह तकर प्रेरणा नीलिमेक छल। कतेक गरीब छलाह ओ। नीलिमा लक्ष्मी बनि कए आएल छलि हुनका ओतए। नीलिमाक जन्म होइतहि ओ बढ़ए लगलाह। मुदा आइ संगे-संग एक्कापर चलैत-चलैत ओहो गुम छलाह। किछु कालमे गाम आबि गेल। ठीकेदार साहेब ओ नीलिमा एकपेरिया रस्तापर अपन घर दिस बढ़ैत गेलाह। लगैत छलैन जेना हुनकर सभ आशापर तुषारपात भए गेल हो।



पढ़ू पूत चण्डी

समय एक गतिसँ आगा बढ़ल जा रहल अछि। मुदा हम-अहाँ ओकर प्रवाहमे कहि नहि कतए पहुँचि जाइत छी। जेना कोनो तेज धारमे छोट-मोट कतेको वस्तु स्वत: दहाइत कहाँ-सँ-कहाँ पहुँचि जाइत अछि, ओएह हाल एहि जिनगीक अछि।

"अहाँ की केलहुं? घूरतर बैसल प्राय: नित्य साँझमे गामक कैकटा बूढ़सभ आपसमे चर्चा करैत छलाह।"

केओ किछु, केओ किछु कहैत। गप्प-सप्प बिबादक रुप धरैत आ अन्ततोगत्वा कहिओ काल झंझटोक संभावना भए जाइत। सभसँ ढीठ ओ दबंग ,ठीठरकाका पहलमान आ अपढ़ छलाह । ओ ओहि घूरक महफिलमे डंकाक चोटपर कहितथि-

"पढ्ू पूत चण्डी जासे चले हण्डी।"

सद्य: लाभमे पूर्ण आस्था छलनि। भोरमे बच्चा महिष चरओलक आ साँझमे एक डाबा गरम-गरम दूध हाथमे। एहिसँ नीक शास्त्र की भए सकैत छल? ओकरा आगू सभ पढ़ाइ-लिखाइ व्यर्थ। कहिआ पढ़त आ कहिआ कमाएत..? मुदा ओहीठाम हीरा काकाक स्वर एकदम दोसर रंग छल। हुनकर कहब जे धिया-पुता पढ़त तँ विचारवान होएत आ सुखी रहत। गाममे ओहि घूरक चर्चा चर्चित छल। दुनू गोटा जँ साँझमे बैसितथि तँ अपन-अपन दर्शनक अनुसार जरूर बजितथि आ परिणाममे विवाद होइत।

ठीठरकाका दबंग ओ लठैत छलाह। जबरदस्त खेती-पथारी रहनि। धिया-पुता सभ बेस मोट-सोंट आ लंठ। सभ खेतीमे लागल रहैत छल। परिवार सुखी छल। हुनका तुलनामे हीरा काकाक

हालत पातर छल। धिया-पुता सभ इसकुल-कॉलेजमे पढ़ि रहल छल। खेती-पथारी कोनो खास नहि। तेँ करखनो काल ठीठर काकाक कथन ठीक बुझाइत छलनि। मुदा दुनू गोटे अपन-अपन विचारपर दृढ़ छलाह।

हीरा काकाकेँ अपन धिया-पुताक बड़ आशा छलनि। आ तेँ अपन सम्पूर्ण शक्तिसँ धिया-पुताकेँ शिक्षा व्यवस्थामे लागल रहैत छलाह। समय बितैत गेल आ हुनकर सभ नेना सभ पढ़ि-लिखि यथायोग्य नीक-नीक स्थानपर पहुँचलाह। ओमहर ठीठरक स्थिति दिन-प्रति-दिन गड़बड़ाइत गेल। वृद्धावस्थाक जोर पकड़ितहि पुत्र सभ आपसमे लड़ैत रहैत छलाह। बात बिगड़ैत देखि ओ सभकेँ फराक-फराक कए देलखिन। जमीन-जथा बँटि गेल।

बीस बरखक बाद आइ ने हीरा बाबू छथि आ ने ठीठरकाका। मुदा सुनबामे बहुत किछु आएल। ठीठरकाका बड़ कष्टमे मरि गेलाह। बेटा सभ खेत-पथार बेचि लेलक आ पेट पोसबाक हेतु गामसँ पड़ा गेल। हीरा बाबू सेहो सुखी नहि भए सकलाह। धिया-पुता सभ पढ़लक-लिखलक जरूर मुदा सभ अपनामे व्यस्त। ककरो बूढ़ाक व्यथापर सोचबाक समय, इच्छा ओ सामर्थ्य नहि भेलैक। केओ कलकत्ता तँ केओ बंबई। पाँचो बेटा पाँचटा सहर धेने छलाह। सुनबामे ईहो आएल जे मझिला बेटा लखनउमे मकान बना लेलक अछि। हीरा बाबू ओहिना एसगर टकटक तकैत बिदा भए गेलाह।

ओहि इसकुलमे मौलाना-जोलहाक बेटा सेहो हमरा सभहक संगे पढ़ैत छल। पढ़एमे सामान्य छल मुदा अत्यन्त सज्जन ओ संवेदनशील। कैक दिन गामसँ इसकुल जाइत काल ओ भेटि

जाइत। मुदा ओ इसकुल नियमित नहि जाइत छल। कैक दिन बाधमे ओकरा हम सभ हर जोतैत देखियैक। हँसियो लागए आ दुखो भए जाए। कहिओ काल ओकर पिता सेहो भेटि जाइत, एकटा आग्रहक संग-

“बौआ, माहटर साहेब बाबूसँ कहि देबै जे हमर बचबा आज नै जाएत।”

पुछिऐक- “किएक?”तकर जवाबमे पनपिआइ गमछामे बन्हने हर जोतइत अपन बेटा दिसि इसारा करैत। कैक दिन हमरा संगे ओ इसकुल जाइत। रस्तामे भेँट भए जाइत छल। गमछामे पाँच-छहटा किताब ओ किछु कॉपी बन्हने हमरा देखैत घरेसँ आबाज दैत-“हमहँ चलब। ठाढ़े रहब।”आबाज सुनि कए हम-सभ पाकड़ि गाछक तरमे सुस्ताए लगैत छलहुँ। इसकुल पहुँचि सभसँ पछिलका सीटपर ओ बैसि जाइत छल। आ कैक दिन तँ सभ घण्टीमे मारि खाइत रहैत छल। बिना कोनो आक्रोश आ प्रतिकृयाक कैक दिन कहितिऐक-

“एना मारि किएक खाइत रहैत छह! नीकसँ पढ़ाइ करह।”

मुदा ओ हमर-सभहक बात सुनि किछु-किछु अकाट्य तर्क दए दैत छल। बहुत दिनक बाद ओकरा एक दिन चौकपर रिक्सा लगौने देखलिऐक। हमरा देखि ओकरा उत्साह भेलैक। प्राय: ओकरा भेलैक जे ई यात्रीपर ओकरा बिशेष अधिकार छैक। एक बेर हमरा मोन भेल जे ओही रिक्सासँ चली मुदा आत्मा सिहरि गेल। हमर ओ सहपाठी रिक्सा चलाओत आ हम ओहिपर बैसल रहब। आ हम कात भए गेल रही। किछुए कालक बाद ओकर बूढ़ पिता एक गठ्ठर कपड़ा लेने आएल। प्राय: हमरा नहि चिन्हि सकल। ओहि

रिक्सापर गठ्ठर राखि बाप-बेटा मिलि कए बीड़ी पिबए लागल। समयक एतेक अन्तरालक बादो बाप-बेटाक स्नेह बनल छल। हमरे सभहक संगे किछु वरिष्ठ विद्यार्थी सभ सेहो इसकुल जाइत छलाह। जाहिमे सँ कैक गोटा मैट्रिकमे चारि-पाँच बेर फेल कए क्रान्तिकारी भए गेल छलाह। गाममे छोटका लोकसभकेँ संगठित कए ओ सभ महाउपद्रव ठाढ़ कए देने छल। कैकटा पैघ गृहस्थक हर-जन बन्द भए गेल छल। पनिभरनी सभ आँगनमे काज नहि करत आ भरिआ भार लए कए नहि जाएत। जकर घर जाहि जमीनपर छैक से तकर हेतैक। ई हेतै वो हेतै आ भए कए रहतैक। दिन राति गाममे घोल-फचक्का होइत रहैत...।

सभसँ बड़का आफद बड़का मालिककेँ भेल रहनि। ओ एकदम चिंतित भए गेल रहथि। दिन-राति हुनका ओहिठाम भण्डारा चलैत रहैत छल। इलाकाक पहलमान ओ लंठक जमघट रहैत छल। समय बीतलाक संग-संग ओ क्रान्तिकारी सभ शान्त भए गेलाह। अधिकांश कतहुँ-कतहुँ चाकरी कए रहल छलाह आ एकाधटा अकाल मृत्युक सेहो सिकार भए गेलाह।

बड़ीकाल बैसल इएह सभ सोचैत रही कि दिनेश भाइ भेटि भए गेलाह। ओ हीरा बाबूक जेठ भातिज छलाह आ अंतकालमे ओएह बेचारेक सेवा केने रहथि। हीरा बाबूक छोट पुत्र टुना हमर सहपाठी छलाह। हुनके प्रति गप्प होबए लागल। कहलाह जे ओ तँ बहुत दिनसँ लंदनमे रहैत अछि। बड़का हाकिम भए गेल अछि आ बहुत रास पैसा कमाइत अछि। मुदा कैक बरखसँ गाम नहि आएल अछि। पुछलियनि-

“हीराबाबूक काजमे आएल रहथि की नहि?”

“नहि आएल रहथि।”

छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ। पुछलऐक- “किएक?”

“कहि नहि! मुदा मृत्युसँ दू-तीन बरख पूर्व आएल छलाह। गाम डोलि गेल रहए। जाइत काल बहुत रास टाका पिताकेँ दैत रहथिन मुदा ओ नहि लेलखिन।”

बिच्चेमे चौंकैत पुछलिअनि-

“कारण?”

“कहाँ दनि कहलखिन जे ई पैसा अहीं राखू। काज आओत। जाहि पैसाक कारण अहाँ एतेक दूर चलि गेलहुँ, गाम-घर, माए-बाप ओ सभ किछु त्याग कए देलहुँ ताहि पैसाकेँ व्यर्थ हमरापर किएक नष्ट कए रहल छी। टुना तहिआसँ घुरि कए गाम नहि अएलाह।”

“मुदा ठीठर काकाकेँ की भेल?”

“की कहू? सभ बेटा घर छोड़ि पड़ा गेल। करबो की करितैक? गामपर किछु नहि बाँचल रहैक। असगर ठीठर काका काहि कटैत रहैत छलाह। जेठकी पुतोहु थोड़-बहुत सेवा कए दैत छलखिन।”

एक बेर फेर ठीठर काका भीमकाय ओ हुनक आप्त वाक्य मोन पड़ि गेल-

“पढ़ू पूत चण्डी, जा से चलए हण्डी।”

बहुत थाकि गेल रही । कहि नहि इएहसभ सोचैत-सोचैत करवन नीन्न पड़ि गेल ।



युद्घाय कृत निश्चय

“की करी किछु फुरा नहि रहल अछि...! प्रेसबला सभ पाछू पड़ि गेल अछि। जतए जाउ ओतहि ई सभ पहुँचि जाएत।” मुख्यमंत्रीजी बाजि उठलाह। पुन: अपन प्रेस सचिवकेँ बजओलखिन-

“मिस्टर सिंह। अहाँ एकटा विज्ञप्ति अखबारमे प्रकाशित करबा दिऔक जे प्रेसक आदमी मुख्यमंत्रीसँ सम्बन्धित ओही समाचारकेँ प्रकाशित कराबथि जे हुनकर सरकारी कारोबारसँ सम्बद्ध होइक आ जकरा छापब जनताक हेतु नितान्त आवश्यक होइक। संगहि ईहो समाचार प्रकाशित करबाओल जाए जे हमर व्यक्तिगत कृया-कलाप छापए बला समाचार पत्र ओ सभ व्यक्तिक विरूद्ध कार्रवाई कएल जाएत।”

उत्तरमे प्रेस सचिव बाजि उठलाह-

“ठीक सर! प्रेस बला सभकेँ कहि नहि की भए गेल छैक? एकरा सभकेँ सबक सीखेनाइ जरूरी थिक। हम आइए ई विज्ञप्ति प्रकाशित करबा दैत छी।”

“हद भए गेल! कहि नहि, प्रेसबला सभकेँ की भए गेलैक अछि?”

अहीं कहू अपना सभमे बलिदान देबाक तँ पुरान प्रथा छैक आ ताहि बातकेँ लए कए प्रेसबला सभ छापि देलकै अछि आ सौंसे देशमे हड़बिड़रो मचि गेल जे तिवारीजी अपन कुर्सी बचएबाक हेतु

छागरक सोनितसँ स्नान कएलनि अछि। लगैत अछि जे प्रेसबला सभकेँ सबक सीखबहि पड़त। मुदा कोना? काल्हि एहि विषयपर बिस्तारसँ विचार-विमर्श कएल जएतैक।

“मैडम। प्रेस विल तँ अहींक आज्ञासँ लगाओल गेल।”

मुदा जाहि तरहक विरोध एकर भए रहल अछि से तँ अप्रत्याशित अछि। लगैत अछि हमरा नव मुख्यमंत्रीक नियुक्ति करहि पड़त।”

“हम तँ अहाँक शरणमे सदिखन रहलहुँ अछि। कही तँ एहि विलकेँ वापस लए ली?”

“एकर बादो हम ई आश्वासन नहि दए सकैत छी। फेर गप्प कएल जेतैक।”

-केओ महिला एतबा कहि कए टेलीफोन काटि देलनि। एकर बादे माननीय भूतपूर्व मुख्यमंत्रीजीक निन्न उपटि गेलनि। सभटा बीतल गप्प सीनेमाक रील जकाँ सपनामे देखार भए रहल छलनि। असलमे हुनकर कुर्सीसँ हटब एकटा तेहन मार्मिक प्रसंग छल जे हुनका निरंतर ओझरओने रहैत छल।

ओना जहिआसँ ओ मुख्यमंत्री भेलाह तहिएसँ हुनका भयावह स्वप्न सभ आबए लागल छलनि। विपक्षी दलक नाकेबन्दी मजबूत भए गेल छल आ सत्तादलमे सेहो कैक गूट भए गेल छल मुदा साहसक बले ओ आगा बढ़ैत जाइत छलाह। अकस्मात गाड़ीक पहिया धसैत देखलनि तँ ओ ओकरा उखारबाक कोनो कम प्रयास केलनि से बात नहि, मुदा भावी प्रवल। कर्णोक रथ तँ एहिना धसि गेल रहनि। बेस संक्रमण कालमे ओ जहाँ ने आगू बढ़लाह कि रथक पहिआ धसए लागल। ठीक ओएह हाल माननीय भूतपूर्व

मुख्यमंत्रीजीकेँ भेलनि।

भए सकैए जे हमर गप्प अहाँकेँ तीत लगैत हो। अपने लोकनि भावुक नहि होइ। माननीय भू.पू. मुख्यमंत्रीजी कुर्सी बचएबाक हेतु कोन कुकर्म छोड़लाह?

कहबी छैक जे ने दौड़ चली ने ठेसि खसी। मुदा मुख्यमंत्रीजीकेँ ई गप्प के बुझेतनि? ओहि दिन अखबारमे एकटा बेस नमगर अपील पढ़लहुँ। धूर्तताक चरम सीमा छल। मैथिलीमे समाचार पत्र निकालताह।

यौ महामहोपाध्यायजी। अपनेकेँ ई बुद्धि किछु दिन पूर्व किएक नहि भेल? की अहाँ जनताकेँ ओतेक मुर्ख बुझि रहल छिऐक जे अहाँ ओकरा भुतिएने फिरिबैक। एकदम नहि। आब जमाना बदललै। खैर! देर अएलहुँ दुरुस्त अएलहुँ। मुदा ई तँ कहू जे ओहि समाचार पत्रमे की-की खबरि छपतैक? मुख्यमंत्री पदक पुन: प्राप्तिक हेतु जँ अहाँ कोनो यज्ञ करबैक तँ ओकरा प्रमुखतासँ छपबैक वा नहि? आशा अछि जे एहि बेर ओ समाचार मैथिलीमे प्रकाशित समाचार पत्रक मुख्य पृष्ठपर अपने छापब।

ओहि दिन गाममे बैसार रहैक। नवतुरिआ सभ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक हेतु बेस आन्दोलन केने छलाह। माननीय भू.पू. मुख्यमंत्रीजी प्रमुख वक्ता छलाह। ओ बाजक लेल ठाढ़े छलाह कि केओ दौड़ल आएल। कहलक-

“दिल्लीसँ फोन आएल अछि।”

ओ मंचपरसँ धड़फड़ाइत उतरए लगलाह ओ एही क्रममे खसि पड़लाह। फेर ओएह नारी स्वर। फेर ओएह हतप्रभ भू.पू. मुख्यमंत्री...।

एमहर बैसारीमे हल्ला छलैकजे भू.पू. मुख्यमंत्रीजी किछु महत्वपूर्ण घोषणा करताह। सम्भवत: ओहि अप्रत्याशित फोनक कारणसँ बैसारक कर्यवाहीपर गम्भीर प्रभाव पड़ल आ बैसार साधारण भाषणक बाद स्थगित भए गेल।

ओहि दिनुका बैसारक बाद भू.पू. मुख्यमंत्रीजी बहुत दिन धरि चुप रहलाह। पछिला महिना समय-समयपर छपल समाचारक किछु महत्वपूर्ण अंश प्रस्तुत अछि-

<u>दिनांक २ मई सन् १९७६</u>

आइ मुकुल पटना अएलाह। परम सन्तोष अछि जे हम हुनका प्रसन्न कए सकलहुँ। ओना हमर प्रतिद्वन्दी लोकनि हमरापर लागल छथि मुदा जाधरि मुकुल हमरापर नहि तमसेताह ताधरि केओ किछु नहि कए सकैत छथि। तेँ हुनका प्रसन्न करबाक हेतु जान लगा दी।

<u>दिनांक १२ सिदम्बर १९८१</u>

मैथिलीक अधिकार हेतु किछु मैथिल आएल छलाह। आखिर मैथिलीक की महत्व अछि? हमरा ई सभ तँ एकदम नीक नहि लगैत अछि, मुदा कएल की जाए। व्यक्तिगत हमरा मैथिल-मैथिलीसँ कोनो लगाव नहि अछि। हँ, जँ केओ अपन सम्बन्धी होथि वा दोस्त-महिम होथि तँ तिनका नीक-सँ-नीक पद दिआबी आ मदतिओ करी। मैथिली-मैथिली चिचिएलासँ की होएत?

<u>१४ अक्टुबर १९८२</u>

बिहार बेस विवादास्पद राज्य अछि। मोन तँ होइए जे एहि पदकेँ छोड़ि जा कए आराम करी, वा पुन: अपन पहिलुका काजमे लागि जाइ। मुदा एतेक आमदनी छैक एहि काजमे जे अन्यथा

सातो जन्ममे नहि भए सकैत अछि। प्रेसबला सभ पाछू पड़ि गेल अछि। की करी बुझा नहि रहल अछि?

<u>१ जनवरी १९८४</u>

देखा चाही नव बरख की-की रंग लबैत अछि। मुख्यमंत्री पदसँ हटलाक बाद तीव्र वैराग्य भए रहल अछि। खने मोन करैत अछि जे राजनीतिसँ सन्यास लए ली। खने मन करैत अछि जे 'युद्धाय कृत निश्चय'क पुनरावृत्ति कए दी। एकटा उपाय सुझि रहल अछि। मैथिलीक प्रचारमे पदयात्रा किछु सज्जन चला रहल छथि। हुनके संग धरी। गामे-गाम मैथिलीक नामे हमरो प्रचार भइए जाएत। सुनबामे आएल अछि जे दरभंगा लग एकटा बड़ सिद्ध तांत्रिक छथि। हुनकोसँ किछु परामर्श करब। आगा जगदम्बाक ईच्छा।

कैक दिनसँ थाकल-झमारल भू.पू. मुख्यमंत्रीजी ओहि दिन दुपहरियामे कनेके आँखि मुनने छलाह कि सपनाए लगलाह। साक्षात् महिषासुर मर्दिनी कत्ता लए घुमि रहल छलीह। शत्रुक संहार करैत छलीह। नवका मुख्यमंत्रीक नाशक हेतु षडयंत्र जोर-सोरसँ चलि रहल छल। जतहि देखू ततहि भू.पू. मुख्यमंत्रीजीक स्वागतमे स्वागतद्वार सभ बनल छल। मैथिलीक प्रचार खूब भेलैक। भू.पू. मुख्यमंत्रीजीक नामक नगारा चारूकात बाजि रहल अछि। चुनाओ घोषणा भए गेलैक। बड़का-बड़का उद्योगपति सभ अपन भविष्यक आशापर पर्याप्त चन्दा दए रहल छथि।

एहि सबहक परिणामो बहरेलैक आ हम पुनश्च मुख्यमंत्री भए गेलहुँ। शपथ ग्रहण समारोहमे किछु मैथिल सभ उपद्रव करए चाहैत छलाह कि पुलिस लाठीचार्ज कए देलक...।

एतबहिमे भू.पू. मुख्यमंत्रीजी सपनेमे गरजए लगलाह कि हुनक नीन्न खुजि गेलनि। उठलाह तँ ओएह रामा ओएह खटोला। पुनर्मुषिकोभव।

(१६ अगस्त १९८४)



यमलोकक दल-बदलू

ओहि दिन यमलोकमे जबरदस्त गहमा गहमी छल। भेल ई जे मृत्यु लोकसँ हालमे आएल बहुत रास लोक ओतए पहुँचलाक बाद जनतंत्र बहालीक मांग पर अड़ि गेल रहए। नित्य प्रतिक हंगामासँ तंग भए यमराज यमलोकक नव संबिधानक हेतु अध्यादेश जारी केलाह। तकर बाद मृत्यु लोकक जेना चुनाओक कार्यवाही प्रारंभभेल।

यम प्रतिनिधि बनब बहुत कठिन थिक। यद्यपि सत्तारूढ़ दलसँ लए कए विपक्षी धरिक सभ व्यक्ति अपन-अपन सेवाक प्रति समर्पणक भावनाक चर्च करैत-करैत अपसियाँत रहैत छथि मुदा असलमे जे ओ करैत छथि से जगजाहिर अछि। इएह सभ गप्प हम ओहि दिन सोचैत रही कि यमलोकक अखबारमे प्रतिनिधि सभा चुनाओक समाचार निकललैक।

समाचार देखिते एक बेर हमरा जेना करेन्ट लागि गेल। कोना ने लागए। यमलोकमे जहिआसँ चुनाओक सिलसिला अएलैक तहिआसँ कतेक घर बसि गेल। कतेको बेरोजगार सभ रातिए-राति धनिक भए गेल। इएह कारण थिक जे आब लोक जहाँ यमलोकमे चुनाओक हल्ला सुनैत अछि कि टिकट लेबक हेतु एड़ी-चोटीक एक कए दैत अछि।

यमलोकक प्रतिनिधि सभाक चुनाओ भेला एक मास भेल छलैक। कोनो दलक स्पष्ट बहुमत नहि आएल छलैक। प्रधान बनए लेल बेस घमरथन भए रहल छलैक। यद्यपि दल सभहक संख्या तँ ९ टा छल मुदा मूलत: तीनटा दलक सदस्य बेसी छलाह- पिशाच

दल,भूतनाथ दल ओ प्रेत दल।

नव निर्वाचित सदस्यमे कम सँ कम पचासटा सदस्य एहन छलाहजे पाँच-सात बेर दल बदलि चुकल रहथि। यम प्रतिनिधि सभामे कोनो दलकेँ स्पष्ट बहुमत नहि भेटलासँ हिनका सभहक लेल स्वर्णिम अवसर छलनि। नवका यम प्रतिनिधि सभ अपन-अपन भविष्य सुधारबाक हेतु बेस उत्सुक छलाह।

प्रमुख महोदयकेँ से बेस परेसानी छलनि। हुनका तीनू दलक नेता बेरा-बेरीसँ अपन-अपन समर्थनमे आधासँ अधिक सदस्यक सूची प्रस्तुत केने छलाह। तीनू सूचीमे पचासटा सिद्धहस्त दल-बदलू आ पचीसटा नवका यम प्रतिनिधिक नाम सामिल छल। प्रमुख महोदय भूतपूर्व इमानदार छलाह। मुदा जनताक हिसाब देखि कए रंग बदलि लेने छलाह। ओहो मामला नीकसँ बुझि रहल छलखिन। आखिर इमानदारीसँ होइते की छैक? नून रोटी चलि सकैत अछि। घरवाली कहथिन जे कहि नहि कोन करम केलहुँ जे अहाँक संग भेल।

जहिआसँ प्रमुख महोदय अपन चालि-ढालि बदललाह तहिआसँ दुनिआ दोसर भए गेलनि। जेम्हरे देखू तेम्हरे लक्ष्मीक दर्शन। ई अवसर हुनका हेतु स्वर्णिम अवसर छल। जनसेवाक व्रतधारी लोकनिक प्रथम अवतार भए रहल छल। यमराज तीनू नेतासँ गप्प-सप्प करबाक हेतु तिथि निर्धारित कए सूचित कए देलखिन आ अपने भूमिगत भए गेलाह।

प्रेत दलक नेता रातिक बारह बजे यमराजक पत्नीसँ भेँट करए गेलाह। दोसर-तेसर ओहिठाम केओ नहि छल। पेटीसँ नोटक सभ गड्डी निकालि धराधर टेबुलपर राखि देलखिन।

“ई थिक पुतोहुक मुँह देखाइ।”

फेर गप्प-सप्प आगा बढ़ल कहए लगलखिन-

“राजनीतिक हाल-चाल तँ अहाँकेँ बूझले अछि। पिशाच दल ओ भूतनाथ दलक नेता सभ हमर पक्षक यम प्रतिनिधि सभकेँ फोरि रहल छथि। अहाँ यमराजकेँ हमर सिपारिस कए हमरा न्याय दिआउ।”

यमराजक धर्म पत्नीजीकेँ तीनू लोक सुझि रहल छलनि, मुदा तैओ बजलीह-

“अवश्य कहबनि। अहाँसँ बेसी योग्य, कर्मठ ओ इमानदार के भए सकैत अछि? प्रधानक पद तँ अहींकेँ भेटबाक चाही।”

प्रेतनेता सहर्ष ओहिठामसँ बिदा भेलाह। मुदा ओ समस्याक अन्त नहि छल। आखिर मास दिनक बादे सही, यम प्रतिनिधि सभाक सामना तँ करैक छलनि। तेँ कम सँ कम पचासटा आओर यम प्रतिनिधिकेँ अपनामे मिलायब जरूरी छलनि।

राता-राती ओ अपन विश्वासपात्र प्रेतनेताक सचिवक ओहिठाम पहुँचलाह। ओमहर पिशाच दल ओ भूतनाथ दलक लोकसभ सेहो बैसल नहि छलाह।

राति भरि हुड़दंग होइत रहल। असलमे बीस-पच्चीसटा यम प्रतिनिधि कैक गोटेसँ टाका लए लेने छलाह। तीनू नेता सोचथि जे ओ सभ हमरा संगे छथि मुदा असलमे ओ सभ ककरो संगे नहि रहथि। ओ सभ चुनाओमे खर्च भेल अपन पूँजी ऊपर करबाक हेतु अपसियाँत छलाह। मुदा यमराज सेहो आब परेसान छलाह आ यम प्रतिनिधि लोकनिकेँ साफ कहलखिन-

"जँ अहाँ लोकनि स्पष्ट स्थिति नहि उत्पन्न करब तँ हम यमलोक प्रतिनिधि सभाकेँ भंग करबा देब।"

ई बात सुनि नवका यम प्रतिनिधि सभहक मनमे हड़बड़ी मचि गेल। ओ सभ गोटे प्रेत दलकेँ अपन समर्थन देबाक निर्णय प्रमुख महोदयकेँ अवगत करा देलखिन।

प्रात:काल प्रेत दलक नेता मंगनूकेँ प्रधान पदक हेतु शपथ कराओल गेल।

प्रात:काल शपथ ग्रहण समारोह प्रारंभ भेल। मनोनीत प्रधानजी अपन जेबीमे सँ एकटा चिट निकालि कए अपन पी.ए.केँ देलखिन। पी.ए. साहेब ओहि कागजकेँ प्रमुखक आप्त सचिवकेँ दए देलखिन।

ओमहर यम प्रतिनिधि लोकनि मंत्री पद प्राप्तिक संभावनासँ अपसियाँत छलाह। किछुए कालमे घोषणा प्रारंभ भेल। नव मंत्रीमण्डलमे तीस गोट कैबीनेट, बीसटा राज्यमंत्री ओ बीसटा उपमंत्रीक नामक घोषणा कएल गेल। एहि तरहेँ यम प्रतिनिधि सभाक एक तिहाइ सदस्य मंत्री बनि रहल छलाह। शेष सदस्यमे सँ सत्तापक्षक समर्थक यम प्रतिनिधिकेँ कोनो-ने-कोने पद अवश्य देबाक स्पष्ट आभास भेटि गेल छलनि। प्रमुख निकेतन खचाखच भरल छल। शपथ ग्रहण समाप्त होबएपर छल कि सत्तापक्षक एकटा यम प्रतिनिधि गरजि उठला-

"मंत्री पदक हेतु चयनमे पक्षपात कएल गेल अछि! आदि-आदि...।" प्रधानजी मुड़ी उठेलाह आ इसारासँ किछु कहलखिन।

प्रधान विक्षुब्ध यम प्रतिनिधि सभक गुप्त बैसार कए रहल छलाह। रात्रिमे बारह बजे बैसार शुरू भेल से प्रात: छह बजेमे

सम्पन्न भेल। बैसारमे पचासटा यम प्रतिनिधि छलाह जे कहैत गेलाह जे जौं अहाँ अपन बात नहि राखब तँ हम सभ अपन बात बदलबाक हेतु मजबूर भए जाएब।

हारि कए प्रधानजी ओहिमे सँ पन्द्रह गोटेकेँ विभिन्न कैबिनेट मंत्रीक दर्जा संगे अपन-अपन जिलाक प्रशासनिक मुखिया सेहो बनाओल गेल। सभा विसर्जित भेल।

ओमहर पिशाच दल आ भूतनाथ दलक नेता प्रेत दलक नेताकेँ प्रधान पदक शपथक विरोधमे संपूर्ण यमलोकमे हड़ताल कए देलनि। यमलोकमे कानून/व्यवस्थाक गम्भीर समस्या उत्पन्न भए गेल। असलमे दुनू नेताकेँ प्रधान पद छुटि जयबाक आक्रोश तँ छलनिहे। सभसँ बेसी कष्टक गप्प छल जे हुनका लोकनिकेँ गम्भीर आर्थिक क्षतिसँ सामना करए पड़ल छलनि। यमलोकक पचासो यम प्रतिनिधि तीनू नेतासँ यथेष्ट पाइ टानि लेने छलाह। प्रधानकेँ अपन कुर्सी बचाएब पराभव भए रहल छलनि। प्रमुखक खिलाफ दुनू बिरोधी दल यमलोक भरिमे हड़ताल कए देने छलैक। स्थिति सम्हरने नहि सम्हरि रहल छलैक। अन्ततोगत्वा, प्रधानजी बिरोधी दलक नेता सभसँ गोपनीय बैसार करबाक निर्णय केलनि।

दोसर दिन बिरोधी नेतासभ एक-एक कए प्रधानजीसँ फराक-फराक भेँट करए लगलाह। पाँचटा छोट-मोट नेताकेँ शान्त केलनि। मुदा पिशाच दल ओ भूतनाथ दलक नेता किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि छलाह।

अन्ततोगत्वा, प्रधानजी पिशाच दलक नेताकेँ विपक्षक नेता बनएबाक घोषणा केलनि। हुनको कैबिनेट मंत्रीक दर्जा देल गेल। संगहि भूतनाथ दलक नेताकेँ यम प्रतिनिधि सभाक उप-सभापति

बनएबाक निर्णय कएल गेल। दुनू नेताकेँ पॉच-पाँच करोड़ टाका अपन-अपन जिलाक बिकासक नामपर खर्च करबाक अधिकार देल गेल।

एहि तरहेँ मंत्री मण्डलक कृयाकलाप प्रारंभ भेल। प्रमुख महोदय सहित यम प्रतिनिधि लोकनिकेँ हरियरी आबि गेल। यमलोकमे यम प्रतिनिधि सभाक अधिवेशन प्रारंभ भेल। कतेको नव गोटे एहि बेरक अधिवेशनमे देखबामे आबि रहल छल। सदस्य सभकेँ शपथ दिआओल गेल आ तकर बाद प्रमुख महोदयक भाषण भेल। यमलोकक अगिला बरखक बजटक प्रस्ताव प्रस्तुत कएल गेल। एतबा कार्यक्रम भेल छल कि विपक्षी नेतासभ वर्तमानमंत्री मण्डलमे अपन अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत केलनि। यम प्रतिनिधि सभामे जबरदस्त हंगामा होबए लागल। हंगामा नियंत्रणसँ बाहर भए गेल आ अध्यक्षकेँ यम प्रतिनिधि सभाक कार्यवाही स्थगित कए देबए पड़ल। ओमहर विपक्षक नेता अपन चेला-चाटीक संगे यमसभा अध्यक्षक निर्णायक विरूद्ध यम प्रतिनिधि सभासँ वहिगर्मन कए देल।

यमलोकक राजनीतिक स्थिति कहुना ठहरिये ने रहल छल। प्रधानजी परेसान छलाह। प्रतिपक्षक नेता सभ यमलोकमे हड़तालक आह्वान कए देने छलाह। मुदा प्रधानजी कुर्सी छोड़बाक हेतु तैयार नहि छलाह। दोसर दिन यम प्रतिनिधि सभाक सत्र फेर प्रारंभ भेल आ सत्ता पक्ष ओ प्रतिपक्षक नेता आ सदस्य लोकनि हंगामा करए पर अड़ल छलाह। प्रधानजी जतबोकेँ मंत्री बना सकलाह ततबो लोक गड़बड़ी नहि करताह तकर कोनो ठेकान नहि छल। शेष लोकनिक कहब मोसकिल।

ओहि दिन सेहो यम प्रतिनिधि सभाक बैसार स्थगित भए गेल। एहि तरहेँ प्रधानजी पाँच दिन काटि लेलाह। ताधरि अनेको उद्योगसँ मंत्रीमण्डलक गठनमे जे आर्थिक दबाब पड़लनिसे वापस भए गेल छलनि। विपक्षक सदस्य सभ यमराजकेँ विज्ञापन-पर-विज्ञापन दैत छलाह जे यम प्रतिनिधि सभाक अधिवेशन शीघ्र बजाओल जाए। अन्ततोगत्वा, यमराज प्रधानजीकेँ बजा कए साफ कहलखिन जे अहाँ सात दिनक भीतर प्रतिनिधि सभामे अपन बहुमत सिद्ध करू अन्यथा अहाँक कुर्सी चलि जाएत।

प्रधानजी अपसियाँत छलाह। नवका यम प्रतिनिधिक गुटक कोनो भरोस नहि छलनि। मुदा झख मारि कए यम प्रतिनिधि सभामे विश्वास प्रस्ताव रखलाह। निर्णय भेल जे काल्हि एहिपर मतदान होएत। विपक्षक सदस्य सभ हर्षसँ थपड़ी पीटए लगलाह।

राति भरि केओ यम प्रतिनिधि सुतल नहि। प्रात:काल दस बजे यम प्रतिनिधि सभाक बैसार प्रारंभ भेल। यमसभा अध्यक्ष महोदय आशनपर विराजमान भेलाह। मत विभाजनक घन्टी बाजल। गुप्त मतदानक व्यवस्था छल। आधासँ अधिक सदस्य प्रधानक विरोधमे मतदान कए देलाह। यमसभा अध्यक्ष एहि निर्णयक घोषणा कए देल। प्रधान दल बदलक गम्भीर सिकार भए गेल छलाह। मुदा ई सभ कोना भेल से नहि कहल जा सकैत अछि।

प्रधानजी अपन त्याग पत्र यमराजकेँ दए देलखिन। मास दिनक भीतर एक बेर फेर नव मंत्रीमण्डलक गठनक तैयारी जोर-सोरसँ प्रारंभ भेल। मुदा आब यम प्रतिनिधि सभ सेहो चितिंत छलाह। प्रतिनिधि सभा भंग होएबाक समाचार जोर-सोरसँ चारूकात पसरि गेल छल। यमराज सेहो सख्त रूखि अपनौने

छलाह। तेँ हेतु सभक मत भए गेल छलैक जे एकटा ठोस मंत्रीमण्डल बनाओल जाए।

भूतनाथ ओ पिशाच दलक नेता आपसमे बैसार केलाह। तय ई भेल जे पिशाच दलक नेता प्रधान बनताह। मंत्रीमण्डलमे दूटा उपप्रधान हेताह। एकटा उपप्रधान भूतनाथ दलक हेताह आ दोसर नव यम प्रतिनिधि गुटक नेता...। येन-केन प्रकारेण नव मंत्रीमण्डलक गठन भेल। यम प्रतिनिधि लोकनि आश्वस्त भेलाह जे जन सेवाक आब नीक अवसर हुनका सभहक हाथसँ नहि सरकतनि। यम प्रतिनिधि सभामे एहि मंत्री मण्डलकेँ विश्वास सेहो प्राप्त भए गेलैक। एहि तरहे यमलोकमे दोबारा जनतंत्र बहाल भेल।

नर्कक संसद

“सुनैत जाइ जाउ सभासद सभ। आजुक कार्रवाही प्रारंभ हेबासँ पूर्व सभाक रपट पढ़ल जाएत। तदुपरान्त नव सदस्यक उद्घोषणा होएत आ फेर आन-आन कार्यवाही। नवगठित सदनक अध्यक्षताक भार नर्कक वरिष्ठतम सदस्य मनमोहन कैँ देल जाइत अछि।”

ई ध्वनि होइत अछि। जनता दिसिसँ आबाज आएल-

“अध्यक्षजी अपन परिचय देथि।”

मुदा ताबते संसदक सचिव उठलाह-

“बेस तँ सुनि लिअ। ई अत्यन्त निष्ठावान, नर्कक वयोवृद्ध आ वरिष्ठतम सहयोगी थिकाह। हिनका मर्त्यलोकमे फाँसीक दंड भेटल छलनि। आ ओतए ई सिद्धहस्त खूनी छलाह। इलाका भरिमे हिनक यश पसरल छल। ओना, हिनकर खाता सभ दिन लाले रहलनि अछि, मुदा एतए अएलाक बादो ओ कतेको कीर्तिमान स्थापित करैत रहलाह जाहिसँ यमराजक विशेष आज्ञासँ नर्क लोकमे रहबाक अवधि बढ़ैत रहलनि। हिनक दक्षताक सभसँ पैघ प्रमाण तँ इएह थिक जे एहू अवस्थामे नर्क लोकक सभटा सामान भयादोहन कए देल आ ककरो एकर भनकी धरि नहि लगलैक। सौभाग्यवश कही वा जे कही, ओ सभ सामान तस्करीक छलैक आ मृत्युलोकमे केओ प्राणी अपन पूर्वजक प्रोन्नतिक हेतु परमात्माकैँ घूस स्वरूप गाया जा कए दान केने छल। चूँकी ई सभ सामन तस्करीक छलैक, तैँ एकरा नर्क लोक बाटे जाए पड़लैक। ओ पारगमनमे छलाह कि नर्क लोकक चुंगीक सिपाहीकैँ मेन्डेक्सक

गोली खुआ निशामे बुत्त कए मनमोहनजी सभटा सामन ब्लैक कए देल। मुदा धर्मराजक खुपिया विभाग बड़ चौकस अछि आ मनमोहनक एहि सुकृतिक पुरस्कार भेटलनि। पाँच बरख अतिरिक्त नर्क बाससँ।"

"बाह-बाह...! एकदम सही आदमीकेँ अध्यक्ष बनाओल गेल।"

"जय हो! जय हो!"

आबाज आएल चारूकातसँ।

ई निश्चय नर्कक गरिमा बढ़ओताह। थपड़ीक गड़गड़ाहटक बीचमे अध्यक्ष महोदय आसन ग्रहण कए उद्घोषणा कएल-

"मान्यवर नर्कवासी लोकनि, अहाँ सभ जे हमर सम्मान कएल अछि से युगानुकूल अछि। कलियुगमे पापक पुरस्कार धड़ाकसँ भेटि जाइत छैक। तस्करी करू कोठा पीटू, घूस लिअ, इन्जीनीयर जमाए करू। त्याग, तपस्या ओ चरित्रक महत्वक जमाना चलि गेलैक। आब तँ लूटि लाउ, कुटि खाउ। एहि बातमे अहाँ सभ गोटे पारंगत थिकहुँ। ओना, मृत्युलोकक नियम सभ किछु आओर थिक। ओतए कानूनक राज थिक, मुदा नामे के। से जँ सत्ते रहैत तँ एहिठाम नर्कमे कतेको भूतपूर्व महामहिम नहि पड़ल रहितथि। अहाँ लोकनिक सामने जे मंचपर छथि से मृत्युलोकमे बेस सम्मानित जननेता रहि चुकल छथि। जय-जयकार होइत छलनि हिनकर। मुदा काजक हिसाबे नर्कमे तृतिय श्रेणी भेटल छनि। हुनका नर्कक गेटक रखबारी करबाक भार भेटलनि। हमर कहब जे जहन मृत्युलोकमे सभ किछु दनादन चलिए रहल छैक, तँ नर्क लोक कथि लेल पाछा रहए। एही बातकेँ ध्यानमे राखि कए हम नर्क

लोकमे पुन: भयादोहन कएल आ एकर परिणामो अनुकूले भेल।"

चारू दिससँ थपड़ी पड़ए लागल। तदुपरान्त सचिव महोदय पूर्व सभाक कार्यवाही सदनक संपुष्टिक लेल प्रस्तुत करए लगलाह-

"मान्यवर, पूर्व सभाक प्रमुख-प्रमुख कार्यवाही प्रस्तुत अछि-
१. नर्कक बढ़ैत जनसंख्या वृद्धिकेँ देखैत एहिठाम यथाशीघ्र परिवार नियोजन परववारा मनायल जाए। वस्तुत: मर्त्यलोकमे अपराधक संख्याक भारी वृद्धिक कारणेँ नर्कक संतुलन गड़बड़ायल अछि आ एहिसँ नर्कक वरिष्ठ वासी लोकनिकेँ नाना प्रकारक भयंकर कष्टक सामना करए पड़ि रहल छनि। अस्तु, ई प्रस्ताव पारित भेल जे सामान्य कोटिक पापीकेँ नर्कसँ फराक एकर सीमानसँ बाहरे उपनगरी बनाओल जाए।"

(हर्ष ध्वनिक बीचमे लोक प्रस्तावक सहमतिमे थपड़ी पीटैत छथि।)

"नर्कक चाहरदिवारी छोट अछि जाहि कारणसँ स्वर्गलोकसँ कतेको लोककेँ असानीसँ एहिमे फना देल जाइत अछि। हमरा लोकनि एहि तरहक प्रकृयाक घोर विरोध कए रहल छी। संगहि ई प्रस्ताव पारित कएल जाइत अछि जे नर्कसँ ओतबे संख्यामे लोककेँ स्वर्ग जेबाक प्रावधान कएल जाए।"

आबाज होइत अछि-

"हमरा लोकनि स्वर्ग हरगिज नहि जाएब। हमरा सभकेँ नर्के नीक लगैत अछि। एहिठाम पाकिटमारीक खूब गुंजाइश छैक। स्वर्गमे तँ ककरो पाकिटे नहि छैक। ई प्रस्ताव मंजूर नहि अछि।"

सचिव महोदय एकाएक प्रस्ताव सभ पढ़ैत गेलाह आ उपस्थित नर्कवासीगण बेरा-बेरी थपड़ी पीटैत गेलाह। एतबहिमे

नर्कक घन्टा सभ बाजए लागल। पता लगलैक जे नर्कमे एकटा महापापीक प्रवेश भेल अछि। ओकरा यमदूत नाना प्रकारक यातना दए रहल छलैक। मर्त्यलोकमे ओ गम्भीर अपराधी छल। मुदा ओकरा लेल धनि-सन। नर्कलोकमे एहन यातनाक मध्यो ओ कनखी मारैत हँसैत आगू बढ़ैत सभहक अभिनन्दन करैत चलि रहल छल। ताबतिमे नर्कवासीक किछु उचक्का ओकरा गोलिओलक आ ओकरा जेबीमे ओकर संतति द्वारा दान कएल गेल जे किछु कैंचा आ वस्तु छलैक से छिनि लेलक। ओ कनीके आगा बढ़ल की ओकरा अपन काका नजरिमे अएलैक। ओकरा बड़ आश्चर्य लगलैक। ओकर काका तँ बेस भक्त छलैक। तीन फट्टा चानन करैत छलैक। भोर-साँझ स्नान करैत छलैक। ओ घन्टा-घन्टा भरि पूजा करैत रहैत छलैक। अरे! ओकर काकाका पाछा तँ एकटा वोर्ड लागल छलैक।

“मर्त्यलोकमे ढोंग करबामे कुशल रंजनजी अपना जीवन कालमे कतेको डकैती ओ हत्या काण्डमे सम्मिलित रहलाह।”- भातिज गुम्म।

“बाह रे काका! ओहिठाम तँ बेस हवा बनौने छलाह।”

संसदक अधिवेशन जोरपर छलैक। नव-नव सदस्यक परिचय कराओल जाइत छलैक। पण्डालक अग्रभागमे नव सदस्य सभकेँ राखल गेल छल।

“ई थिकाह भूतपूर्व मुख्य मंत्री ‘ब्रजमोहन’ । ई अपन शासन कालमे फुसि बजबाक कीर्तिमान बनौलथि। कहिओ बैमानी करबासँ नहि हिचकलाह। मुदा पहिरन-ओढ़न बेस स्वच्छ सात्त्विक। हिनका नर्कमे स्थायी स्थान भेटलनि अछि। ओना

सामान्य कोटिक पापीकेँ दोसर ओ तेसर सालपर कागज-पत्रक समीक्षा होइत छैक। मामलाकेँ फेरसँ जाँच-पड़ताल होइत छैक, मुदा हिनकर मामलामे यमराज एकतरफा निर्णय सुना देल जे ई नर्कक स्थायी सदस्य हेताह आ हिनकर कागज-पत्रकेँ गोपनीय कए देल जाए जाहिसँ चित्रगुप्तक सहायक लोकनि ओहिमे कोनो प्रकारक हेरा-फेरी नहि कए सकथि।"

'तिलक 'क पार आएल। टांग टुटि गेल छलनि। यमराजक दूतसभ लादि कए नर्क पुरी आनि रहल छल कि अकस्मात ओकर टांग नक्षत्रमे घुमि रहल स्काइलैवक टुकड़ीसँ टकड़ा गेलैक जाहिसँ भयंकर दुर्घटना भेल ओ तिलक प्रेतक टांग कटि गेलनि। ओना,तिलक मृत्युलोकमे मुखिया छलाह। ब्लौक डेबलपमेन्ट कमीटीक कार्यकारिणीक सदस्य छलाह ओ गाममे बेस धाख छलनि। गाममे राजनीति कए इलाकाक लोककेँ अपना दिसि कए अपन सहोदर भाइकेँ रातिए-राति निपत्ता कए देलनि। ओना, बाहरमे बेस बिलाप कएलनि। छाती पिटलनि। थानामे रिपोर्ट दर्ज करेलनि। मुदा संयोग जे ओहि समयमे नर्कमे समयोपरि काज चलि रहल छलैक आ भारतक विभागक किरानी काज कए रहल छलाह। नर्कलोकसँ ओ सभ घटनाक दूरदर्शनपर देख रहल छलाह। नर्कक कागज-पत्रमे सभ लिखल छल। यमराजक कोर्टमे पहुँचि कए ओ अवाक रहि गेलाह।

"के बाहर केलक ई सभ...!"

सोचैत छलाह। एहि तरहेँ एक सँ एक नवागन्तुक सदस्यक परिचय होइत गेल।

एतबहिमे भयंकर हल्ला सुनबामे आएल। दर्शक दीर्घासँ

कूड़ा फेकल जा रहल छल। केओ गोटे जोर-जोरसँ उद्घोष कए रहल छल-

"भाई लोकनि! यमराजक अत्याचारसँ हमरा लोकनि उबि गेल छी। नर्कक व्यवस्था साफ गड़बड़ा गेल अछि। हमरा लोकनि २५ बररवसँ बिना सुनबाइकेँ हाजतमे पड़ल छी।"

एतबहिमे दसटा बेस नमगर पोरगर जवान सभ हाथमे हथकड़ी लेने प्रवेश कएलक। हाथमे डंटा छलैक ओ आँखि लाल कए रहल छल।

संसदमे बिरोधी पक्षक नेता चिकरि उठला-

"ई संसदक घोर अपमान थिक। संसदक अध्यक्षक अनुमतिक बिना एहिमे पुलिसक एहि प्रकारक प्रवेश निंदनीय थिक।"

चारू दिससँ सदस्य सभ फानय लगलाह। यमराजक प्रतिनिधि टीक पकड़ने हुनका अगत-अगत कए रहल छल। भयंकर कोलाहलसँ जखन किछु श्रुतव्य नहि रहि गेल तँ अध्यक्ष महोदय हारि कए सदनक कार्यवाही, ओहि दिनक हेतु स्थगित कए देलाह। संसदक किछु भाँगठ सदस्य भीड़मे डगमगा कए खसि पड़ि रहल छलाह। धक्कम-धुक्कीमे किछु नांगड़ सदस्यक दोसरो टांग आहत भेल जा रहल छलनि। बड़ी मोसकिलसँ वोहि दिन नर्कवासी अपन-अपन डेरा वापस पहुँचलाह।



अपने हाथे भोंट देबैक?

गाममे कैक बेर कैक तरहक चुनाओ होइत रहल अछि। मुखियाक चुनाओ, एमएलए-एमपी बला चुनाओ कहि नहि कैक बेर भेल। जँ-जँसमय लगीच अबैत अछि, चुनाओक धाही गाममे सद्यः भए जाइत अछि। सौंसे गोलबन्दी। दरबज्जे-दरबज्जे काना-फूसी आ रहि-रहि कए भदबारिक मेघ जकाँ माइकपर प्रचार-

"भाइ लोकनि! एहि बेर नहि बिसरब। सामाजिक क्रान्ति अनबाक हेतु विषमता मिटयबाक हेतु फल्लाँ दलक फल्लाँ उमेदबारकेँ अबश्य मत दी। तखने अहाँक राज होएत।"

लगैत रहैत अछि जेना सौंसे देशक भविष्य ओही गाममे तय भए रहल अछि। एक भाइ एमहर तँ दोसर भाइ ओमहर। कतेक ठाम तँ एकहि घरमे चारि-चारिटा दल बनल अछि। रंग-बिरंगक पोस्टर, तगमा आ नाना प्रकारक नारा सभ चारूकात देखबा-सुनबामे अबैत रहत। चौकपर कैक दलक कार्यालय खुजत। ओहिमे एकदम चौपट आ बेकार लोकसभ पीठासीन अधिकारी हेताह। जे होइ, किछु लोकसभकेँ चुनाओक समयमे नीक आमदनी भए जाइत छनि। तेँ ओ सभ प्राण-प्रणसँ चुनाओ-कार्यमे लागि जाइत छथि।

गाममे बहुत साल पूर्व मुखियाक चुनाओ भेल छल। लगैत छल जे उनटन भए जाएत। भयानक तनाव भए गेल छल। गाममे कैकटा गुट अछि। जँ एकटा गुट एकटा उमेदवारक समर्थक होएत तँ निश्चय दोसर गुट ओकर बिरोधीक संग दए देत। जातिबादक सेहो प्रमुख महत्व रहैत अछि। मुदा ताहूसँ बेसी महत्व रहैत अछि

आपसी रंजिस आ गुटबन्दीक।

ओहि समयमे हम बच्चा रही। गाममे किछु गोटे तथाकथित क्रान्तिकारी कहबैत छलाह। ओइ ओहि क्रान्तिक भग्नावशेषो नहि भेटत। मुदा ओहि समयमे ओ सभ युवक छलाह आ सौंसे गामकेँ अशान्त करबाक ठेका लए लेने छलाह। सही मानेमे कहल जाए तँ गाममे धनीक अछिए के? मुदा ओ सभ क्रान्तिक नामे व्यक्तिगत ईर्ष्या-द्वेष ओ आपसी दुश्मनीकेँ समाधान कए रहल छलाह। ओहि मुखियाक चुनाओमे सेहो हुनका लोकनिक बेस योगदान छल।

दुपहर रातिमे भयानक गर्जना बुझाएल। बहुत रास लोकसभ बिरोधी सभकेँ नामसँ गारि पढ़ैत आगा बढ़ि रहल छलाह। इन्नकिलाब, जिन्दाबादक नारा बुलन्द भए रहल छल। मुखियाक चुनाओक परिणाम बहार भए गेल छल। परिणामस्वरूप, विजयी गुट विजयोन्मादमे पराजित गुटक धज्जी उड़ा रहल छल। समाजक पतन कोन हदधरि भए रहल छल से सोचि अखनो गुम्म होबए पड़ि जाइत छी, कारण अपनहि लोकक विरूद्ध असभ्य ओ अपमानजनक भाखाक प्रयोग भेल छल। चुनाओक बादो कैक दिन धरि गरमा-गरमी रहल। क्रमश: गाम सामान्य स्थितिकेँ प्राप्त केलक।

परिवर्त्तनक ग्रामीण अनुबाद जँ करए लागब तँ अर्थ लागत धोतीक बदला लुँगी, फुलपैंट आ कमीज कहक मानेजे ओहिमे कोनो गुणात्मकता नहि अछि। रूपात्मक परिवर्त्तन भने भेल होइक। जहिना पहिने किछु गोटेक वर्चस्व रहैत छलैक ओहिना अखनो किछु गोटे दबंग अछि। शेष लोक ढोलिया, पिपहीबला बनल अछि। चुनाओक अवसरपर किंवा एहने कोनो आन-आन

अवसरपर इएह सभ बुझनामे आओत।

गाममे एमपीक चुनाओ होइत छल। चौकपर रंग-बिरंगक पोस्टर सभ लागल रहए। नेता सभक गरम-गरम भाषण होइत छल आ सभ एक दोसरकेँ बुझाबक प्रयासमे लागि जाइत। चुनाओक दिन मतदान केन्द्रपर तीनटा दलक प्रतिनिधि बैसलाह। रहि-रहि आपत्ति दर्ज भए जाइक। लगैक जे की भए रहल अछि की नहि। साँझ धरि लोकक क्रम बनल रहल आ भरि दिनमे आधो मत नहि पड़ल। फर्जी मतदान तँ एकहुटा नहि भए सकल।

कैक सालक बाद फेर हम चुनावेक बीच गाम गेल रही। अधिकांश लोक एक दल विशेषक दिस छल। गामक दूटा युवक लोकनि मतदान केन्द्र पर भोरेसँ मोस्तैद छलाह। बीचमे फर्जी मतदान होबए लागल। दुनू गोटे बहुत विरोध केलक। पुलिस सभ सक्रिय भेलआ जनता जे मतदान केन्द्र केँ घेरि लेने छल, तकरा खिहारलक। सभ इएह-ले ओएह-ले भागल। थोड़ेकालमे मतदान केन्द्र पर पुलिसटा छल आ रहि गेल छल मतदान अधिकारी सभटा मत मतदान अधिकारी सभ बोकस पोल करेलक। शत-प्रतिशत पोल।

तकर बाद फेर एक बेर मत भेल। ओहिमे ककरो अन्दर-बाहर जयबाक परेसानी नहि छल। मतदाता सभ अपन-अपन घरमे विश्राम कए रहल छलाह आ मतदान शत-प्रतिशत भए गेल। से कोना भेल? ताधरि 'मतदान केन्द्र कब्जाक'संस्कृति विकसित भए गेल छल। नेता सभ गामक सिरगर पाँच-सातटा लंठ लोकसभकेँ पकड़ि लेने छल। मतदान केन्द्र कब्जा भए गेल छल। मतदान अधिकारीसँ लए कए पीठासीन अधिकारी धरि सभ गोटे आराम

कए रहल छलाह आ काज चलि रहल छल। तीनि-चारि गोटे धराधर मोहर मारि रहल छल। दू गोटे मतपत्रकेँ मोरि रहल छल आ एकटा नमगर सन सज्जन मतपत्रकेँ अन्दर कए दैत छलाह... ।

हम साहस कए मतदान केन्द्र धरि गेलहुँ। मतदान केन्द्र पर एकटा युवक पूछलाह-

"अपने हाथे भोँट देबैक?"

हम चुप्पे रहलहुँ। एताबत दूटा मतपत्र एकटा सज्जन आनि कए देलाह। हम एकटा घुरा देलिएनि। मोहर टुटि गेल छल। कहुना कए रबरकेँ कागजसँ सटाओल, मतदान कएल। कहि नहि दस बरखक बाद ई कोन रूप लेत?



बरियाती

ओना हम अनदिना घण्टों पूजा-पाठ करैत छी, मुदा जखन कखनहुँ नोत पड़ैत अछि किंवा बरियाती जएबाक हकार देल जाइत अछि तँ पूरा ताकति लगा कए सभसँ पहिने अपन मैलका गमछा साफ करएमे लागि जाइत छी। हमर गमछा कोनो ततेक पुरान नहि अछि, मुदा समस्या तँ छैक साबुनक। मैल तँ चिपरी जकाँ भए गेल रहैत छैक। तेँ बूझल जाए जे तिन-चारि घन्टा धरि लगातार परिश्रम केलाक बादो ओकर पियरी नहि छुटैत छैक। कुरता तँ अपन अछि नहि, तेँ मंगनी करबाक हेतु तत्पर होबए पड़ैत अछि। ओना आब गाम घरमे कपड़ा-लत्ताक कोनो कमी होइक से बात नहि। से-से प्रकारक कपड़ाक चलनि भए गेलैक अछि जे ओ पहिरने तँ एकदम जोकर जकाँ लगैत अछि। एक खण्ड धराउ धोती पाँच-सात बरखसँ अछि आ ओकर उपयोग मात्र एहने-एहने अवसर पर होइत रहलैक अछि आ तेँ ओ बचलो अछि।

कतेक दिनसँ प्रतीक्षामे छलहुँ जे बरियाती केओ लए जाइत। ओना हमर नाम लोक प्रतीक्षा सूचीमे रखने अछि। तकर कारण हमर कोनो आन गुण नहि थिक। हमरामे एकमात्र विशेषता ई थीक जे हम जाहि बरियातीमे रहैत छिऐक से किछु-ने -किछु नाम अवश्ये करैत अछि। ओना हमर नामो लम्वोदर अछि। नाम ओ गुणक ऐकठाम समावेश दुर्लभे। मुदा हमरा संगे से नहि अछि। हम १००-२०० रसगुल्ला पनपिआइमे देखि लैत छिऐक। धरि तेँ की? बरियातीक बाते किछु आओर छैक। ओतए तँ युद्ध पर युद्ध होइत छैक आ ओहिमे विजय प्राप्त करब कम पौरुखक बात नहि थिक।

ओहि दिन घूर लग बैसल छलहुँ कि केओ गप्प लाड़लक जे

सिद्ध बाबूक पुत्रक बिआह परसु धार लगक गाममे तय भेलनि अछि। तखनसँ बुझल जाए जे जीहसँ पानि खसए लागल। कहुना प्रयासमे रही जे बरिआतीक आग्रह होअए। कतेक दिनसँ भरिपेट्टा नहि भेल छल आ तेँ प्रवल इच्छा भेल जे बरियाती हम अवश्य जाइ।

प्रात भेने दतमनि करैत सिद्ध बाबू ओहिठाम पहुँचलहुँ कि ओ अपनहिसँ बिआहक चर्चा उठा देलनि। फेर बजला जे बरिआती मात्र एगारहटा आनए हेतु कहलक अछि। एतबा सुनिते जेना हमरा मोनो पानि पड़ि गेल। मुदा धन्यबाद दी भगवानकेँ जे सिद्ध बाबू हमर मोनक बात झट दए कहि उठलाह- “हे ! हम अपनेक हेतु कुरताक इंतजाम कए देल अछि, अवश्य जएबैक। सएह भेलैक। ओहि दिन भोरेसँ हम बरियाती जेबाक तैयारी प्राम्भ कए देल।

मासक धक लागल छल। जाड़क मास छल। पानिक डरे तँ होअए जे पनिछुआ धरि छोड़ि दी। मुदा ओहि दिन भोरे उठि कए स्नान कएलहुँ आ सोडरमे डुबा गमछाकेँ पटकए लगलहुँ। ओ गमछा अपना आपमे नमूने छलैक। दस बजे धरि पटकैत-पटकैत जखन हाथ पैर थाकि गेल आ सर्दीसँ सौंसे देह दुलकए लागल, स्थिर भए गेलहुँ। गमछामे चमक अखन धरि नहि अएलैक। की करी? फेर ओहि गमछाकेँ सुखाए दए देलहुँ आ स्वयं दुर्गा पाठ प्रारंभ कएल।

दुर्गा देवीक कृपासँ हमरा भोजन करबाक ओ पचेबाक असाधारण शक्ति प्राप्त अछि। “रुपं देहि जयं देहि यशो देहि" मंत्रक पाठ कएलाक बाद भूख अपन चरम सीमा पड़ छल। नेबो बाड़िएमे छल। नेबो तोरि पानिमे मिलाए भरि लोटा पानि गट-गट

पीबि गेलहुँ। फेर तँ बूझल जाए जे घन्टा भरिक बाद पेट एकदम ठीक भए गेल आ बरह बजे दिनसँ बरियाती जेबाक हेतु तेयारी प्रारंभ कए देल गेल। कुरता मंगनी कएल आ सभसँ पहिने सिद्ध बाबू ओतए हमहीं पहुँचलहुँ।

ओना आब बरियाती सभकेँ कोनो खास परेसानी नहि होइत छनि। मुदा कहबी थीक जे गेलहुँ नेपाल मुदा करम गेल सँगे। बीच रस्तेमे छलहुँ कि पेट गड़-गड़ बाजए लागल। लगैत छल जे पेटसँ जेट विमान छुटि रहल अछि। कएक बेर पोखरि दिस गेलहुँ। तकर बादो पेट फुलले चलि जा रहल छल। अन्तमे हारि कए एकटा गाछ तर बेसलहुँ कि एकटा नढ़िआ बामसँ दहिन भेल। बुझा गेल जे कोनो अशुभ भए गेल। मुदा बरियाती जेबाक अवसर तँ कतेक दिनक बाद भेटल छल। जा धरि पेट रहत कहिओ नीक कहिओ खराप होइते रहत। मोने मोन हनुमान चलीसा पढ़ैत आगा बढ़लहुँ कि लागल जेना सौँसे धोतीमे बमपाट भए गेल। माथा हाथ दए बैसि गेलहुँ।

दर-दुनिआमे एकटा धोती छल। सेहो एन अवसर पर खराप भेल चलि जाइत छल कि बेसुम्हार दौड़लहुँ। सभकेँ होइक जे बरियाती जयबाक उत्साहमे दौरि रहल छी। मुदा बात तँ दोसरे छल। की करी से बुझा नहि रहल छल। किछु दूर पर पोखरि भेटल। कपड़ा-लत्ताकेँ खिचि कए सुखाए दए देलिऐक। अपने गमछी पहीरि बैसि गेलहुँ। दम फुलि रहल छल,तैओ भिजले धोती पहीरि आगा बढ़लहुँ। ताबे आओर बरियाती सभ अगुआ गेल छलाह। कहुना-कहुना कए एगारह बजे रातिमे बरियाती सभ पहुँचल।

बरियातीक पहुँचैत गामसँ बिआहक गीत सुनबामे आएल

कि हमर छाती उपर नीचाँ होबए लागल। पेट फुलिकए तरेरा लागि गेल छल। मुदा एतबा तँ अवश्य जे हम जानो पर खेलि कए बरियातीकेँ सफल बनएबाक हेतु दृढ संकल्प कएलहुँ। किछु कालक बाद दरबाजापर पहुँचतहिँ पानि पड़ए लागल । लोकसभ धड़फड़ाए आगा बढ़ल जाइत छलाह कि आगा लाइटक प्रकाश पर आँखि चोन्हिआ गेल। छपाकसँ खसलहुँ। चारू कातसँ ठहाका पड़ल। उठलहुँ तँ कपड़ा लत्ता खराप भए गेल। मोन तँ घोर भए गेल। होइत छल की करी, की नहि? हारि कए पुआड़क टालक औढ़मे चलि गेलहुँ आ ओहीठाम थाल सभ पोछलहुँ। खैर! हमरा लोकनि पहुँच गेलहुँ सएह कोन कम।

बरियातीक स्वागतक तैयारी कएल जा रहल छल। थोड़ेक कालक बाद बड़का बड़का पिलेटमे जिलेबी, मुंगबा, आदि मिठाइ सभ परसाय लागल। ओमहर बरक परिछन करबाक हेतु सेहो महिला सभ तत्पर भए गेल छलीह। वरकेँ सकपकाएल देखि हम हुनका महिला सभ लग लए जेबाक इसारा कएलिअनि की महिला समेत सभ गोटे हमरा अँखिआबए लागल। भेल पराभव।

अन्ततोगत्वा, कहुना कए जान छोड़ा मिष्ठान्न सभ पर टुटलहुँ। एतबहिमे भयंकर आबाज भेल। चारू दिस लोक ठहाका देबए लागल। की भेल? की भेल? एतबहिमे पड़िछाएल जे हमर पेट बाजल छल। मुदा हमरा तँ कोनो सुधिए नहि रहए । चाह-पान पिलाक बाद हमरा लोकनिक परिचयक क्रम प्राम्भ भेल। हमर आँखि लागए लागल कि केओ खुरलुच्ची छौँड़ा मुँहमे किछु राखि देलक। थू-थू कए ओकरा बाहर कएल। चारु दिस सभ लोक सहटि कए हमरे लग आबि गेल। की करी? की नहि, किछु बुझा नहि रहल

छल।

कहलिअनि हमर जान बहार भए रहल अछि आ अहाँ लोकनि हेतु धनि-सन। कहाँ गेल ओ खुरलुच्च छौड़ा? एतबहिमे केओ कहलक जे ई सभ चहु दाँतक टुटि गेलाक कारणसँ भए रहल छल। मुँहमे पाथरक टुकड़ी धए देने छल। हम ओकड़ा सुपारी बुझि कुड़कुड़ाबए लगलहुँ। हमर चौह पहिनेसँ हिलि रहल छल। कनिके जोर पड़ितहि तर दए टुटि गेल। साहस कएलहुँ। दबाइ लगाओल। क्रमशः मोन शान्त भए गेल। घन्टा दू घन्टा एहि तरहे घोल-फचक्का केलाक बाद बिझो भेल। हमरा कतहुसँ जानमे-जान आएल।

पीढ़ी बैसलहुँ कि टांग पिछड़ि गेल। पीढ़ी तरमे किछु पिछड़ाह राखल छल। पैरमे मोच पड़ि गेल। चुप्पे रहि गेलहुँ मुदा मोन तामसे घोर भए गेल छल। नाना प्रकारक मिष्ठान्न आ अन्य भोजनक सामग्री सभ देखि तामस किछु कम भेल। खाइत-खाइत पेट तरास लागि गेल। भगवान हमरा हजारमे एकटा गुण देने छथि जे खाइत काल केओ कतबो खौंझाबए हम टससँ मस नहि भए सकैत छी। पेट तँ पहिनेसँ गड़बड़ छलहे। ताहु परसँ फेर डबल भोजन देलिऐक। दरबाजा पर पैर धरितहि पेट फुलए लागल। सुधि हरा गेल। डाक्टर बजाओल गेल। दबाइ दैत छल। मुदा पेटमे तँ कण्ठ धरि अन्न ठुसल छल। कहलिअनिः

“हे! हमरा दबाइ जोकर जगह रहैत तखन एकटा छेना आओर नहि खा लितिऐक?”

सूई लागल। प्रात भेने अधमरु भेल गाम पहुँचाओल गेलहुँ।



हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन किनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.
मातृभूमि(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.
शंखनाद(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/200903.
इएह थिक जीवन(संस्मरण)
https://pothi.com/pothi/node/203720.
हम आबि रहल छी(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/206093.

The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन किनल जा सकैत अछि ।